भा प्रथमानुचिनी २५०० प्रत भेट माप मधें क सवाकी के

बीजी मावृत्ति छपाय छे; तेमी किमत 🗠 दबा प्रत सामग्रीना र २~८०

सर्व हक प्रकाशक ने स्वाधिन

डे० 'जैनहितेच्यु मॉफिस-मनदा**मा**द CARACIAMRA , Printed at the Jagdishward 4 Ramagar Pinting Presses

सम्यक्त

^{अथवा} धर्मनो दरवाजो.

प्रकाशक.

. वाडींखाल मोतीलाल शाह

्जैनहितेच्छु' पत्रनो जॉइन्ट एडिटर तथा 'हितशिक्षा', 'मधुमिक्षका', 'सती दमयती अने तेनी वातमायी लेतानी शिखामणी' वि नी कत्ती.

अमदावाद.

श्री श्राचीर्य विनयजन्द्र ज्ञान भण्डार, ज्यपुर
hat right, what true, what fit we justly call,
to thus be all my care, for this is all—Pope
"जे खर छे, जे सत्य छे, जहेने आपणे व्याजनी
ति योग्य कहीए, रहेनी ज मात्र हु तो दरकार राखीश,
जारण के रहारे मन रहेमा बधुए छे"—पोप

जीमान सरदारचंदजी संतीवचंदजी जागौर की भोरते खादर मेट,

अर्पण पत्रिका

पुरुषपान श्री मणीकासभी महाराज

म्हारी दक्षिणनी मुखाफरी व भाषभीना दशन धर्वा भाषे स्यक्त विषयमां स्टारी केटबाक राकाम

समाधान करी स्दुने ते विषय उपर स्व केल कल्ला शक्तिमान कर्यों रहेना स्मरण

बा म्हानकर पुस्तक भापभीने ज सविः

परोनी रहायथी महत तेमज सस्य क्षेत्रण भाषीय कत्तम भनक पुस्तको प्रसिद्ध व

मळो ! मस्त्र !

भर्षेण करमानी रका सर्व प्रं अने इच्छो क भापनी तथा भन्य विद्याविसासी म

पवित्र जैन धर्मनी सवा चजाववामा हा

भ्रद्रोह[,] सर्वभूतेषु कर्मणा मनुसा गिरा । अनुग्रह्म दाने च सतां धर्म सनातन ॥ सर्व मन्य प्राणीयोना अहिक तेमज पारमाधिक हित सार छपायल था लघु पुस्तक श्री (दक्षिण) अहमदनगर निवासी धर्मप्रिय, वारव्रतधारी, ज्ञानवैराग्यना शोखीन शेठ चांदमलजी लखमीचंदजी वोरा तरफथा सदुपयाग माटे " कियाधी, विचारथी के वाणीथी कोइ

पण प्राणीनुं बुरु करबु नहि, चिंतवबु नहि के बोलबुं नहि, उपकार करवो अने दान देवु ए ज सज्जनोनो सनातन धर्म छे."

अनुक्रमणिका.

विप्रय

मकरण

áß

२०६

२१८

228-283

| ₹ | मवराक | ξ. |
|---|--|------|
| ₹ | गुरू | વર્⁴ |
| * | सम्म क्त्यः ।समकितः) हद् वेनी | |
| | स्थाक्या भने भेद | 3.6 |
| R | पथीस शर्षि (पथीस बोरु) | 84 |
| 4 | सम्बद्धमा ६७ मोख | 63 |
| Ę | देव तथा धर्म | १३७ |

७ मिण्यारक रहेनी स्पाच्या असे मेव १६२

द भोताना प्रकार

काहेर खबरा

९ सम्यक्त्यमा विधासा



उपोद्घात.

83E 0 358

Knock, and it shall be opened ınto you" अर्थात् ' ठेलो एटले दरवाजो त-गरा माटे खुलशे 'ए **बा**इबलनु वाक्य साचु छे. बाईबल बनावनार मनुष्य बाईबल बन्यु ते जमा-नाना माणसे। करता 'ठेळवा' मा वधारे खतीली होवो जोइए, परन्तु धर्मना द्वार पोतानी अपूर्ण 'शक्तिवंडे ठेलता व्हेंने वराबर आवडया नहि, तेमज द्वार तद्दन खुल्ला थाय त्या सूधी ठेल्या करवानी ते धारज राखी शक्यो नहि; नहि तो अमेरिका

उपोव्चात खड# वेदा नवस पुद्गळसमुद्दने ते व न गक्या एम बनन नहि पाच दस कर्न ठेलवाथी वे बारणां बच्चे करा बगा धई में

⋖

होमाधी ने काई अपूर्ण छूटा नायुं होने हैं। 'सलसर्व' मधवा 'धर्म' तरीक मानी स्त्रेचुं करान मन पुराणना रचमाराओ पण अस बत एवी व रीते द्वार ठलवामा प्रकनशीर ययेव्य

+ श्रीस्ती मान्यता हैकी 🗦 के-प्रमुख पातानी उत्पन्न कोसी दनियान वाताना इकम विकट धट वती बीई जबरी रेख (पूर) वेंड खेनी प्रस्तव ग्रहीं एमाओं नाभा भने खेना ३ पुनीन खण बचाच्या स्ट्रेमाना सैम एके एक्षीआ स्टब्सायी ह्रम

एने आफिना अन अवेर' एने यूरोप बनात्यो " पाइरीओं भौगीरकामी इयाती जामता अ नहेला:

तेची अमेरिका मार एक स्थापनार खेमण संस्था afe' - veta gu M. D., L. L. D.

्राण त्हेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओ ्रारणा पाछळनुं सत्य अमुक अमुक अंगे ज ्रोवा पाम्या.

मनुष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ वालीए तो माटीथी शरीर शणगारनारा, तेथी आ-_{अर}ाळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने हेनी शय्यामा मोकली खुश यनारा, वळी आगळ, ंडाखला अन डरामणी पोकोथी देवने प्रसन्न क-रनारा; वळी, दयामय देवने हिंसाथी पामवा मथ-नारा अने छेत्रटे खुशाकीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जूदी जूदी मान्यताना लोकोए वारणा ठेलेला तो खरा, पण पोतपोतानी शक्ति अने खतना प्रमाणमा त्हेमने ए प्रमाणे जणायु-अने एने ज तेओ 'सत्यर्सर्व' अथवा 'धर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असख्य प्राणीओ

खड को बा कबरा पुर्मेक्ट्रममुहन से बाई न गक्या एम बनन नोंद्र पाच दस बक्ता टेप्साधी वे बारणा बच्चे बस जमा यई अने स्टेमाधी क काई अपूज रहेंगे बायु रहन देंगे 'सरमर्क' क्याब 'धर्म' तसेक माना धर्मनं

सुरान अन पुराणना रचनाराओ पण अल-बत प्रदेश स्ति द्वार ठलवामां प्रयन्तवीस यपेस्त, र सीस्ती मान्यता देश हे के-प्रवर पोतानी

करणा करेशी दुनियाने पेताला हुक्स विकट्स स्थ पती जीहे जबते रह (यू) के खेला प्रदान क्यों एसाकी भोजों अने खेला र पुत्राल देखेंच बचाया. देसाला अस एके एस्तास खड बदाली हैंस एके आफिका अन अंकर्र एक यूरोप बसाली,

"पार्मिश समेगितानी इयानी कावता ज नहोता तेपी समेगिना माने एक स्वापनार दिसने सन्त्री निकृत-जन्तीन हनर M. D., L. L. D. पण त्हेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओं बारणा पाछळनुं सत्य अमुक्त अमुक्त अशे ज जोवा पाम्या.

मन्ष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ चालीए तो माटीयी शरीर शणगारनारा, तेयी आ-गळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने हिनी शय्यामा मोकली खुश यनारा; वळी आगळ. डाखला अनं डरामणी पोकोथी देवने प्रसन्न क-रनारा; वळी, दयामय देवने हिंसायी पामवा मथ-नारा अने छेवटे खुशाकीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जदी जूदी मान्यताना लोकोए वारणा ठेलेला तो खरा; पण पोतपोतानी शक्ति अने खतना प्रमाणमा त्हेमने ए प्रमाणे जणायु—अने एने ज तेओ 'सत्यस्वं' अथवा 'वर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असस्य प्राणीओ

कच्चे एका पण प्राणीमो यई गया छे~याय छे सने पन्ने, के नेवां ते 'सत्यसर्व' ना मागळनुं द्वार है-वनामा सतत् प्रयासधी-सपूर्ण खतथी~राक्षसी भोरथी मच्या रहे के बने बासरे ए दरवाओं खेमना माटे सरको धई रहे छे एवा फतेहमद माणी काई एक-वे नथी, हजार -कास मधी पण असस्य के इसा आधर्मनार्चा हे के. ते सकेंग्रं एक सरख़ न नोयु छे व्यापणे हाल ने चीनो सुहमदर्शक्षक, दुरवीन मादि समना साहित्यबढ़े पण बोई शकता नयी ते

रुपोर घात

१०

चीजो भाषणा पहेंचा इनारो बरतो उपर चई गयेका ते 'फ्लेइम्झ ठेलनाराको'ए कोई इती पाणी, शर्म, इसा आदिना वारिकमा बारिक परमाणुमां कटका कीव छे ते सुस्मर्काकसम्ब दिना सेको कोई सक्या

इता होकापत्र, भागबोट भन बीमां हभारा साहित्य

छता अमेरिकाखड मात्र ४१२ वरस उपर ज गो-धायाः; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अगाउ ते खड अने एवी बीजी बारसो भूमिओ पेला 'फनेहमद ठे-लनाराओं ए जोई हती अने त्हेनी नोंघ करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध तो हजी हमणा ज थई छे, परतु त्हेमनी झडपने शरमावी दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए एथी पण योडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकली उत्तर मेळवी शकता *

ए 'फतेहमट ठेलनारा' नी फतेह कया का-रणने आभारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने छट्-भवना योग्य प्रश्न छे शरीररूपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे ज्ञान रूप ज छे. परन्तु कर्मरूपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ 'आहारक लिख' बढे, × ज्ञानावरणीय कर्मों

80 **र**पोषधात बन्दे एवा पण प्राणीओ यई गया हे-याय छे सने धरेत, के बेका त 'सरपसर्व' ना बागळने द्वार वे ख्वामा सतत् प्रयासधी-सपूर्ण खतधी-राहसी भोरपी मच्या रहे छे अने भाखरे ए दरवाणा लेमना माटे खरको धई रहे छे एवा फतेहमद प्राणी कोई एक-बे नयी, हजार -अन्द नधी पण असस्य हे हता आश्चर्यशर्चा हे के. ते सर्वेप एक सरम्ब न जोन छे मापणे हाळ ने चीनो सहमदर्शक्षम, दूरबीम

आदि समदा साहित्यबढे पण बोई शबता नयी ते वीषो बापणा पहेंचा हवारी वरसी स्वर धई गवेंच्य ते 'फ्लेहमद टेक्साराको'ए कोई हती पाणी, तीर्य, हवा आदिमा बारिकमा बारिक प्रसाधमा करका बाव के ते सुस्मदर्शकपत्र बिमा तेंचा कोई शक्या

इता होकायत्र, भागबोट मन बीनां हुनारो साहित्य

्छता अमेरिकाखड मात्र ४१२ वरस उपर ज शो-धायो; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अगाउ ते खड अने एवी वीजी बारसो भूमिओ पेला 'फतेहमद ठे-लनाराओं ए जोई हती अने त्हेनी नोंध करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध तो हजी हमणा ज यई ्रह्ये, परतु त्हेमनी झडपने शरमात्री दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए एथी पण योडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकर्ला उत्तर मेळवी शकता *

ण 'फतेहमद ठेलनारा' नी फतेह कया का-रणने आभारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने उद्-भवना योग्य प्रश्न छे शरीररूपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे. ज्ञान रूप ज छे. परन्तु कर्मरूपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ अ 'आहारक लिख' बढे, × ज्ञानावरणीय कर्मो. धुमाबी दूर करवाथा शीवक आयोआव प्रकाशे €ं पद्धी सर्व पदार्थ अमे सर्व भाव ताद्वत्य देखाय 🗗 आवा 'फतेइमद ठेलनारा'ओए दरवाको उ बहतां ने ने स्पष्ट नोर्यु तहेनी मींच मापणा हायमा भावे तो आपो केवा माग्यशार्टा ! घरे, खेमणे ते अनुमह की भी पण छे 'झाननी दूरवाजी' केम खोलने तहने माटे तेमी कुचीमी मुकता गया छे।

एटलुक नदि पण दरवाको खुक्तां सु शु नकरे पडके ते वण तेओ नीचता गया छे, के नेवी थोड़ जो बाची तेने सपूण शरीके बापणे मानी न बेसाए ब्सापण माटे इने एटल न करवान रहे छ के. ते

उपार् पात गर्प छे प्रथम शुभक्ष अने पश्ची शुद्धक कार्योवहै,

ę۶

दरबाने नइ उभनु मन पड़ी सूचन्या प्रमाणे संतरी, दरबानो ठेरपा करवो भूम काशों पटले पुन्तना कार्यों अने सुद्ध कार्यों एटले धर्मना काची ध्रम ए छन्नद्र प्राचीद्र 🦫

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इन्छा करशे: परन्तु ज्या सर्व महाजनोनी नोंध एक सरखी छ त्या कीनु नाम देवु ? हा, ते सर्वनी नोंधने एक नामधा ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छ एने हु तो 'र्च' तरागनींध' ए नामयी · ओळखावव वधारे पसद करु छु, कारण के ए नोंब राग अथवा पक्षपात वगरनी छे अथवा एवा महा-जनोनी करें छी छे. परन्तु जनसमाज हिने 'जैनशास्त्र' नामधी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लडी पडता हेतुनी दरकार करवा सूचवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीत नाम वापरवा छूट लड्श

ए 'जैनशास्त्र' एम मूचवे छे के, 'धर्म रुपी सदर महेलमा प्रवेश करना माटे प्रथम सम्यक्तवनी

उपोर्भात वरवाना खालवा नोइए ए दरवानेथी न महेर^{मां} प्रदेश थाय छ। मः, बात कोण बंबक नहि राहर् अमदाबादधी सुबई अबु होय रहते माने हमणा वे आगगाद्रीमी सबद घणा सारी छ, तो पण कार्र

{8

गामकानी रहीश टीकीट मार्पास व न भागती होय ता ! भगर परटप्राम उपर आबीने बहवाण नवानी गाबी आवतां ६पं सहित...बहरी ग्रवई पहींचवानी आशार्था-न्हेमा बेसी बाय तो 1

माटे धर्मशास्त्र रुपी रहन टेन झाना छता 'सम्बद्ध' संयंश 'खरा द्वान'नी माहता वगर

धर्मशास्त्रमो भक्टो उपयोग व धवानो 'सम्पन्तव' झुतल छे, तेथी चळदुं 'मि रपाल' श तत्व छे, दरेक बाबतपर विचार करवाने :

भीत र्राष्ट्र केटकी विशाळ छे 'वीतरागर्ने। भ केकी पश्चपात बगरनी छे-केबी बहेम बगरनी छे- आडवर वगरनी छे, अने जैन सिद्धातो स्त्राश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवा उमदा सत्यो छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अयइति वाचनारने थशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ ययो मानीश.

सम्यक्त्वना सववमा ने ने विविध विपयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो सक्षेपमा स-मावेश आ पुस्तकमा करेलो नोवामा आवशे, धर्म-ज्ञान आपनारी शाळाओ वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाम थवा आशा रखाय छे.

सनातन जैन मतावलवी मुनीश्री प्रणीलालजी महाराज (लिवडी समुदायना पूज्य श्री पोहनकालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अतः करणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा- तपुं छे प्रयम शुप्तक कमें पछी शुद्धक कार्योक्टे , धुमाडी दूर करवाथी शीयक आयोगाय प्रकारी छ ' पछी छर्व पदार्थ अने सर्व माय ताद्वस्य देखाय छ

आवा 'फतेहमद ठलनारा'ओए दरवानो ट घडता के ने सप्ट नोयुं देशी मींच आपणा हायमा आवे तो आपो केवा भाग्यशार्टा! ओर, देमणे ते अनुपद्द कीची पण के 'ज्ञानमी दरवानी' केम

उपाव घात

ęρ

खासको हिने माटे तेशो अर्थाओ मूकता गया छ; एटसुक नहि पण दरशको सुख्यां हु सु नकरे पड़से ते वण तेशो माधता गया छ, के वेथी योड को

बायों तेने सपूर्ण सपीके आपूर्ण मानी न बेसाए. आपूर्ण माटे देने पटलु न करवानु रहे छ के, ते दरवाने नइ उमनु अन प्रश्न सूबस्या प्रमाणे खेताया, दरवानों टेस्पा करवा

 शुम कार्यो एटले पुग्यमां कार्यो अने शुक्ष कार्यो एटले समना कार्यो श्रीचे ए सुन्नई पनकीय छ

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इच्छा करके; परन्तु ज्यां सर्व महाजनोनी नोंघ एक सरबी छ ला कोन नाम देवु ? हा, ते सर्वनी नोंधने एक नामयी ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छ एने हुतो 'र्च'तरागनींध' ए नामथी - ओळखावव वधारे पसद करु छु, कारण के ए नोंब राग अथवा पक्षपात वगरनी छे अथवा एवा महा-जनोनी करेडी छे. परन्तु जनसमाज व्हेने 'जैनशास्त्र' नामथी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लडी पडता हेतुनी दरकार करवा सूचवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीतु नाम वापरवा छूट लड्श

ए 'जैनशास्त्र' एम सूचवे छे के, धर्म रुपी म्रदर महेलमा प्रवेश करवा माटे प्रथम सम्यक्तवनो

tu दरवाना सालवा भोइए ए दरवानेया न महेकमां प्रवश् याय छ अन्वात कोण कवक सहिरास है, अमदाबादधी मुंबई जबु होय तहने माने हमणा हो

मागगादीनी सबद घणी साधि छ, तो पण काई गामकासे। रहील टीकीट आफीस व न वाणती हीय सी । भगर ५ टकार्म उपर माभीने बढवाण जवानी गाडी सानतो इर्थ सहिल... मरदी मुनई एहें चवामी-

माशार्था—स्ट्रेमा बेसी **नाय** मो д

मादे धर्मशाका रुपी रस्त्रे देश होता छता 'सम्पन्नत्व' अधवा 'सरा ज्ञान'नी माहती वगर धर्मशासनी अवकी उपयोग व धवानी

'सम्पक्तन' शुतल छे, तेथी चकट 'मि व्याल का तत्व छ, दरेक बाबतपर विचार बरवाने .

'सैम चीर' केटकी विशाळ छ, ' बीतरागरीय ' केनी पश्चपात नगरमी छे-केनी ब्हेम नगरमा छे-

भाडवर वगरनी छे, अने जैन सिद्धाता स्त्राश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवां उमदा सत्या छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अवइति वाचनारने यशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ यथा मानीश.

सम्यक्त्वना सबधमा ने ने विविध विपयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो सक्षेपमा स-मावेश आ पुस्तकमा करेलो नोवामा आवशे, धर्म-ज्ञान आपनारी शाळाओं वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाम थवा आशा रखाय छे.

सनातन जैन मतावलकी मुनीश्री मणीलालजी महाराज (लिवडी समुदायना पूज्यश्री मोहनळालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अतःकरणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा-

उपाव्यात वक रायचद्रबीए मारी घणीएक शंकाओना भुर करी च उपकार कर्यों छ ते भूकाय तेवो न

सम्पन्न सर्वभी म्हास सहाज्ञानने ते क्सेनी स ययी पुष्टी सळवाथी न मा पुस्तव नम्म पामी माटे खेमने तथा ने न पुरुषानी सहाय केन नावी छे ते पुरुकोने, वा केसानी सुवामी मारो देमांना दानो माटे हु पोताने न बोसमदार रासु

भने पुस्तकमा दापो **छ** ते तो हुँ कागळपी **व** व हुक करीश, कारण के रचती तेमक छपायती क्ल नमुक मुशीबती अने बंधनीयी हैं भेरायक हते. नवीन आवृत्ति योडा च क्खतमा प्रगट करवा मार्र प्त ने बसने धनारा वधारा स्वतनार सञ्जनानी। मत करणपूर्वक मामार मानीश

जेनहितेच्यु " भाषाँसै **अमदापाद** } या मो _{माह} तिभवी नागीर का आरत सादर मट,

सम्यक्त्व,

प्रकरण १ छुं.

प्रवेशक.

(Introductory)

श्री 'भगवतीजी' सूत्र सत्य कहे छे के:—
नस्सा जाइ नस्सा जोणी। नत्तं ठाण नत्त कुछ।
न जायान मुञ्बा जथ। सञ्बे जीव्वावीअणं तसो।।
अर्थः-''एवी कोइ पण जाति रही नथी,
एवी कोइ योनि रही नथी, एवं कोइ स्था-

श्री श्राचार्यं विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

(१८) प्रकरण १ छ-प्रवेदाका ग न रहतू नथी, एवु कोइ कुळ रहतू नयी, के च्यां था भी**म मन्म्यो−मुमो न हों**य " भीव ते सब भगाए अनत अनत धार फर्यो से ए फरवामां अगर जन्म-मरणमां ने अ सब बेदना समायस्री छे ते, मनुष्य मायाना भावरणयी मूखी ज जाय के श्री 'वचराय्य यन'माहानी महात्मास्पष्ट पोकार करेक्के जम्म बु'खं भरा बुरुमं । रोगाय मरणाणिय। अहे। दुस्ते। हु संसारो । मध्य किस्साति मंद्राणी।। अर्थ:-"नन्म द समय छे;नरा(हजानस्या) दुःसमय छ। रोग अने मरण पण दुःसमय

छे मही! मा ससार ज दुः च रूप छे, के जेने

विष नंत्रमो रीवाय छे "

काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, विषय, कषाय अने प्रवृत्तिनी सोवतथी जीव नर्क, निगोद, मनुष्य, तिर्यच, देव आदि स्थिति-ओमां उपर कहेलां जन्म-जरा-मरण अने आधि-व्याधि-उपाधिनां असहा दु खों परा-धिनपणे भोगवीने पण अद्यापि वृप्तथतो नथी विचारबुं जोइए के, आ मनुष्य भव ध-णो दुर्रुभ छे; अने मळेली सामग्रीओ फरी फरी हाथ आवती नथी, माटे श्रीवीर प्रभुए गौत्तम ऋषिने आपेलो नीचेनो गुरुमंत्र दरे-क मुमुक्षुजने सावधान मनथी जपवो जोइए:-दुलहेखलुमाणुस्सेभवे ।चिरकालेणव्विसव्वपाणीणं। गाह्यय विव्वागकम्मुणा।समयगोयममाप्पमायए। अर्थः-''मनुष्य जन्म मळ्वो घणो दुर्रुभ छः; घणा काळे पण सब जीवने ते जन्म इसम छे, (भारण के) गाडा (निकाचित्र) कर्मी आ-का आबे छे माटे क गौचम ! ममय मामनी प्रमाद न करीश " मनच्य मन साथे बळी बीजी सामग्रीओ मळी छे. तेनो साम अवश्य खेबी जोहप:-मनदर कारो 'मनु-भव ' 'आर्य-क्षेत्र' मे 'उत्तम कुळ' , 'स्क्सी तणी स्हेर'' 'होतं आवर्त्' प्रमाणीए, 'पांचे इन्द्रि पुरी' मळी, 'शरीर निरोगी' बळी, 'समागम साधु तणी' नेची शास्त्र सूणीए १ 'मतीति घरम सेरी ", 'इच्छा तप-संयमनी' , एवा ' वहा नोगवाह' दुरस्क्रम साणाप मळयो ने साहित्य सारी, करीए न ते अकारी,

रुडा उपयोग वडे, आतमने तारीण

(२०) प्रकरण १ छ-प्रवेशक

प्रकरण २ जुं.

गुरु.

किंद्रिस अनुकुल जोगवाइमांनी पहेली ७ भिर्मा के पटलेएमां(आजन्म-मा तो) आपणो हाथ थोडो ज होय छे परन्तु आठमी जोगवाइ साधुसमागम ते केटलेक अंशे आपणा हाथमां छे; अने नवमी-दसमी

*प्रायः ए शब्दथी समजवुं के लक्ष्मी कोइने ज-नमधी ज मळे छे अने कोइने पाछळथी वेपारादि वहें मळे छे जन्मथी जे सात जोगवाइ मळे छे ते पण अळवत पूर्व जन्मोमा आपणा हाथे ज रळेली छे. (२२) प्रकरण २ हु-गुरू-

नोगगाइ दो आउपीना पेटामां ज भाषी नायसे एक मसेरो भी गौसम ऋषिए श्री महा बीर प्रमुने पूछर् के, "है भगवन्। साधना स मागम करवाची श्रंपक बाव ?" त्यारे ते

क्वानी महात्माप जवाब आप्यो के ---मञ्जूणे नाणे विनाणे । पश्चकाणेय संजन्मे । अएडनचे तने **बोन।** वोदाणे अविस्था सिद्धि ॥ अर्थ - "साधुममागमयी 'अवण' नो छाभ

मळे: ए धवणधी 'ज्ञान-विज्ञान' एळ याय, हान-विहानयी पापने त्यागबाहप 'परभसा-ण' (प्रकारम्यान) फम यायः तेमायी शेन्त्रओ उपर काब रागवा रूप 'सयम' फळ थाया ते-

मोधी 'अनाश्रव' (भषवा नविन पापकर्प अ डकाववा) रूप फारू थायः वेमांबी 'तप' फारू

थाय (कारण के अना अवी जीवो हळुकर्मी होवाथी तप करवा सहज इच्छे) अने तेथी जूनां कर्मने भस्मीभूत करनारं 'निर्जरा'रूप फळ थाय एम परिणामे 'मोक्षफळ' अथवा सिद्धि मळे"

 साध-समागमनं सार्थक त्यारे ज कहेवाय, के ज्यारे तेमनो उपदेश श्रवण थाय अने ते उपदेशने अमलमां मुकी मोक्षसाधना माटे यथाशक्ति प्रयत्न थाय अहो! आपणे केवा मंदमति छीए-केवा दुर्भागी छीए के, श्री वीतराग देवना अनुयायी मुनीराजो स्थळे स्थळे विहार करी सत्योपदेश करे छे तो पण पमाद, छोभ अथवा मोहने छीघे आएणे तेम-नां दर्शननो अने उपदेशश्रवणनो लाभ लइ

(५४) प्रकरण २ शु--गुक-शकता नथी । जे बोच हानावरणीय, उन्न-

नाबरणीय, मोइनीय अने अतराय ए चारे 'घातीकर्म'तथा पदना आयुष्य, नाम, अने गोत्र ए चारे 'अधातीकर्म ' नो नाम करी मसारसमुद्रभ्रमणयी जगारवानी श्-

कि भरावेछे वे बोभनी गरज न राखीए वा-आपणे केवा आत्मधाती कहेबाहर ! बगर मार्ग्ये भावती सहसीने पद्धी मारनारा आ पणा जेवा कमश्रक्षश्रना कोण होय ?

परन्त दरेक माणसे साधु अपना ग्रहने

पारस्तवामा बुद्धि शपरवी ओइए कारण के

भे पद चपर आठको बचो मकियाब राख

बामोटा पुरुषो भक्षामण करे छे ते पदनी सास्य सौने सामे भने वेभी, योग्यता न हो

ा छतां, घणाए पुरुषो मात्र द्रव्यना छोभ-शि अगर मानपाननी आशाधी ए पद धा एग करेछे एवा गुरु पोते ज तरी शकता नथी शो वीजाने श्रुं तारवाना ?

तो वीजाने शुं तारवाना ? वाळभर्युं दुध थोरनु रे, उजळु अधिक प्रमाण, नेसना दुधथी लागे भळुरे,पणपीनारना जाय प्राण.? माटे—-

'रुपे निव राचिये-एना गुण तणो करीए तपास, 'सदा बुद्धि साचीए---'

हमेश विचार करवों के, गुरु कइ दृत्तिथी उपदेश करे छे-अने एनो उपदेश आपणी रिन्यायबुद्धि—सदसद्विवेकबुद्धि मानी शके तेवों छे के निह १ धर्म के जे मुख माटे कर वामां आवे छे ते कोइ दिवस कोइ पण (ना-

(२६) प्रकरण २ ग्रं-गुरू-

नामां नाना पण) प्राणीने दुःसी करनायी थवो नगी। अने कोइ पण माणीने दू स भाय

एवं काम वर्मना नामे उपदेश तेने तमारे की-इ दिवस गुरु के साधु भानवी नहि जेओ धमुक माणसने हिसागर्मित उप देश करनार तरीक जाणे छे छता तेने पूर्वी छे-माने छे,तेमो घणुल्लह लासच्च होबायी म

प्म करे के गुरु कोई मंत्रजंत्रयी माई दारि इ फेडे भारा पैरीने दृःस्ती करे, मने छोकरां मापे, इत्यादि सासप्यी न सोमी लोको हों-

गीने बच्ना रहे छे एक अनुमदी कहेंग्रे के:

'' गरु सोमी शिष्य सास्त्र, तातु सेसे दाव "होतु द्रस्या भाषडा, नेठ पध्यरकी नाव " पर्मने कर्मधी नही जाणवो सोहर संसा ¥व्यवहारमां नीतिनो उपदेश उत्तम छे, ण वर्मनो उपदेश नीतिथी पण एक डगर्छ भागळ वधीने,पुराणां पापोने घोता अने न-ाां पापोने आवतां अटकावता शीखववानो तावो करे छे; तो पछी धर्मने नामे कोइ पण ्रावतुं एवं काम केम ज थइ शके, के जेथी कीइ पाणीने पीडा थती होय? अने एवो उप-देश करनार माणस कदाच एम कहे के ' ए तो धर्मना माटे करवानुं छे, ' तो शुं धर्मना षिपी पाणीओए तेथी ठगाडुं जोडए ? शुं ते-अो तेने धर्मगुरु कदेशे के व्यवदारगुरु ? वि-द्धारेण च्याजवी ज कहयुं छे के:-सत्य नास्ति तपो नास्ति । नास्ति चेन्द्रियनिग्रहः । सर्वभृते दया नास्ति । एते चाण्डाळळक्षण ॥

(२८) मकरण २ जुं-गुरू-अर्थ -''केनामां सत्य नथी,तप नथी,हिंदी निम्नइ (जिलेन्दियपणुं) नथी, माणीमार्भ मेटा ज नहि पण नानामोटा मक्-तरफ प् या नथी, त्रुस्नां नहि पण चढाळनां सर्व

भी 'स्पगदाग' सूचमा वपदेशक(ग्रुट) योग्यताना सर्वपमां कह्यु छे की-'छिन्न सुप् अणासक्ये' अर्थाद केमणे आश्चबहार (तपन्त गरनाजां) छेषां छे 'ते पन्मं सुद्धमास्त्रतांति' तेओ न मान शुद्ध पर्मीपदेश करी छके छे मेदपर्ममां 'आहिसा परमो पर्मा' ए सुस्प

समझरों "

भेदमर्ममा 'अहिंसा परमो पर्मः' ए मुस्य मंत्र छठा ते भनना कोइ चपवेशक हिंसामिन्न काम करवा सस्राह आपे तो ते 'युक' नहिः

जैन भर्मना कोइ साधु, 'द्या' ने मर्मनुं मूळ

भूनवा छतां दयानो भंग थाय एवो उपदेश करे तो ते पण 'गुरू' निष्ठ

शास्त्रमां सद्गुरुना २७ गुण विस्तारथी कहेला छे अने ते सर्व आपणी विवेकबुद्धि कबुल राखे तेवा छे

्रक्रिकान, आंख, जीभ, नाक अने त्वचा ए पांच इन्द्रिओना निग्रह रुपी ५ गुण; हिसा-, जूट-चोरी-मैथुन अने परिग्रह (**घन-मा**रु ब्रिआदि) एपांचथी सर्वथा निवर्तवा रुपी 'पांच महात्रत'ना ५ गुण्: क्रोध-मान-माया-छोभ ए चार कषायना निग्रहरूप ४ गुण;मन-वचन अने कायाना योग शुद्ध पवर्ताववा रूप ३ गु-ण; भर्ममा दृढता; करणसस्य (पिडलेहणा);

ीरोग-परिसहनी सहिष्णुता (शांत मनथी खम-

(३०) मकरण २ र्**श**−गुक भाषणु), मरणथी निहरपणुः समाः वैराह चारित्र; दर्शन (समक्ति);हान; राजीमी हरे

त्यामः ए २ अगुणबाळाने 'सद्गुरू' कहेवाय ह गुइनी परीक्षामां घली समाज रामवा व बी आ जमानो छे; कारण के 'संसार असा छे ','काळ कोइने मुकनार नथी','धर्म 🍂

हो ते छसी यहा' पद्मो मास्ताविक बोध स धम अने गुरुओ करे छे अने ए शास्तामि बीवधी पोताञ्च गुरुपणु सामा पासे कबुल 🤟

राबीने पछी तेने स्वार्थजानमां फलावे हैं 'तमे देवन रीम्रवना यह करो, पूजा करा, व

रघोटा कहाडों' पत्री उपदेश ओपी ए रस

पोवानं क्यीधन मेळपी से छे परत हा

अनोप विधारवात प 🕏 के, ने देव सुधा

मृतथी रीझाय ते देव खुशामत वंघ थतां कोपवानो के वीजुं कांइ? अने देवने कांइ फळ आपवानी सत्ता नथी तेमज पापोनो करनार माणस देवनी खुशामतथी शिक्षामांथी छूटी जाय ए शुं वनवा योग्ध छे? माटे जे कांइ उप-द्भेश गुरु करे तेतरफपरीक्षकदृष्टिथी,गुरुना हे-तु अने स्वभावतुं मनन करी तेनी किमत करवी. सोनानी किमत आंकवा माटे कसोटीनो प-थ्थर एक उमदा साधन गणाय छे,तेमज 'नि-र्वंद्य उपदेश अने तदनुसार आचार' ए ज कसोटी वडे गुरुनी किमत थइवाके छे *

^{*}राब्द--रुप-रस-गंध अने फरसना विषयो-मा छुट्य थयेला, घर छोडीने नीकळवा छता अ-

प्रकरण ३ जु

सम्यक्त्व (समिकत)

इति पसंदगी पाछक बाटली बची से पाछक मारेली बची से पाछक कारेली बची कोईस मयोजा ने होडू भोईप, कारण के,कारण बगर कार्य पासरा—देश-मठ-मंदीर-मदीद के बचैना माले क बद पदनारा,की—पुत्र-सहीते छोडी नीकटक बा छता रिट्य-शिड्यानी सटपदमां रख्याच्या रहेडा, बाहन लगाना छता स्टेयकणी महोत्सव हाथी ठगर महोनिन्छ जालक यमेछा,एवाने 'गुर्ल

तरीके मानवा के नाई प आ उपरथी स्पष्ट समनाशे

्वनतुं नथी गुरु तरफथी आपणने वेवडो लाभ मळी शके छे. एक तो, तेमनो तपदेश श्रव-ण करवाथी उमटा तत्व समजी शकीए; अ-ने वीज़ुं एके, गुरु ए सद्वर्त्तननो जीवतो दा-खलो होवाथी पुस्तको के व्याख्यान करतां 🛱 तेमनो चहेरो वधारे सारी असर करी शके तेमनी शांत मुख्मुद्रानुं गांभीर्य अने ढळेळी आंखोनो प्रकाश आपणी आंखो द्वारा आ-पणामां प्रवेश करे छे अने मधुर रवरव कर-ता रुपेरी झरा जेवो तेमनो वाग्प्रवाह आपणा कान वाटे प्रवेश करे छे तेमज तेमनो शुद्ध 'आचार आपणा मगज द्वारा प्रवेश करेछे खरेखरा-आत्मार्थी-निर्दंभी गुरुनो एवो अलौकिक प्रभाव छे. हवे एवा गुरु पासेथी

(१४) प्रकरण १ जु-सम्यक्त्य

भाषणे शिलवानुं ग्रं ? श्रं मात्र में जोइने ज वेसवायी सार्यक थस्ते ? सारे गुरु पासेयी मेळवबानुग्र होइ शक्ते 'समकित' अथवा सम्यकत्त्व' सम्यक्

पटले हवा मकारे जाणनापणुं ते एनी सरळ अर्थ एटलो ज के माचाने साचा तरीके ओह. ज्लाडु ते (अछनत, एमा सोटाने सोटा त-

रीके मोळलवानी समावेश आपोजाप ज या य छे) साचा सोटानुं शेने इडा प्रकारे मा णवापणु याय ते तो पछी मनमांबी रागद्वे

पादिने दश्चनिकाल ज करे; वेदी से सर्व मा पी उपर अने सुलदुःक छपर सममाय-समा न इष्टि राक्षेः ए कारणयी वर्की 'सम्पक्स'

नी भ्यास्या 'समग्राव' एण यह शके

धर्मनो पायो ज समिकत छ पहता पाणी-ने धरनार-झीलनार तेने 'धर्म' कहे छे पण झीलनारमां अमुक जोर (Force) जोडए. एक केरी ज्ञाड उपरथी पडे छे, तेने पाङनार पृथ्वीनुं 'गुद्धत्वाकर्षण ' (Gravitation) भामनुं तत्व छे इवे तमारे ते केरीने झीलवा विचार होय तो ए ' गुद्धत्वाकर्षण 'जेटला-ज जोरवाळो अगर तेथी वधारे जोरवाळो हाथ धरवो पडरो जे कुद्रतमां केरीन पा-डनार 'गुरूत्वाकपण' तत्व रहेलुं छे ते ज क्कदरतमां प्राणीमात्रने पाडनार 'पाप' तत्व ंपण रहेलुं छे कोइ न जाणे तेम ते वन्ने त-त्वो चीजोने अन प्राणीओने नीचे खेंचे छे. . केरीने 'गुरूत्वाकर्षण'नी असरथी वचावना-

(३६) मकरण ३ मुं-सम्यक्त

गतमे छातेम प्राणीने पाप 'नाआ क[ी] र्पणधी वचायवा माटे ' घर्म ' छः तमे जेम

केरी पर 'गुरूत्वाकर्पण'नी असर न धरा देवा माटे एन्या अ अगर एथी बघारे भीरवा ळो हाय घरो छो; तेम 'मम' पण 'पाप'ना,

भाक्तपण जेन्छा म अगर तेथी वधारे जोरने षार्ख 'समकित' घरे छ आ ममाणे सम्यक्त ए भर्मनी हाथ भ

यबा धर्मनो पायो छे श्री ' उत्तराघ्ययन ?

मूममां कद्युं छे केः मिय चरिश्वं समस्तविष्ट्रणं । देसणे उमद्रयस्त्रं ॥

भगुणिस्म निष मेहितानिष भमुखस्स निब्बाणा। ।।

समस चरिताइ । मुगर्व पुर्ध्व च मम्मर्स ॥ १ ॥

नार्दमाणस्पनाणं नाजेण विजा न होति बरणगूणा

अर्थः-'' 'समाकेत विना 'चारित्न'(मुनीपणुं तेमज श्रादकपणुं) नथी. 'दर्जन' अथवा 'स-मिकत'ज्यां छे त्यां उभय ('समाकेत' अने 'चा-रित्र' वन्ने)छे 'समकित' अने'चारित्र'ए वेना युगलमां प्रथम'समाकित'आवे छे 'समकित'वि ्हा'ज्ञान'नथी;'ज्ञान'विना'चारित्र'नथी. अने ए गुण विना 'कर्ममुक्तपणुं' नथी; तेमज कर्म-थी नहि मुकायलाने 'निर्वाण' नथी. ''

माटे समिकत प्रथम मेळवबुं जोइए समकितीनी सुंदर व्याख्या श्री 'उत्तराध्ययन' सुत्रमां आ प्रमाणे आणी छे:-तिहयाणंतु भावाणं सभावे उवएसणं।
भावेण सहहं तस्स समत्तं तं वियाहियं॥
अर्थः-'' 'जातिस्मरण' हाने करी अगर गु-

(३८) मकरण ३ मुँ⊸सम्यक्त्य द्भना चपतेशे करी भतः करणना श्रम भावेथी ।

समाकेतना ० भेद छे:-

'नवतस्यो ने कजाणे ते समकिती जीय कडीप या व्याख्यामा जाणपणुं वेगज भत क

रणनो शुद्ध भाव बन्नेनो समावेश छ

? द्रष्य समकित,२ भाग ममकित,३ नि ्

 नवतत्वमां सर्व नाणपणानो समावेश धाव छे तेनां समद्धां शास्त्रों, सर्व विद्या (Scacuce),

सर्व तत्वज्ञाननो संपूर्ण समावेश पाय 😺 (१) मीव (२) भनीव, (३) पुण्य (४) पाप, (५)

आश्रव (६) संवर (७) निर्क्यरा (८) बंध अने

वरत एक अछापर्व पुस्तक बहार पृष्ट्ये

पर श्री 'स्पा में हा म मंडळ' तरफंघी कोइ

(९) मोस आ विषय प्रणो मीड होवाची ए उ

श्चय समिकतः ४.व्यवहार समिकतः ५ निःसर्ग समिकतः ६ उपदेश समिकतः ७ रोचक सम-कितः ८.कारक समिकतः ९ दीपक समिकत

(१) " द्रव्य समाकित ":-श्री वीतराग देव अगर तेमना आज्ञानुसारी मुनीराजनो नोध सांभळी कोइ माणस मात्र श्रध्धाथी— भरोसाथी तेने सत्य माने,परन्तु तेनो परमार्थ समजे निहः; एवा जीवनुं जे समिकत तेने 'द्र-व्य समिकत ' कहेवाय

(२) ''भाव समिकत '':-' जीव-अजी-व' आदि 'नवतत्व', 'काइया' आदि 'पचीस , किया' ए विगेरे अनेक भेद जाणी, शुद्ध अं-तःकरणथी सर्दहे ते माणसन्नं समिकत ते 'भाव समिकत' कहेवाय.

(४) मकरण ३ म्-सम्बद्धत (३) "निश्चय समक्ति" - ज्ञान-दर्शन-

मारिश्र-तपः ए चारने विषे निश्चय-व्यपहार रादि २५ बोसन् स्वरूप माणे तेवा माणस र्नु 'निश्वय समक्रित' समज्ञयु आ अम कित आध्या पणी पाठू मह्नं नथी 'इस्य समकित'मां मात्र अवण अने अ:

द्वानी समोवेश वाय छे.--वेशी आगम व पीने 'माब समक्रित'मां तत्वी<u>नं</u> भाणपणु करवानो भगावेश याय छे; अने नेथी पण भागव गंभीने ' निभय समकित'मां जदी ज्

दी रिष्प (from different points of

viow) मत्यनु सिदायखोकन करवानी समा

देश याग छे इरेक बाबत उपर सिद्दानको क्षन करवाने माटे'१५ बोल'मधबा'२५इप्टि' ्छे.एक पडखुं सोनाथी अने बीजुं रूपाथी रसेछुं पत्री एक पुतळी माटे वे माणसने ययेलो वाद-विवाद जगजोहरछे एकनी दृष्टि सोने रसेछा प-डखा तरफ होवाथी ते माणप्त ते पुतळाने सोना नुंज कहेवामां दृढ रह्यो अने वीजानी रूपेरी भाग ्रातरफ दृष्टि होवाथी,ते पुतछं रूपानुं ज छे ए-म नीह माननारने,तेगाळो देवा लाग्यो: पण वन्ने भाग तरफ दृष्टि फेरवनार त्राहित छो-कोने आ कजीओ करनारानी मुर्खता तरफ मात्र हास्य ज आवतुं दुनियामां आटला व-धा धर्मी उभा थया अने धर्मने नामे कजीआ थया ते आ ज कारणने लीधे अमुक धर्मने सर्वोत्तम तरीके मनाववा माटे आ कथन थ-युं छे एम न समजतां,वांचनारे एरछुं न वि-

(४२) मकरण १ मु-सम्यक्त्य

चारचं के सांकडी दृष्टियी-ममुक्त एक म दिशी। मां गोंपी राससी राष्ट्रियी जोबायलं ते कांर संपूर्ण सत्य होइ छके नहि 'मैन धर्म' ए नाव यापणे घडीमर बाजुए मुकीए अने ए नाम धी ओळबाता घर्मन क्रिष्ठण म आएणे समि बीए हो वण तनी विधाळ राष्ट्र आपणने तेने

ना सत्य विषे सर्टिफीकेट रुप यह पढे छे.पू ध्वीनी संपाटीयी आपणे जैम उसा चडीए तेम आपणे पपारे जोड़ शकीय छीए। तेमज

वचारे विश्वाळ रोष्टियी (पक-च नहि पण प चीस इष्टिमी) जोगायल-विवासपर्छ सस व धारे माननीय होड शके ए कबुल करखे म-इकेरु नथी [ए ' पंचीस रहि 'तुं विवेधन

नाया मकरणमां कर्षु छे)

(४) " व्यवहार समिकत ":-'संवेग' अ आदि पांच लक्षणथी प्रवर्तवुं ते 'व्यवहार समिकत ' [एक पुस्तकमां लख्युं छ के:— ६७ वोल्पांना ६१ वोल्ना गुणे करी साहि-त ' उपसम ' अने 'क्षयोपसम' × समिकती स्त्रीवनुं जे समिकत ते 'व्यवहार समिकत.' (५) " निःसर्ग समीकत ":—मनीमहा-

झावन ज समाकत त व्यवहार समाकत. (५) '' निःसर्ग समीकत '':— मुनीमहा-राजना उपदेश विना'जातिस्मरण' शाने क-री नवतत्वादिनुं स्वरूप जाणवामा आवे, ते ' निःसर्ग समाकत '; अथवा, जैन मतने नहि

*'संवेग' आदि लक्षणो अने '६७ बोल'नो खुलासो ९ मा प्रकरणमा वाची '

× 'उपसम ' अने 'क्षयोपसम' समिकतनो खुलासो प्रकरण ९ मामा वाची. (४४) मक्रा ३ ज्ञ-सम्यक्त

जाणनारो+ परन्त भद्रिनस्यमात्री मानस सूर्य सन्मुस आतापना छेता, वेलेवेसे तप क रतां, ज्ञानने आवरण रूप'ज्ञानावरणीय' कर्म-

नी सयोपसम करे त्यारे तेने 'विभग धान' वत्पन्न थाय अने तेथी नीय-अजीवनं स्बद्ध्य आणे, तेथी ने जे भर्मी आरम परिश्र इबाळा छे ते सर्व तरफ विराग वस्पन यार्ग

अने मात्र निरारंभी-अपरिव्रही (केन)धर्मन ज साची माने अने ' मिर्मगद्वान'नी हानी करी 'अवाभे द्वान 'पामी, 'केष∞द्वान'

उपामीत करी भेते मोश पामे; एवा माण मर्चे समकित पण"नि सग समकित"कहेबाय.

* भाषी जैनमतनी उदारवृत्ति (Liberal

mindedness) सानीन याय छ

- (६) ' उपदेश समिकत '':-गुरु आदिना उपदेश करीने मळेळुं समिकत ते '' उपदेश समिकत'' कहेवाय
- (७) "रोचक समिकत":--श्री वीतराग-ना वचन उपर रुचि राखे, धर्म करवाना म-भोरथ करे पण अंतराय कर्मने लीधे ते यनो-रथ पुरा पाडी शके नहिः, तो पण धर्मनी शुद्ध सर्दहणा-परुपणा करे अने लोकाविरुद्ध आचरण न करे, एवा पुरुषनुं समिकत ते ''रोचक समिकत'' कहेवाय (श्री कृष्ण अने श्रेणिक राजानुं समिकत आ प्रकारनुं इतुं)
 - (८) "कारक समिकत ":—" रोचक समिकत "थी एक पगछुं आगळ वधेला जी-वने " कारक समिकत " होय; एटले के

(४४) प्रकरण ३ ज्ञ-सम्पद्ध जाजनारो । परन्त्र मद्रिकस्प्रभावी माजस्

सूर्य सन्मुख आवापना छेता, बेलेबेसे वप क रतां, ज्ञानन आवरण रुप'ज्ञानावरणीय' कर्म-

नी सयोपसम करे त्यारे तेने 'विभंग मान' चत्पम थाय अने तेथी भीव-अजीपन स्बद्धप नाणे,तेषी जे ने पर्गी भारम परिप्र:

अने मात्र निरारंगी-अपरिवर्धा (केन)धर्मने ज साची माने अने ' मिर्मगक्रान'नी हानी करी 'अवाभे द्वान 'पामी. 'केवलद्वान'

इबाळा छे ते सर्व तरफ विराग उत्पन्न थार्य

उपानीत करी नेते मोझ पामेः प्या माण

सर्वे समक्ति पण''नि सर्ग समक्ति"कहेनाय,

* आयी नेनमतनी उदारमृति (Laberal-

mindedness) सामीत याय छे

ण गुप्ति'* आदि शुद्ध क्रियाओं करे.

'रोचक' समिकती जीव चोथे 'गुणस्था-ने' होय अने 'कारक' समीकती जी^व छट्टे-. सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) ''दीपक समिकत'':—दीवो वीजा क्षेपर मकाश नाखे पण पोतानी तळे तो अं-धारुं ज रहे तेम,'दुर्भवी'+ अने'अभवी' जीवों

^{*} ३ गुप्ति:-मन-वचन-काया ए त्रणने पापथी गोपाववा अधीत् पाप क्रियामा न प्रवक्तीववा ते.

⁺ घणा भव भ्रमण करवा छता पण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुद्याबते पण मीक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटळी दवा छगावों तो पण वाळ नहिज ऊगवाना.)

"कारक समिकिन " वाळो जीव भर्म गु पर रुचि पण राखे अने ते ममाणे भर्म जा घरे पण खरो ते जीव पंचसमिति ", " 'प

* 'पांच समिति' -(१)द्राप्टिए जोड्ने चः छद्र तें 'इयां समिति (२) विचाध-भिचारीने निः चैय माचा बोळवी ते 'माया समिति', (३) वचाने

पात्रादिक यत्ना सहित (with caution) हेना-सुक्ता ते'भाषाण भेडमच निलेवणा सामित ह्र(४)९(दोप टाळी निर्देश ब्राहा हेन्से हा 'एपणा समिति' भने (९) नडीनाति—अप्रनीति (सान्नो-पेशान

भने (९) मबीनाति-अप्रनीति (धाबो-पेशाव भादि बहार परठवानी (फॉर्फो देवामी) भोजो का इ जीवने कोछामना (दुश्य) न उपने एवी धेरी परठवश्री वे 'ऊषार पासवण खेळजळ क्षाण परिठा

निर्णया समिति

ण गुप्ति '* आदि शुद्ध क्रियाओं करे.

'रोचक' समिकती जीव चोथे 'गुणस्था-ने' होय अने 'कारक' समिकती जीव छहे-. सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) ''दीपक समिकत'':—दीवो वीजा अपर मकाश नाखे पण पोतानी तळे तो अं-धारुं ज रहे तेम,'दुर्भवी'+ अने 'अभवी' जीवों

* ३ गुति:-मन-वचन-काया ए त्रणेन पापथी गोपाववा अर्थात् पाप क्रियामा न प्रवर्त्तीववा ते.

पापथा गापाववा अथात् पाप । त्राथामा न प्रवत्ताववा तः ने घणा भव भ्रमण करवा छता एण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुश्चित पण मीक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटली दवा छगावों तो पण वाळ नहिज ऊगवाना.)

(४८) मकरण 🔻 तुं-सस्यक्त

प्ररुपन समकित वे "दीपक समकित" ग णाय 🖢 " अमे सी परमेश्वरने स्मोळे चेठेस **छीए**ण्**र्**क्ष समजनारा सुद जैन वर्गना ज केट' छाक साधुभा—सफेद पस्रवाळा, पीका मस्त्रमाळा तेमम दिशामस्त्रमाळा साधुओ--पण 'दीपक समीकती' होय छे

अन्यमनोने प्रतिषोधी मोसनां साधनी बता पण पोताने 'गडीमद' बाम नहि, सबम ह

ब्रव्यक्तिया करे पण भतर कोठ म रहे; एव

प्रकरण ४ थुं.

पचीस'हप्टि' ('पचीस बोल')

The Twenty Five Points Of View.

अद्भारतीय कि उपर जेम वधारे दिशामांभिक्कित चीज उपर जेम वधारे स्पष्ट देथी दृष्टि पढ तेम ते चीज वधारे स्पष्ट देखाय;तेम ते चीजनुं वधारे ताहक्य ज्ञानथाय.जैन तत्त्वज्ञान दरेक वावत उपर २५ हष्टिथी-२५दिशाथी-२५ आंखोथी नजर फेंके छे अने जो दरेक देशना अने दरेक जमानाना महापंडीतोए पण जैन सिद्धांतोने उ-

(१०) मकरण ४ यं-पनीस होष्टि चम तरीके स्थिकायों तेर्नु कांश् कारण होय वो ते तेनी पिशाळ हािए एक छे ए 'पचीस हाि ने जेनो प्रशुंसद 'पची स बोक्ष' ए नासपी ओळसे छे पण तेनो ससार्थं 'पचीस हाि' ए शस्त्री सारो समझा प छे असे ए पचीस संबंधी संसिप्त विश्वेषन

वपर कागु पार्टी श्वकाय छे अने ए बटे व्य बहारकुञ्चन यवाय छे मूमितिवासनां सि खातो लागु पार्टीने नवां सिट्टांबी(Dedu-

करवामां आवशे, तो पण वारीक समजुती मोट तो कोड़ विद्वान सायुओं पासेची सांम-ध्वा दरेक मच्य जीवने सुष्ठामण करवामां आवे छे कारण के ए 'वचीस बोस्ट' वर्ष सवधी तेमक व्यवहार संबधी दरेक बाबत ctions) इभा करवा जेवुं आ काम छे;तेथी बुद्धि खीले छे,परिपक्व विचारथी काम थे-वाथी पस्ताचुं पडतुं नथी अने धर्म उपर शुद्ध श्रद्धा आवती जाय छे.

ए 'पचीस दृष्टि' अथवा 'पन्नीस बोल' नीचे प्रमाणे छे:—

(१-२) 'निश्रय' अने 'व्यवहार'.

(३-४) 'द्रव्य' अने 'भाव'.

(५-६) 'विशेष' अने 'अविशेष'.

(७-८-९-१०)'नाम निक्षेप','स्थाप-ना निक्षेप','द्रव्य निक्षेप'अने'भाव निक्षेप'.

(११-१२-१३-१४) 'द्रव्य', 'क्षेत्र', 'काळ' अने 'भाव',

(५२) मकरण ध्रं युं-पत्तीस **द**ष्टि (१५-१६-१७-१८)⁽मसक्ष प्रमाण ,

'मनुमान ममाण', ' चपमा ममाण ' अने 'भागम ममाण'

(१९-२०-२१-२२-२१-२४-२६) 'नैयमनय','संग्रह नय','स्थवहार नय' 'ऋ जुसुन्न नय','ग्रन्य नय', 'समिश्रह नय' सने

प्रमृत नय' प्रमृत नय' प्रमास, इष्ट्रांत सहित, नीचे समजान्या छे

(१-२) 'निश्चय' अने 'व्यवहार' निश्चयथी-पुस्तक छपाववाधी ज्ञाननो मसार पाय अने ते कारणने छहने 'ज्ञाना

बरणीय' कर्म कृटे. व्यवहारयी--पुस्तक छपायशायां प्रय स्या एरमे पुण्य-पाप बन्नेनी किया छागे दरेक कार्यमां 'च्यवहार' ते थागनो व्यापार छे; माटे शुभाशुभ वन्ने क्रिया तो लागेज (श्री 'टाणांग सूत्र 'मां कहेवा म-माणे). परन्तु केटलांक कार्यमां तो 'नि-श्रय 'थी ज नुकशान होय छे (जेमके चो-री करवामां).

(३-१) 'इब्य' अने 'भाव '

हिष्टातः—'द्रन्य' वीटी एटले वीटी-नो आकार मात्र होय ते; ' याव' वीटी एटले आंगळीए पहेरवाना काममां आवे ते.

(५-६) 'विशेष' अने 'अविशेष'.

हर्ष्टांत:—'अविशेष' ज्ञान एटले ममुचय ज्ञान अथवा ज्ञानना कांद्र भेद व-

(९४) प्रकरण ४ युं-पपीस दृष्टि साल्या सिवास वाबामारे 'शान' कास

ते 'विश्वेष' द्वान पटले द्वाननी कोह न पुक्त मेद-पेरामाग कोषो ते; जेमके 'के वळ द्वान' अथमा 'मतिद्वान' विगेरेः

(७—८-९-१०) चार 'निसेप 'क्षि आ चार 'निसेप' जैन महमां खप पोनी माग मनचे छ पनी नेरसमनची निरांत्मी जैनवर्गमां एक मुर्तिपुत्रक पंच

 सिप्=केंक्चुं नि+सिप्=कापयुं, आरो पयुं निरोप=आरोपयुं ते अधवा आरोहण Act of attributing or ascribing;attri bution. कोह चीनमां बीनी चीननो गुण आ

रोपनो ते

उभो थयो छे के जे, मृतिपृजा के जेमां हिं-सा मुख्यत्वे छे अने धर्म के जेमां जीवदया मुख्यत्वे छे ते वेनो परस्परिवरोघ पण-जोवानी दरकार करतो नथी.

अत्रे आपणे * अरिहंत ' अने 'सूत्र' ए वे शब्द उपर आ चार ' निक्षेप ' उता र्रीशुं अर्थाद लागु पाढीशुं:—

* दुनियामा नेटली चीन छे तेटली बधी कबुल करवा छता पृजवा योग्य होइ शके न-हि. तेमज 'निक्षेप' चार छे ते चारने पूजेतो ज 'निक्षेप' चार कबुल राख्या एम साबीत थतुं नथी. मूर्तिने माननारा तेमज निह माननारा ए-' कंदर जैनो कहे छे के, केटलीक चीजो 'ज्ञेय' एटले जाणवा योग्य छे, केटलीक 'उपादेय' ए- (५६) मकरण ४ ग्रं-पंचीस द्वष्टि

अरिहंत १ "नामनिक्षेप"ः—कोर् और

सगर समीव बस्तुनुं 'अरिहंत' पृष्ठ ना म आप्तुं होय त्यारे ते जीव सपमा बस्हुं 'नाम निक्षेप'ना आघारे 'सरिहत' क

नाम निक्षय नी आवार आरहत के हेबाय भरबादना छोकरानुं नाम 'इन्ह्य' पाढे तो ने छोकरो इन्द्र न होबा छर्ता 'ना म निक्षेपे ' इन्द्र'कहेबाय

म निसप हुँ कहबाय रक्के आदरवा योग्य के भने केटलीक 'हेम' परुखे तजवा योग्य के माटे 'निसेप' एक व

पनने तनवा भीव्य है मार्ट 'निहोन ' वह व महि पण भार है पम कबुछ राह्मनार माणमे 'स्थापना निभेष ने 'ठपारेन' तरीकेन कबुछ राह्मनो मोरण पर्यु कर्त्यरा मान्न पोताने महने हैं

- २. "स्थापना निक्षेप":— तेना वे भेद छे: (१) 'सद्भावस्थापना' अने (२) 'असद्भाव स्थापना'
- (१) 'सद्भाव स्थापना' ते ता हिन्य रूप; जेमके फोटोग्राफ, वावहुं इत्या दि. 'अरिहंत 'नी 'सद्भाव स्थापना' सारे ज कहेवाय के जो भगवान देहधारी हता ते वखतनी तेमनी आवेहुव छवी अगर वावहुं बनावी राख्युं होय तो.
 - (२) 'असट्आव स्थापना 'ते १० प्रकारे कराय छे:-चोखा;कोडा-संख-छीप; गंडीने घनावे ते; परोवीने वनावे ते; जोडीने वनावे ते; धींटीने वनावे ते; छीपी-

(५८) मकरण ४ धुं-पचीस द्वष्टि ने वनावे तेः चीत्तरीने बनावे हेः काष्टः कपद्कं एम ४० मकारे कराम छे 'अरि **रंत' मसुनो फोटोग्राफ (छवी) खगर बावर्ल** न मञ्जायी * तेने बद्खे चोच्चा-कोडा-# डोको क्यारे हरकोह युक्तियी मूर्तिने आ

गळ करवा मागे छे तो पत्नी, मा एक आश्चर्य

वाचा हे के, तेओ 'सदमाव स्थापना' छोडी में 'असदमाव स्थापना ' केम करे हे ! मेर्नु नाम न 'असद्' एटछे 'सोई' तेने अहण क

रर्ष ५ र्ध विचारशक्ति पामेला मनुष्य प्राणीने

शोमती बात छे । श्री महीनायनी<u>तं सु</u>बण<u>त</u>े

बावर्स एवं तो आवेतुब बनायबामां आव्यं ह

हों के विषयी राजाओं तेने भेटवा तसपी रहा। इता नो मृतिपुना व रहे काम होत तो मछी

काष्ट-पाषाण आदि वहे आकार मात्र मा-णसने मळतोवनावी तेमां महावीरपणुं आ-नाथ तीर्थंकरनी ए आवेहव मूर्ति केम साचवी न राखवामा आवत ? वळी मात्र अंगुठो जोइने आखा शरीरनी आवेहुव छवी वनावनार कारी-गरो पण हयाती घराववा छता कोइपण तीर्थ-करनी छवी के बावछुं केम न बन्युं ए सम-जातं नथी भगवान तो जाणता हता ज के अ-मारा पाछळ वखत आवो आववानो छे: वळी ते भविष्य काळनुं वर्णन पण करी बतावताः तो ह्यं कोंड समिकती-भक्तिवंत श्रीमंतो ते वखतमा नहोता के जेओ मविप्यना करोड़ो "नीवोना हितार्थे हयात भगवाननी छवीं अने बावला बनावी राखे ? एम थयु होत तो आने

(६) प्रकरण ४ युं-यचीस द्रष्टि रोपे एटले के तेने 'महाबीर' तरीके माने-पूने प ' भारहत 'नो ' असत्याव स्थाप मा निसेष १

' असद्भाव स्वापना भो कोइने मुनाइ रही पद्दत नहि बळी आ पण विचारना मेनुंछे के, 'सद्,

मान ' अने ' असर्जमान ' स्थापना से, रूपवंग वस्तुनी न होइ शके पण कोइ मान-गुग(abstract)नी होइ शारे नहि ने भगरानने स्म रवार्त आपणे कहीए छीए त मगरान कीई प्र

ब्बीनी र तानगी, वण भट्टरय आरमा-मानाना उपन्ते मेल पूर्वशी 'निमरुप मी मधीन

वेक्षो भारमान छ तेमा गुग में भान-वद्यन

नारित्र ते तो अहरय छ। तनी स्पापना सी

रीने करी शहाय !---नकांशक

- ३. "द्रव्य निक्षेप" नेता ५ भेद छे: -(१) ' जाणग शरीर द्रव्य'; (२) 'भवीय शरीर द्रव्य'; (३) ' लोकिक द्रव्य';(४) ' कुपावचनीक द्रव्य' अने (५) ' लोको-त्तर द्रव्य'
 - (१) 'अरिहंत ' मोक्ष सिधाच्या अने तेमनुं शरीर पहयुं होय ते शरीरने 'जान णग शरीर द्रव्य निक्षेप 'ना आधारे 'अ-रिहंत ' कहे
- (२) ' अरिहंत' प्रभुए दीक्षा लीधी न होय ते वलते एटले के घरवासमां होय सारे 'आ तो अरिहंत धवाना छे' एम वि-चारीने तेमने 'अरिहंत' कहे, ते 'भवीय शरीर द्रव्य निक्षेप' ना आधारे कहां

((६२) मकरण ४ स --पश्रीस द्रष्टि (१) छोकने विषे, गुमने जीते तेओने पटले मही-पासदेव-राजा विगरने भी किक द्रव्य निहेप'नी श्रीप्र शर्रात' करें (४) अरिहेत ममुमा ने 'चोमीस अ विश्वम' छे ते ने देवमा न होय एवा हरि इर,प्रका भादि देवने 'कुप्रानयनिक द्रम्पं निहोप 'नी रहिए ' मरिर्देत ' करे (५) कोड मनुष्य भीन धर्ममां होय, पण केवळ जान पाम्यो न होय: छवा पोताने 'अरिहत' कहेमडावे ते 'लो

कोश्वर द्रम्य मरिस्त' ('गोसाळा'ना र ष्टति) ४ "मान निसेप":-सेनव्या गादि सस्ति ने वर्ते के ते 'मान मरिसंत'

सरेलरा अरिइत तो ते मा अने बंदनीक

पण ते ज. वाकी तो 'अरिहंत ' नामनो माणस के पथ्यर कोइनुं कल्याण करी शके नहि.

सूत्र.

- नाम निक्षेपः—कोइ पण प्राणी भव्दार्थनं 'सूत्र' एवं नाम.
 - २. स्थापना निक्षेपः—सूत्र तरीके कागळ मुकी तेने सूत्र माने.
- ३. द्रव्य निक्षेपः—हखेंहां पानां Concrete thing)
- , ४.भाव निक्षेप:-सूत्रमांनां तत्वो (वां-चनार जे ग्रहण करे छे ते) (Abstract Preachings of the Scriptures)

(१४) प्रकरण ४ पूं-पणीस द्वाष्टें
श्री 'अनुयोगद्वार' सुमर्गा कह्युं छे
के, पहेस्त तथ 'नितेष' 'अवस्युं द टक्के उपयोग विनाना छे;छेन्नो योश म अन् छाकर्मा उपयोगी अने परमार्थमां सामन रुप छे जेमके 'गुमास्तो' ए नाम पोका स्वायी दुकानमु काम यसे नहिं; तेमस ग्रन्

मास्तो पाते इाजर रहे पण काम न करे अगर दुकान पक्षावनानी शक्ति तेनामां न होंग तो पणं ते नकामो छे गुमास्ता तरी-के करवानां काम जाणनारो अने जाणवा भमाने करनारो गुमास्तो ए ज कामनो छे गुमास्तानो 'गुण' अगवा 'भाव' के हू

नाननो प्रीवट, ते ज अपयोगी छे देवनी वायनमा पण नेमज समझ्य सूचना १ ली:—' लोगस्स 'मां जे तीर्थंकरोनां नाम छे ते तीर्थंकरनो ' नाम निक्षेप' न कहेवाय पण ' नाम संज्ञा ' क- हेवाय तीर्थंकरनुं नाम अन्य कोइने आ-पीए सोरे ते ' नाम निक्षेप' कहेवाय.

सूचना ्र जीः—खुद तीर्थंकर वी-राजता त्यारे नाम तो हाल छे तेज धरा-वता पण ते 'नाम निक्षेप कहेवाय नहिः; 'भाव निक्षेप कहेवाय.

सूचना ३ जीः—' मोहन घर 'मां श्री मछीनाये पोतानुं आवेहुव सुवर्ण वा-वर्छ सुक्युं हतुं, के जेना कारणथी छ रा-जाने ' जाति स्मरण' ज्ञान उपन्युं हतुं;तो

(६६) मकरण ४ धुं-पश्रीस दृष्टि पण ए छ समकिती सीनोए दामसाने वां चुं निह-जो क एक तो ते उपकारी पदा-थ-कारणमूत पदार्थ हतो बने बनी धी र्थकरनी 'सदुमाद स्थापना' हती नमी राज चुढीना कारणधी शुस्ता हता पण

चोरने तेणे बांघो-पूच्यो महोतो बाटे 'म गवाननी मूर्ति देखवाथी मगवान याँद आ थे छे, ते कारणबी मूर्ति पूजवी जीवर ' ए दक्षील तदन पाया बगरनी छे अने लीन

चुडीने देमणे पुनी नहासी समुद्रपाळ रा था थोरने देखीने कृत्या त्या थण कार्

मितमा माननारा ' जीन मितमा जीन सा रिसी' कहे छे पण द्रव्य के माव एकपण रीते वे भीन सारिमी यह शकतीनयी,म गवान देहधारी हता ते वखतनी छवी के वाबछं होत तो कदाच द्रव्ये 'सारिखी' कही शकात. वळी भगवाननो ज्ञान गुण अने दूर्तिनो जह गुण: ते पण एक 'सा-रिखी' कहेनारे विचारवा जेवुं छे

आ तो धर्ममां आगळ वयवानी तीत्र इं-च्छाने छीधे उन्मार्गे चडी जवा जेबुं थयुं विद्वान अंग्रेज एडिसन' एक सादुं सत्य कहे छे के, "Idolatry may be looked upon as another error arising from mistaken devotion" अर्थाद "मूर्तिपूजा ए भक्तिनो अर्थ भूलवाथी यती एक वीजी भूल गणवी जोडए"

वैराग्य उपजवानुं के ज्ञान थवानुं तो

(६८) मकरण ४ ग्रं-पचीस द्रव्टि सयोपसम स्पर आधार राम्ने छे चुद महा-**गीर स्वामीना मुख्य शिष्य गौत्तम स्वा**भी जेवा तेमणे मावतीर्थकरनी मक्ति करी हो पण महाबीर स्वामीनी ह्याविश्वबी वो हे-मने 'केवस्क्यान 'न यस अने देमनो वि योग ए ज गौचम स्वामीने एक हुंका बसव मां 'केवळ झान' अपायनारी यह पटयो साक्षात बीवराग देव बीरानवा स्यारे वे

मने पांदवा कोर्ए सप कहाडया नहोता भी 'विपाक' सूत्र तथा श्री 'मगवती' सू सर्गा कहतुं छे के, सुवाहुकुमारे तथा जदा ह रामाए एम भावना भावी के 'भगवं त भी अहीं पपारे तो तेमने चांदी हुं कु ताथ थाउ । ' एन्छो तीम मक्तिभाव छतां अने खुद भगवाननां दर्शन थवानां हतां छतां, तेमज पोते लक्ष्मीवान होवा छतां, संघ काँढीने वांदवा गया नहोता, तो प-छी पथ्थरने भगवान मानी लड़ तेने वांदवा माटे संघ काढीने जबुं एमां शुं भगवाननी आज्ञा होय ? अरेरे ! भष्मग्रहना भ्रमीत आचार्योए मात्र पेटना कारणे, दुधमांशी पोरा वीणवा जेवुं काम करी, 'स्थापना निक्षेप ' नो अवळो अर्घ छेइ मूर्तिपूजाना अने ते अंगें थतां वीजां अगाणत पापो-मां भोळी दुनियाने केवी ह्वाबी दीधी छे! अमे दुवेला पाछा उठवा ज न पामे तेटला माटे तेमना उपर कपोळकाहेपत ग्रंथोनी केवी त्रासदायक पछेडी ओढाडी दीथी

(७) मकरण ४ युं-पधीस द्रप्टि छे! एक परिपयन पढीत कहेती के, मारा प क्षमां मारा जेवा माघ्र-४षीमा नर आपो वो 'मकाशनुकारण सूर्य नयी' एम दुनि पाने समजावी देवामां मने कांद्र मुझ्केछी नयी ! सरे, " सालगा विपरीता राहासा मबन्ति " # बयारे २-४ पदीसो आटसी भविषा फेलावी शके छे त्यारे मस्मग्रहना त्तस्यायम भूसयी साकृळ व्याकृळधयेला माचार्यो सास्रत शस बनावी दे बरे हु नियानो शिकार करवामा फतेइ पामे ए

*'सासरा' ए शब्दने उद्घटावी बांबीए तो 'राससा' पाय छे तेमन 'सासरा' एटछे पंडीत ननो 'बिपरीता' एटछे आडा फाटेत्सारे 'रासम' मां शुं आश्चर्य ! परन्तु जेओने अंतर्चक्षु छे तेमने विचार करवा दो अने पापलाइमां ध-केली देनार सामे मानासिक टक्कर लेवा दो.

(83-55-53-58)

'द्रव्य'-'क्षेत्र'-'काळ' अने 'माव'

—कइ रकमनो अमुक पदार्थ छे अथवा कइ जातनुं काम करवानुं छे
ते विचारचुं ते 'द्रव्य'थी विचार कर्यो कहेवायः कया देशनो पदार्थ छे अगर कया
देशमां अमुक काम करवानुं छे ते विचारचुं ते 'क्षेत्र 'थी विचार कर्यों कहेवायः केवा वस्त्तमां चनेली वस्तु छ अगर केवा जमानामां—केवा भसंग (оссазыоп) मां

(७२) मकरण 8 थ्रै-पचीस द्रष्टि अमुक काम करवानुं छे ते विचारतं वे ' काळ ' वी विचार कवीं कहेवाय: अने अमुक्त पद्ध अथवा कार्यथी शु स्रामासाय-श्र परिणाम यद्ये ए विचारतं वे 'भाव'वी विधार कर्यो कहेबाय स्पष्टीकरणः--- एक माणस जापानर्गा कापहनी बेपार करना जना तैयार बया वेणे (१) त्रव्यधी विचार्च के, कावहमी वे पार केवी करेबाय ! (२) क्षेत्रची विचार्य के श्रापान देखमां कापदना वेपार माटे केंचुं होस (field)छे-स्पर्धा केंबी छे-सपत केवी छे (१) 'काळ'यी विचार क्यों के, इपणां बेपार करवायी कशिया

जापाननी संद्राहना कारणधी कोई सकट

तो नाई पड ? (४) भावथी विचार कर्यों के आ वेपार एकंदरे छामकारक थाय तेम छे के केम ?

(१५-१६-१७-१८) 'प्रत्यक्ष,' 'अनुमा न,' 'उपमा'अने 'आगम' प्रमाण.

(१) आंखथी रूप जाणवुं,कानथी श-द्र जाणवो, नाकथी वास जाणवी, जी-भथी रस जाणवो. त्वचाथी फरस जाण-वो; ए " प्रत्यक्ष प्रमाण. "; जेमके सूर्यनुं किरण जोइने कहे के सूर्य उग्यो.

(२) अनुमान अथवा कल्पनाथी घा-रवुं ते "अनुमान प्रमाण''. जेमके कोइ पु-रुपने भीतना अंतरे 'चौद पुर्व ' नो अभ्यास करतां सांभळीए ते उपरथे (७१) प्रकरण ४ प्-पनीत द्रष्टि सञ्जान करीए के ते धुनीराम होगा लोडए; वरसाइनी टंडी हवा अने सास में म आववाधी अनुयान करीए के १६ कोण नी अदरमां क्योंद्रक बरसाद पढे छे; प सर्व ''अनुमान ममाण '' (१) 'तजान समुद्र मेंचू छे','पाणी अ

पमा ममाण "
(४) शास्त्रता ममाण (शासी) ते "बा गम ममाण"; जेमके सूर्य जमीतगी ८०० योजन सपो छे, मरससम ५२ रह योजन

युत जेशुं छे', छात तुपं जेवी छे; ए "च

नो छे, बंदुद्वीप स्नास योगनने छे अही द्वीप ४५ सास योजननो छे, तेमा ११२ बद्ध अने ११२ सूर्य छे; ए सुब "आगम मयाण. " तेयां पण २ भेद छे:—

' लौकिक आगम प्रमाण ' अने ' लो-कोत्तर आगम प्रमाण ' ' त्रिकोणना त्रण खुणा यळीने वे काटखुणानी वरावर छे " एबुं कहेबुं ते सूमिति शास के जे छै।किक शा-म्त्र छे तेनुं प्रमाण कहेवाय. "समकित वि-ना मोक्ष नथी "एम कहें हुं ते जैनसूत्र हुं वान्य छे अने जैन स्नृतने 'लोकोत्तर शास्त्र कहेवाय छे बाटे ए वाक्य " लोकोत्तर आगम प्रमाण '' कहेवाय

(१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५) सात नय.

१. '' नैगम नय '',--अंशश्राहीपणुं;

'(७६) मकस्य ४ धूं-पचीस द्रष्टि भेमके -- समद्राष्ट्र शीवने सिद्ध मानवो, अथवा चौद्रमा गुणस्याने वर्तता सापुन संसारी कहेगो से 'नेगम नय ' नी मान्य-ता बामानुं काम छे श्रावक द्याछ होब प सिद्धांत उपरथी, कोइ स्त्रीस्त्रीयां नरा वया भोइने वेने 'नैगमनप'माळो मानस आवक करे लगह बणना मोहयू, इसी पक ज बार पारुपो हेने 'नेगमनम' ना भाषारे कहे के ' लुगई क्यु ' एवीम री-

ते छगई बणाइ रहेवा आब्धुं होय मार्च प्रका तार मोझा होय तेने 'नैगम नय'

माळो करे के छगद्रं पर्णानधी '

२ "संप्रदनय":- संप्रद—सभुरूपयी बोसई ते; नेमके -- दश मण सामाधिक करता होय तेने 'संग्रहनय' वाळो एक ज सामायिक कहे तेमज, घणा जणाना क् पिया एकठा करी दानशाळा मांडी होय पण 'संग्रहनय' दृष्टिवाळो कहे के एक ज दातार छे.

३ "व्यवहार नय " -- ' नैगम ' अने 'व्यवहार' नयमां भिन्नता एटली ज छे के. कोइ माणस सामायिक करवा घेरथी नी-कळे तेनी पास पथरणुं जोइने 'नैगमनय'नी दृष्टिवाळो कहे के आ सामायिकवाळो पु-रुप छे; अने 'व्यवहारनय नी द्यव्टिवा-ळा तो ते माणसने सामायिकना पाठनो उ-च्चार करतां सांभळे त्यारे ज एम कहे वन्ने पाह्य चेष्टा उपरथी ज विचार वांधे छे.

'(७६) मकरण ४ पूं-पषीस द्रष्टि जेमके --- समझाँट जीवने सिद्ध मानवी, अथवा भीदमा ग्रुणस्याने पर्वता माधुन संसारी कहेगों है 'नेगम नम ' नी मान्य ता बाम्मर्न काम छे आवस दयाखु होय ए सिद्धांत प्रथा, कोइ स्त्रीस्तीमां अस दया बोहने देने 'नैगमनय'वाको मानस आवक करे हागई मणना मोडपं. हमी

एक व दार नारूयो देने ' नैगमनय' मा आधारे कहे के ' लगहूं बच्यू ' एवीम री ते छगई पणाइ शहेबा भाष्ट्र होय मा^ब पुक्रज वार भोषा होय हेने 'नैगम नम'

वाळो कहे के छनद्वं बण्युनगी '

२. "सप्रदनय":- सग्रह---समुख्ययधी बोसपुं ते; नेमको--द्य जण शामापिक

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां वेठा होय त्यारे, ए गुणने लड्ने, तेने भव्दनयनी दिष्टवा-को माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावेः पण ज्यारे इन्द्र शत्रुने जीतवायां होय खारे, ए गुणने लइने, 'पुरंदर' शब्दथी बोलावे:तेम-ज बळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय सारे, ते गुणने लड़ने, 'ग्रचीपति ' शब्द-थी वोलावे शब्दनयवाळानी हाष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समिमिरह' नयनी दिण्टवाको याण-स गुण अने िंठण जोइने वात करे. जेयके सादी, अंगवस्त, कपडुं, सादछो ए विगेरे नामएक ज चीजनां छे. पण ते चीजस्तीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

(७८) मकरण ४ श्रू-यपीस इप्टि पण बाह्न चेप्टामां पण ' नेगमनय' शिट बाब्य करतां 'क्यवदारनय ' इप्टिबामें माणस वशारे साधी करे छे ४ " ऋजुसूत्रनय":—आ **श**स्टिबाओ

माणस पर्वमान काम्न्ती ज वात माने

ह्यात'-कोइ गाणस समायिकमां हीय प ण वेतु मन वेपारमां दोहतु होय वो ऋजुर्ध

भ'नयशाळी एज बलत शात करता करेके.

"भमुक गाणम वेपारमा छे—नेपारी छे" ५ ६ ७" शब्दनय ", "समभिर्द्ध

नय"अने"एवभून नय "

ए त्रण नयशाचा माणस माम,द्रष्य अने

स्यापना निक्षेपने अष्ट्यु(अवस्तु) मानछ

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां वेठा होय त्यारे, ए गुणने छइने, तेने शब्दनयनी दृष्टिवा-को माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावे; पण ज्यारे इन्द्र शत्रुने जीतवायां होय खारे, ए गुणने लइने,'पुरंदर' शब्दथी बोलावे;तेम-ज बळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय सारे, ते गणने लइने, 'ध्रचीपति ' शब्द-थी बोलावे शब्दनयवाळानी दृष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समिक्ह्र'नयनी दिष्टवाको घाण-स गुण अने िंठग जोइने वात करे. जेमके सादी, अंगवस्त, कपडुं, सादले ए विगेरे नामएक ज चीजनां छे.पण ते चीजस्तीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

(< °) प्रकरण ४ धुं--पश्रीम द्रवि या सीसिंग छे ए कारणवी तेना कपरा ने 'सममिरुष्ट्र' नयबाओ माणस 'साही'क हें [कारणके साढी पण सीकिंग छे] परन पद्म के सादछो न को (१)'एवम्बनम्'बाळी 'नार्यना उपयोग वरफ ज राष्टि राखे छे जेमके,दाणा नो सनारो माणस ' सामोमी' ' वेगोमी' 'मणोमी' ए शस्त्रोने पकडी राखे छे, पन दाणा के भानदाने पकडी राखवी नगी; एने तो केउमी पारण यह तेर्नुज काम छे 🗫 प्रमाणे पचीस बोक्ष' अधवा'द्यास्ट' मा गॅमिर तत्वतानमां मारामी मूम व इ जना संभव छे। माटे विद्वालानी मृत्य सूचनदा तो नवी आवृत्तिमां सुपारीज

हे. हवे आपणे ए 'पचीस दृष्टि' ' इत्न ' उपर लगाडीशुं.

ज्ञान.

(१) निश्चय ज्ञान-सम्यक्त्व सहित अंतरंग (अभ्यंतर) भावे यथातथ्य जीवा-दिकनु'जाणपणुं' ते 'निश्चयज्ञान'.

र (२) व्यवहार ज्ञान-गुण सहित प-ढार्थनुं यथातथ्य 'मकाशवुं' ते ' शुद्धभाव व्यवहार ज्ञान'.

(३)द्रव्य ज्ञान-विना समिकत, शुद्ध सर्देहणा रहित, मिथ्यात्वीनु जे ज्ञान ते 'द्रव्यज्ञान'; तेमज, आ लोकमां कीर्त्ति म-्लवा अर्थे ज्ञान भणवुं ते पण 'द्रव्यज्ञान'.

(४)भावज्ञान-जीन आज्ञा अने शुद्ध सर्दहणा सहित एकांत निर्जराने अर्थे ज्ञान

(८२) प्रकरण ४ ५ पचीस एडि भण्यं ते 'मध्यज्ञान' (५) भविषेष ज्ञान-समुख्ये (प्राप्त विभाग बनाच्या क्रिमाय) (६) विशेष ज्ञान--- ज्ञानना भाग-विमागादिनं खाम नाणपणं (७) नामनिसेप शान-नीइ प्रा^च अगर पदार्थन 'कान पर्व नाम आपर्व है

(८) स्थापना निसर्थे क्रान—क्षानर्थे स्थापना परवी ते (९) द्रष्य निसर्थे क्रान—छलेकां पुस्तं पानां (९०) माच निसपकान-मन्युं तत्व है (११) द्रव्यक्षान-पडट्रस्थरूने प्याहर्ष्य

े चर्मास्त्रकाय २ भगमास्तिकार आकास्त्रिकाय ४ पृष्टगशास्त्रिकाय ५

बरुप जाणनु तथा परुपन्नं ते

(१२) क्षेत्र ज्ञान-सर्व क्षेत्रनुं (अथीत् चौदराजलोक ''नुं) यथातथ्य स्वरूप गणकु ते क्षेत्रज्ञान (एमां भूगोळ-सगोळा-देनो समावेश थाय छे)

(१३) काल ज्ञान—वर्तम.न, भृत,भवि
प्रप् प्रण काल संवंधी ज्ञान [अमुक ऋतुमां अमुक बनाव वने, लडाइना कालमां
अने दुष्कालमां अमुक बनाव वने, भूतकालमां आम वन्युं हतुं माटे भविष्यमा आम
वनने, विगेरे पकारनु ज्ञान]

जीवास्तिकाय, ६ काळद्रव्यः ए 'परद्रव्य ' Natter, Motion, Attraction धिगेरे स-र्वनी समञ्जनी आ पट्टव्यना विस्तारमां आवे।

(८४) मकरण ४ ई-पथीस ही (१४) भाषकान-सत्त भाषनु + कर्न (१५-१६-१७-१८)मस्यक्ष-अनुमार चपमा अने भागम ममाण क्राननी 💔 पाछळ ससाह गर्या छ (१९) नैगमनय ममाणे झान-र्भशमात्र द्वानने पण द्वान कहे अने प्री साथे याच 'नैगमनय' दृष्टिवाळा विचार्

गानदीआसी, नयनत्व-छकायना बेल कें एकाद थोकडी पाने करनार सामुने के दें काद थोतेसी थोपडी सणनार संसारीने 'शानी कहें छैं; कारण के तेजी अरूड दिना डोवाधी अरूडानने डान साने छैं, समीवना साब-बकी, गांव रस फर्स्ट

जीवनो साद 'उपयोग' परछे के बान दर्र स चारित्र तप, पीम, सुल-दुःल (२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः— चि प्रकार्नुं ज्ञान छे तोपण समुच्चये एक ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः— । ह्या ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ डोळ-। ह्या साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण— हरानना अगुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा ।। टकना रागोटा संभळावे त्यारे 'व्यवहार'-शी दिष्टवाळी पषदा तेने ज्ञानी माने

(२२) ऋजुसूत्रनय प्रमाणे ज्ञान—
हान पांच प्रकारनु छे; जे पैकी, छद्गस्थने चार
हान होय परन्तु 'ऋजुसूत्र'नय वाळो माणस,
बात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी
(सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(८४) मकरण ४ च्च-पश्चीस शीः (१४) मामज्ञान—सर्व भावनुं • अम् (१५-१६-१७-१८)पस्पल-अनुमान चपमा अने आगम ममाण ज्ञाननां हर्षा पाछळ ससाह गर्या छे (१९) मैगमनय प्रमाणे सान~ अंशमात्र झानने पण झान करे अने ए ही माबे मात्र जैगमनयः रहिवाका विचार गावदीयाओ, नवनत्य-छदायना देल है

पकार थोकरो पाठे करनार साधुने के दे काद थोकरो पाठे करनार साधुने के दे काद थोकरो पोपदी मणनार संसारिंदे कानी करे छे; कारण के ठीभे अराई दिना होवापी सरुरहाने हान माने छे मजीवना साव-वर्ज, तथ रस फर्स्स

जैवनो माब 'उपग्राग' परस्त के बान वर्षे न मारिक तप, घीर्य, मुल-बुन्क (२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः— श्रांच प्रकारनुं ज्ञान छे तोषण समुचये एक त ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः—

शाह्य ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ टोळशाह्य साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण—

किरानना अगुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा

शाहकना रागोटा संभठावे त्यारे 'व्यवहार'
हेमी दृष्टिवाळी प्रषदा तेने ज्ञानी माने.

(२२) ऋजु सुत्रनय प्रमाणे ज्ञान— त्रज्ञान पांच प्रकारनुं छे; जे पैकी, छद्मस्थने चार बेबान होय परन्तु 'ऋजुसूत्र'नय वाळो माणस, अवात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी (सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(८३) प्रकरण ४-छ-पत्रीत दृष्टि (२३) प्रकात्मा प्रमाण द्वान'-सम्यक्ता सदित ९ वत्वतु द्वान वे

(ट) समीभरष्टनय प्रमाणे झान सम्यक्त्य सहित ज्ञान हे य अने परगुणव

विरक्तपणु होय तेना च ज्ञानन भानयपार्व भान माने (- ২) एराभूतनय भमाणे क्षान-

केवळ ज्ञानने म जान कहेगय

प्रकरण ५ मुं

सम्यक्तना ६७ बोल.

एम हैं रयक्तव मुंचीज छे अने तेना ^{बि}क्क क्षेट्रें भेद केटला छे त विरोधे आपणे जा-र गया हवे आपणे समिकती जीवना छक्षण यु, ते बु बु करे छे अने बुं बु नथी करतो, कड कड जातना अस्प दोषो तेने मध्ये झ-र्भुमी रह्या छे, इत्यादि विचार दारीशु चार सर्दहणा.

Ö

[१] " परमार्थ संस्तव -प्तमिक-

(८८) प्रकारण ५ मु---६७ बोस वी नीव होय ते नवतस्वादिनो परमा (यथावध्य द्वान) जाणवानी उद्यम करे [२] "परमार्थ ब्रातसेवन ":-संवक्तिवी जीव होय ते परमार्थ जाणना पुरुपनी मेबामक्ति करे [२] "व्यापषदर्शनवजर्न 🕰

समिकिनी सीव होय ते समक्रित पास्या प की पहेला अर्थात् प्रदेशा (पहबाह) में सोबतथी दूर रहे (४) "कुटर्शन वर्जन साम किदी बीब होय ते बीवराम मार्ग मिकामना

नीमा पार्गीनो (निकट) सहवास घर्मे। अ यात् अस्पपर्यनां सिद्धांती-स्पानको विगेरे

नो विशेष सहवास न राखे * * दरेक धर्मना लोकोमा आवी एक सा-ची-न्यायवंत सलाहने ताणीखेची, मारीमच-रडी उभ्रो अर्थ लेवानो रीवाज छे ब्राह्मणी कहे छे के, "एक तरफ भयकर आग्ने होय, योजी तरफ उची दीवाल होय, त्रीजी तरफ अदमस्त हाथी आवतो होय अने चोथी तरफ श्रावकनो अपासरो होय तो हाथी के आग्ने-नी दीसा तरफ जबु वहेत्र छे, पण अपास राना पगथीआना स्पर्शथी पगने अपवित्र त करवा. " वीजा धर्मीवाळा कहे छे के, 'अमुक धर्मनो उपदेश थतो होय त्या यइने जबुं पहे तो कानमां आंगळी नाखवी ! अने जैनो एण अन्य धर्मी माटे एम ज बोले छे, एटलूं ज े निह एण आवां शास्त्रवचनोने मारी मचर-डी उंघो अर्थ करी तेने पुरावा तरीके रज्ञ करे छे। पण मारा समजवा प्रमाणे प पक्षा-

(१०) मकरण-८ मु--६७ वास

प्रण जिम्

(१) "सुन्नमा — मात दिवसना
पक्षी भक्षत्रमा निकान दे मने ना
एम जणाय छ के, स्थयमना निकानो बांच्या
था उसे स्थापना मानो निकान धांच्या
था उसे स्थापना अस्म माना
था स्था पता का उसे स्थापना माना

पण 'मकामा हतान' मां कहे हो ह'मन्ये वर्ग हातिहारूच एव हता " इच्छे पेषु उनके रागि तोषमा " बंध - हे प्रमा में हारिहर बार्गि वर्षे वर्ष - हे प्रमा में हारिहर बार्गि वर्षे उनके हाराया माह प्रमा हुए। हो हो हो हो

नतम जायाचा माह इत्रय तारामा समीच या म के स्वार जा था शास्त्रयणन छाड़ी सम जबु मिटि, भन्न बन् समझ्या जीहरू के भार स्वयमी पीजान करी क्यी समन होता इत्यप र सम्बद्धमंत्रा सहयासची से सार . भुष्याने जेन भीजननी एदि होए, तेम सन्

पटी जाय छ. एटमा गाटे स्वधर्मना बनुभव वनरना माणपं अत्य वर्षनी सावन न करवी जाए, धने रामानती जीनना पण घुँणा मेट होताथी फेटणक लनकिनी चीत आके रव-वर्मने जाणे छ तोजण नेना परमार्थ वरावर ज़ानमा न में नेथी अस्य वर्ण्या गाह महबास न ज करे, फारण के गादा अने लीगा बम्बतना लागनधी कदाच समीकतनं धको लागे. ण समारने लद्दन सहीसलामत बाजुए रहेवा मुचना राज आ आहेज हो मास नो आधिन मन था छे; एछी नो केबळी गम्य था मुचनामां ण्यल् गामित रहे छे के, धर्महान बाळपण-'थी ज अवश्य आपद्य, के जेबी आगळ जता कोडनो सहवास तेना मन उपर खोटी असर करी शके नहि,--प्रकाशक.

(• २) मकरण ५ मूँ -- ६७ बीस मिकती जीवने धर्मीपदेश-शासन्त्रना सा

(२) "धर्मराग" -- जुनान-सुदर बद्धर भने सुन्नी पुरुपने एसी म कुमारिका वरफ नेनी राग होय एटडो राग समकिवी नीयने पर्म विषे(पर्म साहरपाने विष) होय

मञ्जानी रुचि होय

(३) "वेयावृत्य :—समाध्ती भीव देव-गुरुनी सेवामक्तिमां प्रमाद न कर दश विनय

समकिती जीव अरिहत, सिद्ध, आचा

र्थे, उपारपाय स्वित्र, अकुष भवता एक स्विवर १ प्रकारता छे -(१) ६ व रचनी उपरमा साधु ते 'बयस्यिवर' (२) , गुरुना शिष्यो, गण अथषा घणा आचार्योना शिष्यो, संघ, साधर्मी∗तथा क्रियावंत : ए १० नो विनय करे.

विनय चार रीते थायः - वहु भक्ति-भाव वताववाथी,कीर्ति करवाथी,मान देवा-ूथी अने त्रीस प्रकारनी आसातना टाळवाथी.

त्रण शुद्धि 👯

समिकती जीव होय ते मन-वचन-काया, ए त्रण योगने शुद्ध प्रवर्तावे.

२० वरसनीदीक्षावाळा साधुते 'प्रव्रज्यास्थिवर'
(३) ठाणागजी-समवायांगजी जाणनारा
ते 'सूत्रस्थिवर'

*साधर्मीनो विनय एटले श्रावक,श्रावकनो विनय करे; साधु, साधुनो विनय करे जरथोस्थी अने सीस्ती धर्ममां पण ए ३ (९२) मकरण ५¹<u>म</u>ुं—६७ योग

पाच दुपण राहतपणु -(१) "शका ":--समस्तिवा ची

पोवामां ज्ञाननी न्यूनतान सीघे नीवरा घाक्यनो परमार्थ न समजी सके सेवी का सिद्धांतमां श्वका लागे नहि पण बुद्धि फ़ीरने अगर समय पुरपोने पूछी धन्नयरहित वाय

(२) "काक्षा" (कला),—सम् ग्रुबि मनस्नी (1! ught) 'ग्रहस्ती' (N 11) सने फुनस्ती (Deed) ए वर्ग

शहूची समजावी छ मा पाच दुपण मतिचार छ भतिचार व भरादाय छ। यमा महावनभंग जेरली दार नधा

सम्यक्तवं. (६५)

किती जीव एम कदी न समजे के अमुक धर्ममा पण देवलोकनी वातो छे अगर च-मत्कार छे माटे ते धर्म पण साचो छे; अगर 'सर्व धर्भ सरखा ' छे एम गोळ-खोळ एक समान गणवानुं काम समिकती जीव न करे. (३) "विचिकित्सा-" (विति— शिच्छा):-समिक्ती जीव धर्मना फलनो संदेह न राखे; जेम के, हुं धर्म तो करुं छुं पण तेनुं फळ यने मळशे के ते उद्यम सात्र निष्फळ ज निवडशे? अगर, अमुक्रुमाणस वणो धर्मी छे छतां महादुःखी छे तो 'ध-र्भेथी सुख मळे छे 'ए वात केम मनाय? एवी रीते समकिती जीव कडी वोले नहि. कारण के आ जीवने एर्चना भवोमां करेलां कमीनां

(९६) प्रकरण ६ मु — ६७ बोत पण सारां-नरसां फळ मोगवर्षा पट है वो आ भवमां भोगवाता दुःस ते की आ भवनो धर्म इत्यनुं फळ नथी (४) "अन्य नीर्थिक प्रशसा"। (परपापदी प्रशंसा) समक्रिती जीव होय है

(५) अन्य तीर्थिक परिचय " (परपापेशमयसे) समिति ती मीत होप व सम्बद्धा हो के जया त्य तेता दुजार्य मार गुणांण प्रचनी महासा करकारा पर गुणांण ज हाम समर पर अम्बर्गार्थकर्म

यकार सारा गुज हाय पण द्यानी उत्तर्भ गुज क्षेत्र शास्त्रमा ज वस्तित्या उपदृश्याणे न क्षेत्रमा एक एका स्थान न हाराधा मण्ड

अन्यतीर्थीनां धर्मकार्योमी मशंता करे निर्ने

अन्यतीर्थिक जनोथी झाझो सहवास

तीर्थिक माणस अलवन प्रशंसा करवा योग्य तो निह ज. 'होरेस' साचुं कहे छे के -"Commend not till a man is thoroughly known A inscil praised you make his faults your own." HORACE.

पाछळ 'कुटरीनवर्जन' ए वोल आवी गयो तेमां अन्यधर्मना सिद्धांतो-स्थानको विगेरेना सहवास संबंधी कध्य अने आ बेलिमां पिद्धांतोने माननारा अन्यतीर्थिक प्राणीथोना सहवास संबंधमां कहे छे. एमा अन्यधर्मी साथ कन्याव्यवहार आदि गाढा सवध्रमां न जो। जाया मलामण छे.कदाग्रह छोडी विचार करनारने आ सलाहनु सत्य आपोधापज समजाहो.

'सापत तेवी असर' ए जगजाहरे कहेवत

(९८) प्रकरण ५ मु—६७ बोन करे नहि, अर्थाद् लग्नादि सदय जाहे नी पाच भूपण (१) जैन मार्ग अन पमनी मक्ति कर मानानिनी भक्ति फरे

छ साहरपयुसना राजा 'शयोगिसीमल' प् ज्यार पररा^र नामना फिलासुफ वर म नंडया माणमः माकस्य स्पार त**ि** कराती साक्षलपुंक — Îci noc ह vith Dionysin I I to the or the Vice ^{एउट} सदग्जन हम्ज साथे रहवामां उट

पाया छ तरहो प्रेरोने हाय।निर्माम मा र रहवामां कायही छे " मीत्रोमां वर यत प भगूक माणसता सोपता 🕬

उत्रहायसम्बद्धं कहीश के ते अहा

माणम क्या छ," शिश भागळ धाउ छ

सम्यक्त. (९९)

(२) अरिहंत देव (वर्तमान काळे श्री महाविदेह क्षेत्रे) विचरे छे तेमनी भक्ति करे अर्थात् मन-वचनथी तेमना गुणग्राम करे अने कायाथी नमस्कार करे

(३) साधु-साध्वी तथा साधर्मीनी प्रोग्य अभक्ति करे

भन्ने सहवास ए जाथुनो के लांवा वाल-तनी सोवतना अर्थमां समजवो. श्रधारोजगार अर्थे. सामाने उपदेश करवा अर्थे आदि हेतुने लड़ने अन्यतीर्थिकनो परिचय छेक त्यास्य नथी. इसेश हेतु तरफ द्राष्ट्रि रास्त्रधी.

हमेश हेनु तरफ द्राप्टि राम्नची।
साधु साध्वीने शाहासादि आपे, विगेरे अने
साधु साध्वीने शाहासादि आपे, विगेरे अने
साधु साध्वीने शाहासादि आपे, विगेरे अने
साध्यां शावकन जोड़ने हपीत थह मानपान,
शाहरस्तरकार आपे मोजनादिथी प्रसन्न करे
काड़ कामकाज होय नो एठे अने पोताथी
वन तेम होय तो ने करी आपे, विगेरे.

(४) धर्मथी अजाण माणीने अने द्वर्शनना अनुयायीमीने पर्म सममावे प रजन बेठा होय स्वां युक्तियी धर्म सर्प बात छेडे अने सौने बर्भरागी बनाबे (८)धर्म पामेस्रो माणस धर्मधी इगर ∗१९५६ मा दुष्काळमां घणाय मुख रता छाकाने मुक्तिफोज सामधी भोड़पा कीस्ती क्षेकोप महद वापीने पाताना पं^{दा} की घातता देवे उत्तो से धर्मना सोकोप वीवारा सावारीची धर्म छोडमारने वर्ग [।] सरमी स्हायता करी होत तो तेमनी ^ह बगडत नहि जन निराधीत फड़ % विभवासम जैन सताधासम १ विगरे 🗗 सुची नहि स्थपाय स्था सुची हालना 🤻

(समुख्यये) वा पांचमा मृपत ? पगरमा है यवा भाराप ठरूमा माधेची उत्तरशे नहि है कसास के जेमने घर अस्तना संहार मर्द्

(१००) प्रकरण ५ मुं — ६७ बीम

प तेने ज्ञान वहें अने जरुर पहें तो द्रव्या-कनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

तेमने शीरापुरी सवराववा माटे नोकारसी, च्छ, ज्ञाति भोजन आदि करनार जैनो अने यां जरुर न होय त्यां एक उपर चार बीजां हां-अपासरा कराववामां या वरघोडा अने िक्षा प्रसंगमां हजारो रुपीया खर्ववानां मोटाइ राननारा जैनो, जैन शाशनरे कया भृषण'-वि शोभावाय ते जाणता ज नधी, यगर जीव-रियानु खरं चप ज समजना नथी। उपर कहे ^{बे} हा जूटा जूदा रस्ते जे द्रव्य खरचाय छे तिमांथी ५० टका बचावी जदा मूकीए तो पूर्वच बरसमां एवी सारी रकम उभी थाय र्क तेमांथी उपर कहेला आश्रमी स्थापी शका-त्री य अने 'जैन पुस्तकालयों' विनेरे पण स्थापी (२००) प्रकरण ५ धुं — ६७ बेस्स
(४) धर्मणी अझाण प्राणीने अने च
इ्ट्यनना अनुपायश्योने धर्म समझावे चारजण वेटा होय रवा युक्तियी धर्म सर्पणी
बात छेडे अने सीने बर्धरागी बनावे
(६) धर्म पानेस्टों माणस धर्मणी व्यातीन

१९५६ ना बुष्काळमा घणार मुख म रता शेकाने मुक्तिकाज नामधी मोळवात कीस्ती शेकार मन्द्र माणीने पाताना धम्म सीमा इता हुक जी ते घर्मना दोकोर त बीचारा सावारीधी धम् छोडमारन बचत

सार्या सहायहा करी होत हो होता में व बगहत नहि जैन निराभीत एक , जन बिश्वासन जैन सनायासम हिरोर जूर्य सुधी नहि स्थापा न्या सुधी हारना जैन (समुख्य) सा पांचमा भूष्य प्राप्ता है प्रेमी साराय तनना साधेपी उत्तरण नहि स

क जमने घर मन्त्रसा मंद्रार भरप्र

होय तेने ज्ञान वहें अने जरुर पहें तो द्रव्या-दिकनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

छे तेमने शीरापुरी सवराववा माटे नोकारसी, गच्छ, झाति भोजन आदि करनार जैनो अने ज्यां जरुरन होय त्यां एक उपर चार बीजां देशां-अपासरा कराववामां या वरघोडा अने दीक्षा प्रसंगमां हुजारी रुपीआ खर्चेत्रामां मीटाइ माननारा जैनो, जैन शाशनने कया भूषण'-थी शोभावाय ते जागता ज नधी,अगर जीव-दयानु खरुं रुप ज समजना नथी। उपर कहे ला जुड़ा जुड़ा रस्ते जे द्रव्य खरचाप छे तेमांथी ५० टका बचावी जदा मुकीए तो पांच वरसमां एवी सारी रकम उभी थाय र्क तेमांथी उपर कहेला आश्रमो स्थापी शका-य अने 'जैन पुस्तकालयो' विनेरे पण स्थापी शकाय.-प्रकाशक.

(१०२) प्रकर्ग ६ मु— ३७ मोल

पाच लक्षण दर्भणमां नेम मा स्पष्ट जीह श्रकाय छे. देन समक्ति। जीवर्षा 'पांच छक्तम ' स्मष्ट

देखाय छे (१) श्रम (२) सर्वेग; (३) निर्पंग; (४) अनुकंपा अने (५) आस्पा (१)"शम" अथवा "उपशम" ---

समकिनी जीव श्रीन मक ते राखे (काघी ज़ीते), कोइनुं पुर्व जिनमें नहि अने आर्व रीद्र ध्यान ध्याचे नाई

(२) "सवेग "-पुरुवसनो स्वमाव पुराखुं अने गळशु एको छे एम समजी पुत्

गसीक वस्तुभो उपरवी मुख्यभाव (मोह भाष) उतारी, पैक एटले कादनमां जन्मेलुं 'पंकन' ५टले कमळ जेवी रीते क दवधी अने आसपासना जळधी अद्धर रहे छे तेवी रीते दुनियामां हे वा छतां अंतरात्मान दु-निआधी दृर राखे. कमळ जेम सूर्य तरफ ज द्रिश्च राखे तेम ते समिकती जीव मात्र मोक्ष तरफ ज दृष्टि राखे

(३) " निर्वेग ":--पूर्व सुकृत्यथी स-घळी इन्द्रिओ परिपूर्ण पामवा छतां ते इन्द्रिओने तेमना जुदा जुटा विषयोमां छुट्य न थवा देतां तेमनो निग्रह करी तेमने धर्म-मार्गे पवर्त्तावे

् (४) "अनुकंपा ":-- 'आत्मवत् सर्व भूतानि' एव जाणीने छकायना* जीने।

^{*}छकाय -(१) पृथ्वीकाय (माटो-पथ्थर-रत्न·

(१०४) महरण ५ मुं — ६७ बोस जगर द्यामाच राखे

(५) " आस्या ":—समिकती भीव होय ते राग हेपादि र इत देव-गुरु-पर्म ए प्रण तत्व उपर गुद्ध भारमभाषयी श्रद्धा राखे

सार थियेर) (२)स्वकाच संघया पाणा करा परफार्माना पोरा पिगरे जागः (३) ते उकाव संघया स्रोतना पर त्रणात्मा सर्वस्थाना जीव छे तेमाँ मे पर एक साथ पोश्लोन राजरात जेवरा माणा करेता प्रकाराय पाजनता जीवरिया पण

समाय महि। (४) वाउराव सम्बा पावराना जाय ।) पनस्पनिकाव (फळ-फून प्रेन्सळ नेवान ! क्षम्याचनीता वरताना जरूने करा जोव वरतः क जील सन कावावाळा यहास्स्य जाव स्-मोकंड जवा जाय वरतः क नाव-जान मने कावावाळा 'से हरिन्नय' आह

अभरा तीर कीती जवा आप वरके ह

आउ प्रकारे प्रभावक.

समिकती जीव पोते जे मार्ग सुखी थयो ते मार्ग अन्यजनोने बतावबानी पोतानी फरज समजे ए मार्ग पहेळी द्रष्टिए छो-कांन अकारो (अप्रिय) जणाय तो अमुक 'अमुक युक्तिथी नेमने ते गार्गनो शोख छ-गाडे एवा समिकती जीव जैन वर्षना 'म-आंख-नाक-जीव अने कायाबाळा 'चौर-निद्रय' जोब, अने मतुष्य-देवता-तिर्यच तथा नारकी प चार प्रकारना 'पचोन्डिय' जीव. ए चारेमां बळी घणा भेद छे. निर्यचमाना केटलाक जळमा चालनारा, केटलाक जमीन पर चालनारा, केटलाक पेटे चालनारा, अने केटलाक भुजधी चालनारा तथा केटलाक पां सयी उइनारा होय छे.

(१०६) मकरण ५ में —६७ बोल मावक' कहेवाय छे मभावक ८ प्रकारना होय छे, जेनायी के रीवे ममापना यह शक ते रीते करे (१) "प्रवचनी" प्रभावक होय ते घणां सुत्रभिकांतनु जाणवणुं करीने जैनमाग वीपाने (२) "धर्मकथी" प्रभावक होव ते उत्तम दीलियी-मिय स्वरयी-भयेगी म

रपुर पर्मकया कहीने लोकोने पर्म पमाहे अन ए रीत जनमार्ग दीपाचे (3) "वादी ' प्रभावक होव त न्यायपुर शान्त थित्ते बाट-चवा करीने जन पमनी उत्तमना सर्वमान्य करावे अन

ए ममाण जनमार्ग दीपाय

(४) "ने मित्तिक" प्रभावक हो-य ते नि मित ज्ञास्त्र जाणे, निश्च गेळकी तेनो उपयोग, ज्यारे धर्म उपर धाड पडती होय त्यारे अगर एवा कोइ खास कारणे (अपनाद तरीके) वै नी इच्छा वगर, मानकी तिंनी इ-इच्छा पगर, भद्रवाह स्वामी अने कार्तिक गेठनी माफक, करे अने ए रीते जीन मार्ग दीपावे.

(५) "तपस्त्री" प्रभावक होय ते द्रव्य अगर मान आदिनी इच्छा रहित तप करीने धर्म दीपावे

(६) "विद्यावान" प्रभावक

⁴ होय ते अनेक प्रकारनी विद्याओं∗ भणीने

कोइ कई छेके, विद्या एटले चमत्कारी
 विद्या, देव-देवीने साधवानी विद्या, पूण में

(१०८) मकरच ५ 🕁 — १७ कोस नैनवर्म दीपाचे (रसायण-यम-समोन -भूतळ-मुस्तर-इतिहास-स्याय -सर्व-का यदा बिगेरे फीस्तीने से झान मैन सिद्धां

वोनी पुढ़ीयां साग्र पांड

(७) " मसिद्ध त्रत छहने जैन मार्गन धोमापे तेनो समावेश कोचा प्रकारमा करी वृधिमी

हावायी विद्या परमे विविध साम य संघ ज मने बचारे पसन छे. निचा एटले Science य हाँ जमत्कारी विद्या नवी। वसी तनावडे जो जैन नियाताने देको मळी शकतो होय ती. ते श्रुं वसणी धमत्कारी नथीं। मा जमानामी विद्या (Science) ना सम्यासनी समझ कता ज्यां सभी जैनो जुनानीन धमशान आधा

(८), "काव्य शक्ति वडे धमेबोधने विविध खुवीओवाळी स्वाभाविक रसथी भरपुर कवितामां ग्रंथी धर्म सर्वने पियकर वनावे

षड् 'भावना'.

(१) "इदंसम्यक्त्वंधमस्यमूलम्" समिकती जीव एम 'भावना' भावे के, "आ सम्यक्तव छे ते धर्मरुषी हक्षनुं मूळ

पछी बिद्यासपन्न (Scientists) नहि यनाचे त्यां सुघी जीनवाष्ट्रयोनी खुवीओ घराबर समजवामा नहि ज आवे विद्या (Science) ना शत्रु अने मात्र शास्त्रोमा कहेलां गणित गोखवामां ज सर्व विद्यानो समावेश करी मि॰ ध्याभिमानमां तुटी पहता लोकी उपर ज्यां

(११०) प्रकारण ६ मु -- ६७ बोस छेत'' मुळबगर मांद संग न क्यांची दिन न सेंपेंकित किना धर्म ए नामनो ज संभव नथी "चेतन ते मीच्छयो नहि भुं थर्श वतधार" " साल बिहुणा सेवमाँ, हया पनाबी बादर् " (3)"इद सम्यक्तवधर्मस्यद्वारम् कः समिकती मीव द्वीय वे एम 'भाषना' माने के, "आ सम्यक्त छे से भगव्यी दीव्य नगरमां पसवानी दरवाजी छे "

द्विष्य नगरमा प्रस्ताना दरशाना छ । सुधी मर्च माधान रागी वहा। रहेपामा सा या गर्या तुर्धी घम नथा देग घधना स्थि ति सुराजान चन्द्र वंगदती स अधानी प्रान्ताना चमक्दी नगान समस्ति (३) "इदं सम्यक्तवं धर्मप्रतिष्ठानम् ":-समिकती जीव एम भावना' भावे के, "धर्मरुपी भव्य महेलनो
पायो समिकित छे " (मकाननो पायो जेम
वधार उंडो अने मजबुत तेम मकान वधारे
पाजवुत अने निर्भय वने छे)

(४) "इदं सम्यक्तं धर्मा-धारस्.":-समिकती जीव एम 'भावना' भाव के,"छापरं जेम थामछाना आधारे रह्य छे तेम धम समाकतना आधारे रह्योछे"

(५) "इदं सम्यक्तं घर्मस्य

भाजन्यु":- समकिती जीव एम'भावना' भाव के, '' जेम घीनुं भाजन तपेछ तेम

(११२) मकरण ५ मुं -- ६७ बोस पर्वेतुं भाजन समक्ति छे ' तपेछा पगर

> छ यत्ना (जयणा) (१) "आलाप '--सम्मिती जी-

(२) "सलाप' —समकिती जी

यी अने समक्रित बगर धर्म रही न शके (६) "इद सम्यक्त्व धर्मस्य नी

भिः"ः—समकिती जीव एम 'भावना भा ने के "धमरुपी रस्तने जाळन्नाने समिकन

ब्पी भदार मयना विमोरी (म्हां) छ "

य, बीमा सम्बन्धिः जीवने बोसायवानी

भिनय कर; जेमके 'आयो प्रधारी!'

बने विगेषे आदर सहित बोलापे, कुछळक्षेम

पुछे, इत्या द

(३) "दान ":—समिकिती जीवने अझ-जळ मुखवास-धन आदिनुं दान आपे. िआ श्रावके श्रावकती वात छे साधु-साधुने अगर साधु आवकने अगर श्रावक साधुने जूटा प्रकारनुं ढान आपे. ज्ञानदान पण दान ज छे]

(४) " प्रदान ":-विशेषे दान आपे.

(५) "वंदन ":—समिती जीवने चंदन-नगस्कार करे.

(६) "खणश्राम ":—समाकिती जी-वनी पूठ पाछळ तेनां वखाण करे *

 * केटलाक था छ यत्नानी तहन हुँ जूदोज सर्व करे छे. समकिती जीवना सवधमां ते वोल ने उतारतां मिध्यत्विना सर्वधमां उ-

(११४) मकरण ५ मु—६७ में स

छ 'आगार' (छ 'अंहिं।')

समकिती जीवे इमेश सद्वाखोनी स खाइ मुजब वर्तवाना खपी पर्ध लोइए परन्त्र कोइ बोइ मसगे तेने पोवानी ज परनी विरुद्ध कोई काम करवानी जठर पटे छे वे मसंगा

अने तेथे वस्तते केम विचारश त नीचे जजाब्य छेः---शारे थे; परके के मिण्याखीन मापनार, वि

दापे मावकार, वान, प्रवास बदन मने गण ग्राम न करवा मारा समजबा ग्रमाणे, धर्म बुद्धियी मिच्पाल्बीने 'भाषी, पंचारी' प्रम न कहर्ष मगर बान न देवे ते परावर के पण घर मायेका हरकोइ माणसम बाकाययो ज नहि भगर हरकोड़ धर्मना दु बीने दान क रमें नहि, पदा क्रीप विकल जैन हात्यातों ह पर्वश होय ज नहि

(१) " रायाभियोग ":-राजाना कारणे काइ वखत धर्माविरुद्ध कार्य करवानी जरुर पडे; एटले केराजाना वळात्कारथी के कायदायी कांइ करवु पडे अगर राजा संबंधी हरकोइ कारणथी पोतानी मरजी 'विरुद्ध पण अयोग्य करतुं पडे ते करती वख-ते समिकती जीव एम विचारे के, "हुं जो साधु होत तो मारे आ नापसंद काम करवानी फरज पडत नहि " आम अयोग्य काम क-रवाथो जो के दोपीत तो थवाय छे पण समिकतनो नाज यतो नथी.

(२) "गणाभियोग":-नात-जात-कु-दुंव आदिना आग्रहथी अगर तेमना कारणे चास्त्र विरुद्ध कार्य करनु पढे तो पण उपर मुजव

, १९६) प्रकरण ५ मुं — ६७ मोस्र च रूम करे क, "जो हु स कार्य नहि कर 🕶 सोको मने पीताना टोळामोधी 🛎 र १ ५ रुपे तया मार्च निरंपराधी कटंब

t को धरी: बळी मारी रागदपनी परि ने। भागते एम विचारी,न छुटक करती

, २ वर्ष उपरनी चेष्टा मान करीने

40 4

🕫 🔞 प्रलाभियोग'' अने ''देवा

.ग — एउन्डे बळगन पुरुपना के

(५) "युरु निग्रह ":—वडील-जन अर्थात् माता-पिता-शिक्षक-धर्मीपदे-शक विगरेना कारणथी कांइ अयोग्य क-रतुं पडे तो ते वखते पण उपर मुजव चि-तने -(द्रष्टांत:-गोशाली होंगी साधु छे, एम स्पष्ट जाणवा छतां तेने पाटपाटला विगेरे संकडाळ पुत्रे आप्युं ते यात्र पोताना गुरुना तेण गुणग्राम कर्या ते कारणथीज आप्युं हतुं) 🖙 आ छ 'छींडी' अथवा 'आगार' छे ते कांइ सर्व समिकती जीव माटे नथी जेओ इडता न राखी शके तेवाने माटे छे धर्म हानी जवा करतां आगार राखीने ते आगा-इनो लाभ लीवा पछी घटीत भाषश्रीत ले ते वधारे सारूं तेम छतां जे खरा धार्मिष्ठ जीवो छे-शुद्ध सम्यक्तव जेने रंगे रंगे व्या-

(११८) मकरण ५ मुं ---६७ बोल पी रहां छे एवा हडरागी जीवो तो गमे

सेवा आपश्चि समये-कसोटी बस्तने पण-चळाच्या चळता नधी अने कायर धर सम्पर्दन तीलगात्र पण खढित करता नथी जेनाची एकी इडसा न रही श्रफे तेमणे आ गार राख्या खतां—तेनो छाम सेवा छतां इमेश्रा होष्ट्र ते। भा रहता तरफ ज राम्बरी

मने बाबना हो एकी भावकी के 'धाय छ वे रहपमी भोने, के नेभा आवा पसरो पण टेक खंडीत करता नदी !

पह स्थानक से कमां में पद दर्शन मचतें छे तेमणे

आरा मन्य विचाय नथी सन्य अधवा धर्म न गइसमां छ ते महस्रनो दरमामी तेओ

संपूर्ण खाली शक्या नथी अने जे काइ वे दरवाजा वचेनी थोडी सरखी जगामांथी जोइ शक्या तेने 'सत्यसर्व ' मानी वेठा छे अने तेयी तेमांना कोइ तो मुद्दल जीवने ज मानता नथी; तेथी वधारे जोवा पामेलाओ जीवने माने छे पण तेने 'निख' मानता नथी, तेथी वधारे जोवा पामेलाओं तेने नित्य मानवा छतां 'कर्मना कत्ती' तरीके स्विकारता नथी;वळी वीजाओ तेने 'कर्मनो भोक्ता' मानता नयी दरवाजा ठेलवामां आ चार वर्गे जेटली फतेह मेळवी तेथी वथारे हतेह मेळवनारो पाचमो वर्ग ए चार सत्य जीइ शक्यो पण 'मोक्ष छे' ए वात तेना जोवामां-जाणवामां न आवी अने छटा वर्गे मोक्षने कबुल राखवा छतां सेना

(१२०) मकरण ५ मु —६७ पोस

'रस्वा'न से वर्ग भोइन शक्यो परन्तु सम्यक्त विचार करनारो समकिती जैन ए छए वादर्ग श्रुए छे-आणे छे अन्ने समकितीनी ए छ मान्यवा कारणो आपीने साधीत करीई -

(१) आत्मा 'छे ' कोइ पन करें के, 'आत्मा छे च क्यां है क्षरीर प न आत्मा छे पर-बक्क-अरुकार विगेरे पीता <u>छे</u> तो ते <u>देखाय छे</u> पण स्वरीः

तेमम भारमा होय तो देखाय केम नोहे ?''
"आरमा छोत्र तो देखाय केम नोहे ?''
"आरमा छोत्र निर्मा ए ए मम पूछ-नोरे विचार मुं भोइए के, जो आरमा नयी म

तो ए प्रश्न पुछयो म कोणे! घर-यक्ष-अ-सकार अ दि चीजोने जाणनार अने उपको मकार प्रदिचीति स भान्या छे गरीर अने आत्मा ए बन्नेनो स्वभाव ज जूदो छे तो ते वे एक पदार्थ केम होइ शके श्वरीर-नो स्वभाव जह छे अने आत्मा चेतन छे-जाणवानो स्वभाव छे ग्वरीर ए ज आ-त्मा होय तो जाहा न्वरीरमां थोडी बुद्धि अने पातळामां वधारे बुद्धि कदापि केम होइ शके ?

आत्मा अने देह एक लागनानुं कारण मात्र घणा कालनो खोटो महावरो-देहाध्यास छे हमेश दहना ज विचार थता होवाथी आत्मा अने ते एक मनाइ रह्या छे देहनो अकेक अवयव वीजा अवयवनां काम जाणी श्वकतो नथी आंख वोली शकती नथी अने जीभ देखी शकती नथी एण आंख, जीभ अने सर्व इन्द्रियोनां काम आत्मा जाणे छे.

(१२२) प्रकरम ५ मुं ---३७ बोल सरीर आत्मान जाणतुं नयी कारण क वे

अर छे भारमाने भाणवाषाळो पण आत्मा ज छे नाग्रन, स्यग्न जन निदार्शणे सवस्या मी जवा छता आस्मा ते घणे अवस्यायी क्टो छे; पटर्ज क नहि पण वर्ण अवस्या

वीत्या बाद पण आत्या हो ह्यात छे अने ए सर्व जाणे छे

(२) आत्मा 'नित्य' छे भारमा भने देह ए वे मुत्रा ज पदार्थ

जाणनामां बाष्या अने बात्मानी स्वभान भददप-भरुपी समा देहनी स्त्रभाष द्रदय अने रुपी जाणगामां आब्दो वो पछी, भार

ेमा न्द्रवांची उत्पत्ति पामतो नची अन देर साथे नाच पण पामना नयी एम सिद्ध थाय छे; कारण के, जडथी चेतन के चेत-नथी जह उत्पन्न थइ ज शके निह, तेमज ते वन्नेनो साथे नाश पण न संभने

वळी. सापमां जे अत्यंत क्रोध अने उंदर-बीलाही वच्चे जे वैर जीवामां आबे छे तेनुं कारण वर्तमान देहे तो कर्युं नथी कोइ पाछलुं कारण जोध्ए अने पाछल कारण विचारतां कबुल कर्बुं पडशे के.साप-उंदर अगर वीलाडीना देहमां रही जे आ-त्मा क्रोध के वैर मगट वतावे छे ते आत्मा ते देहना पहेलां वीजी कोइ देहमां हतो. एम आत्मा आदि के अत वगर्नो अर्थात नित्य छे एम कवुल करवं पडशे

(३) आत्मा 'कत्ती' छे.

"कर्मोनो कर्चा आत्मा निह पण कर्म

(१२४) प्रकरण ५ मुं — ६७ मोह छे, अगर अनापास कर्म पनी आवे छे अ गर मो क्योंनो कत्ता आत्मा भ द्वांग तो कर्म करवा ए आत्मानो स्वमाव टर्गों; तो पछी देनो भोझ न समने ' एवो श्रष्टम ध वा योग्य छे

परन्तु, चतन अथना आत्मानी मेरणा रूप महत्ति न होय तो कर्म से लड़ छे तें

जो कर्मनो कर्चा ईश्वरेन मानीए तो इश्वर को शुद्ध-आरम स्वभावे छे ते,कर्म

कांड़ ज किया केबी रीते करी छ के हैं मोटे आरमा ज कमनी कची छे बन्दी कारमा ज्यारे कम करना छाटी टे छे त्यारे कमें चंच रहे छे तेथी शास्त्राने कमें करवानी क्वभाव ज अगर वर्ष ज छे एम पण कहीं

शकाय नाह

ओ प्रेरक एटले दोपित थयो; माटे ए कल्य-ना पण खोटी छे माटे कर्मनो कत्ती ईश्वर नथी, तेमज ते अनायासे पण अवतां नथी, तेमज कर्म ते जीवनी स्वभाव नथी; पण आत्मा पाते ज कर्मनो कर्त्ता छे आत्मा जो शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमा वर्ते तो ते आत्म-स्वभावनो कत्ती छे अथीत निजस्वरूपमां परिणामित छे; अने जो ते शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमां वर्ततो न होय तो कर्मभावनो कर्ता छे.

(४) आत्मा 'भोक्ता' छे.

्र केटलाक कहे छे के, "आत्मा छे, ते किय पण छे, अने कर्चा पण छे परन्तु कर्म जड होवाथी ते कर्म फलपरिणामी थाय

(१२६) मकरण ५ मु—६७ बोम अने भारमा ते फळ मागव प बनवा यो

ग्यनगी'

परन्तु, कम कांश्र फळ देतां नयी : स्व भावे ज फळदाता नीवड छे मीडानो इरा

दा पनी नयी के स्नानार में मीं खार्ठ करे. अने विपनी इरादी पनी नथी में कोइना माण खर्ब परन्त ते बसेनो स्बमाय ज प छे

जेम मीठ भने विप स्वानार पोते न देई फब्द भोगवे छे तेम कर्म करनारी पण पोवे

तो, एक माणस अन्मयी क रामा अने एक

ज तेनाफ बनो भोफ्रा छे को एम न होत

(५) मोक्ष 'छे'

जन्मयी ज भिसक केम हैं। शके ग

केरकाक छोको मोक्षनी हयाती मानता

नुथी: मोक्षने एक कल्पना मात्र माने छे. तेओ कहे छे के -'' अनंता काळ वीती ज-वा छना कर्म हजी हयात छे—संसार चाल्यां ज करे छे, तो पछी कर्मनो नाश अथवा कर्ममुक्तपणु-मोक्ष होइ ज केम शके ? दळी भूभ कर्मथी देवपणुं अने अग्रभ कर्मथी नर-कांदि मोगच्या ज करवानुं; पण जीवने क-र्मरहितपणुं थवानुं ज नथी."

आ कल्पना देखीती ज भूछ भरेछी छे, कारण के आ तो मत्यक्ष वात छे के, 'दिवस'थी मतिपक्षी कांद्र चीज होवी ज जो-इए; अने ते चीज'रात्री'छे 'ना' थी विरुद्ध फाडक होत्रुं ज जोइए, ज 'हा' छे तेपन 'वंध'थी मतिपक्षी कांद्रक होत्रु ज जोइए, के ज 'मोक्ष' छे.

(१२८) मकरण ५ मु --- ६७ मोह ग्रम अने अधुम कर्मना करवायी ग्रम अने अग्रुभ फळनु मोगवबापणुं मान्य राग्स्युं, तो पछी एम पण मान्य कर्ब ज पदशे के,

शुम-अशुभ कर्मना न करवाची (प्रत्वे के,

हेवी निष्टल यतायी) सम-अश्रम फटर्ड पण भोगवनापण नथी ते ज मोझ प्रविध मगर कर्म करवापमां जेम अफळ नधीं देम कर्मधी निष्ठाचि पण अफल नधी-अने तेत फर मोस छे, क जेर्नु बीज़ नाम कर्मरहित पणुं छे अनत काळ वित्यो से कर्म मस्ये जी-

बनी कासकिना ज ममावे : पण तेना च पर चदामीन भाग यवायी कर्मफळ छेदाय अने तेथी माझस्वभाग मगट याप

(३) मामनो 'उपाय' छे मेरियाना विश्वाळ अधकारने टाव्या माटे एक दीवो शक्तिमान छे. तेमां पण एरंडीआना दीवा करतां केरोसीननो दीवो वधारे अने तेथी ग्यासनो अने तेथी पण वीजळीक दीवो वधारे प्रकाश करी शके छे. तेमन 'कर्मभाव' एवु जे जीवनुं अज्ञान, ते-नो नाश करवा माटे 'ज्ञान' रुपी दीवो छे अने ए ज्ञानमां पण 'आत्मज्ञान' ए विजळीक दीवो छे.

अजवाळा माटे अंधकारनो नाश कर-वा जोइए तम मेक्ष माटे कर्मवंथननो नाश करवो जोइए.

करवो जोइए राग-टे

राग-द्वेष अने अज्ञान: एनं एकपणुं ह्या ज कर्मनी मुख्य गांट छे ए विना कर्मनो वंध थतो नथी. तेनी निष्टात्ती जेथी थाय तेज मोक्षमार्ग समजवो. जे मार्ग बड़े (१३०) प्रकरण ५ मु –६७ वास

मत् (अविनासी), चैतन्यमय (सर्पमा वने प्रकासवा रूप स्वभावमय) अने के षळ (श्रह्र) एवी आरमा-श्रद्धारमा पामीप

एवं प्रवर्तन याय, ते ज_माराने मोसमार्ग मानको

कर्म मुख्यस्त्रे ८ मकारनां छे वेगां पण मुरूप 'मोइनीय कर्म' छे मोइनीय क र्मना पण म भेद छे ---

(१) टर्शन मोहनीय कम —परमार्थने विषे अपरमार्थ पुद्धि अने अपरमार्थने विषे परमाय पुद्धि रूप

(२) चारित्र मोहनीय क्रम — परमाब

अनुसार, आत्यस्वभाषमां स्थिरता ते चा रिष वे पारिवने रोपक एवा पूर्वसस्कार रुष्ठप कपाय अने नोकपाय : ते 'चारित्र मोह-नीय' कर्म.

ए वन्ने कर्मने फेडनार तेना मितपक्षी 'आत्मवीध' अने 'वीतरागपणुं' छे:—

- (१) 'दर्शन मोहनीय' कर्मनुं कारण 'मिथ्याबोध' : तो तेनो उपाय 'आत्मवोध' ज होइ शके
 - (२) 'चारित्र मोहनीय' कर्मनु कारण रागादि; तो तेनो उपाय पण 'वीतरागपणुं' ज होइ शके
 - े क्रोध विगेरेथी 'कर्मवंध' छे; अने प्र-तिपक्षी क्षमाथी 'कर्मक्षय' छे, तेबी ज रीते उपलो भेद पण समजवानो छे

(१३२) प्रक्रण ५ मु — ६७ क्षेत्र सर्वनु सत्य-अक ए नीवळ छे के, आस्मयोग अने रागद्वेपना त्यागना स्वरी

चर्च-एपी ज परिणामें मोक्ष छ अने ए सपी पूर्ण जेनाबां द्वाय से भन्ने गमें ते वेप परेरती द्वाय-गम से द्वाय परतु ते सीचे रस्ते छे सीचो रस्तो अयमा समिक्त पामेळो माण्स मोमनो पदोसी बने छे

भारमायीं जीने भारमाना मुक्कपण (कर्ममुक्कपणुं अगर गोक्ष) माटे इरहमेश चिववन क्यों करमुं नेहिए बरराजानी जेम सक्क हिन्दों एकाव पर करवाना मेळाव

सकळ इट्रियो एकाग्र यह कत्याना मेळाव तरफ ज स्थागी रही होयछे;लटबा नीकलेला. हानानुं एकदर सक्ष जेम क्षपुन पोताना पण तळे पहेलो जोना लेंबाह रही होय छे;सो न्ढाना तार उपर नाचनारा नटनुं सर्व चित्त जेम सुक्ष्म तारना मध्यविंदुमां होय छे; तेम अने वरावर तेमज, आत्मार्थी जीवे मोक्ष अथवा मोक्षना साधन साथे हुटे नाहि एवी लगनी लगाडवी जोइए

एवा आत्मार्थी जीवो अथवा जिजा-मुओनी मेाटी आशा मेाक्षनी ज होवाथी, तेमनो मोटो आनंद पण ते संबंधनोज होइ र्शके चोरीमां वेठेला वरने जैम व्यापारमां लाभना समाचार आनंद आपता नथीं पण 'कत्यानी पधरामणी करो'ए शब्द आ-ननंट आपे छे; पछी कन्यानुं वस्त्रदूरथी नजरे पहतां वधारे आनंद थाय छे: तेने पासे वेसाहवामां आवतां एथी वधारे आनंद

(१३४) मकरण ५ मुं — ६७ बोल याय छे अने इस्तमेळापयी बळी एथी। पण. चपारे बानंद वाय छ, तेमम मुमुक्त जीवाने सांसारीक लामगी, भोगविशासणी के की चिंगी कांइ भानद बतो नगी; ए तो व्य बहार साझीमृत यह चसाब छे परंतु हेनी आनंद तो भात्मिक लाममां जनक्यों होय छे कोर पश्चिमात्मानां दर्शन, रागद्वेप पर जीव मेजनवानुं पोवायी मरायमुं कोर पगलु, ब्रान संबंधी धर्येका की द्रविचार एन सेने आनट आपी सके छे. ए दशा परिपक्त क्यार याय ए आधा बळी तेने ओर भानद आपे छे आही एक मुंदर मुकावली सक्षमी, लेबा पारम छे सांसारिक आञ्चा माणसने

इपश चिंताग्रस्त राखे छे, ज्यारे भा आशा

जेने आनंडमय राखे छे

ए स्थिनिनी परीपक्त दशा अथात स-र्व आभारारहित आत्मर्स्वभावनुं जेमा अखंड ज्ञान वर्त्ते छे ते ज 'केवळज्ञान ' एवा केवळी, देह छतां उत्कृष्ट जीवनमुक्त द्वामा समजवा. देहाध्यास अथवा देह साथे एकता

अने देइना धर्मयां अनुरक्ति मटे तो पछी जीव कर्पना कत्ती नथी तेमज भोक्ता पण नथी ते मोक्ष स्वरुप ज छे: अनंत द्र्शन-अनंत ज्ञान-अनंत सुख स्वरूप छे.

'' हुं देहादिक सर्व पदार्थथी भिन्न छुं. -महार्ह आत्मद्रव्य कोइमां भळतुं नथी**-**कारण के आत्मा सिवायना पढार्थी जह छे तेमज को इम्हारामां भळतुं नथी स-

(१३६) मकरण ५ मु---६७ बोस र्षयी हूं भिक्त छूं माटे--" हुं शुद्ध खूं, योषस्यरुप धुं, चेतन्य प्रदेशात्मक छ, 🐧 अन्यानाभ सुरवपप छे

अने ६ स्वयंग्योवि स " 🕏 स्मर्थज्योति होमाधा मने मकाश्व नार हुं पोते ज खं-बीमुं कोर नथी स्व

मकाञ्च माटे नो है स्तरी वार्ट हो रांक बीचा

रां भर्मनी श्री सचा छे के मार्चनाम दर

घके ! प्यी मावना इमेश मने हो ती !

प्रकरण ६ ई.

'वर्म तथा देव.

अक्षेत्रअद्धि हैं हैं नियानी समस्त प्रजाओं धर्मनी इ-अद्धि हैं हैं नियानी समस्त प्रजाओं धर्मनी इ-अद्धि स्थान च्छा करे छे अने वीजी सर्व वावतों करतां धर्म तरफ वधारे माननी लागणीथी जुए छे केटलाक तो मात्र अमुक बाव्दों अथवा अमुक क्रियाओंने जध्मे मानी लह ते पाछल पोतानी जीदगी अपंग करे छे.

मात्र अभण अथवा ओछा केळवायरा

(१३८) प्रकरण ६ - पर्य तथा दव खोको जपन तरफ आन्त्री बची आस्वा भरावे छे, एयनयी एवी जलदे महाविद्वानी धर्म सरफ मामान्य प्रभा करवां वधारे आ स्या धरावता जीवामां आख्या छे धरलहनी मामी मधान ग्लेडस्टन साहेम के से सभय-कमारनी नमणी हाव गमाती वे ज्यारे ज्यारे दनियाना कामकाजयी कटाव्हतो अ गर ज्यारे ज्यारे तेन माथ दःखन स्थारे ते 'बाद्यल' छरने बेसवी व फोरेनी के संकडी

त 'बाइचर अन्य पतवा त कहना क सकड़ बार 'बाइचर' नांचवा छना इरनन्त्रत वेर्पाणी मने एवी एसी सुचीओं नडी आहे छे के चित्राओं अने पुरस्तों हे सुबीआंनी मझा आ

चिताओ अन दुःखां हे सुपीआनी मम्रा आ गळ भद्रस्य याय छे भे भर्मे युरोपनी प्रजान १००० भी ,वधारे वरस सुधी अज्ञानमय−दुःखमय−जु-ल्मी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं त्यारे जे धर्भ मनुष्याने हजारी वरस सुधी मुख आप्युं छे-जे धर्म आपणने सर्वे विद्या-नुं ज्ञान आपे छे−जे धर्ममां वीजा धर्मीनी माफक परस्परविरोध छे ज नहिः एवी धर्म आ जन्ममां दीलासो अने आवता जन्मोमां मुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे तेओ पायः दुःख जोइने ज मानवा लाग्या छे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं सुख मळे एवी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे वर्मनुं मूळ स्त्रिकारतां अने

(११८) प्रकरण ६ - धर्म तथा दव

होको ज घम तरफ आटडी वधी आस्वाः थरावे छे, एमनयी एवी उसट महाविद्वानी

धर्म तरफ मामान्य प्रमा करतां बधारे आ स्या परावता जीवायां आच्या छे रालहती माजी मधान ग्लेडस्टन साहेद करने अभय

क्रमारनी अमणी हाथ गणाती व ज्यारे, क्यारे दुनियाना कामकामयी कटाळवो अ गर ज्यारे ज्यारे तेनुं मार्थ द:खन त्यारे ते 'वात्त्रस' सबने वेसती ते कहेनी के सेंकडी बार 'बारयम' बांचना छतां इरबखत तेवांची

चितामा मने दु स्तो वे ख़बीमानी मग्ना आ गळ बद्रश्य याप छे

भ पर्ने युरोपनी मनान १००० थी

मने प्वी प्री सूचीओं नदी आवे छे के

≁वधारे वरस सुधी अज्ञानमय**−**दुःखमय–जु-ल्मी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं त्योर जे धर्भ मनुष्योंने हजारो वरस सुधी मुख आप्युं छे-जे धर्म आपणने सर्व विद्या-ृतुं ज्ञान आपे छे-जे धर्ममां वीजा धर्मीनी माफक परस्परिवरोध छे ज नहिः एवी धर्म आ जन्ममां दीलासी अने आवता जन्मोमां मुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे तेओ पायः दुःख जोदने ज मानदा लाग्या छे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं सुख मळे एटी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे वर्मनुं मूळ स्विकारतां अने

(१४०) प्रकरण ६—-धर्म तथा देव सर्व मीवोने सुख दुःख्वयी मारी नरमी ला गणी थाय छे वे विचारतो, आपोआप ब

समजाय छे के, पर्म कोइ दिवस कोइ पण भीवना काल्यमां समायखो नयी मीजा घ ब्दोनी कडीए हो, " अन्य जीवीन सुख भापीने ते रस्ते पोता माटे सुख मेळपनानी में कळा वेतुं नाम भ भर्म "

आ एक घर्षेनी सामान्य व्यास्या धर दुनियानो कोई माणस-प्रकी ते चाई ते प थनो मक्त हाय पण आ सादी व्याख्या ना मजूक करी शक्ते नहि अने मो से नाकदुष्ट

करवानी हिमत परावती इसे तो से माण-

होनी नेग्रप

सार्यी पण वृत रहेवानी हिमत धरावती

जरथोास्थ, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे के:-'मनसा', 'वाचा' अने 'क-मणा' (मनथी-वचनथी अने कृत्योथी) गुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे दुनियाना सर्व धर्मी एज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए १ परन्तु पायो एक छतां इमारत गांधवामां जुदा जुदा हाथोनी कारी गिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. को-इए भीलनां चुंपडा वांव्या, कोइए खेटुतनां ्माटीनां घर वाध्यां; कोइए एक माळनां इटोना घर वांध्यां; कोइए वगला वांध्या अने को इए मजबुत दीवा छवाळा सुशोभित

(१४२) प्रकरण ६-- भर्म तथा दव सात माळना दीव्य महेल पांच्या

मन, बचन अने शरीरनी ग्रन्ट बर्तणक तथा परापेकारनी उपदेश करना छता, ए न वपदेशक को धर्मनी स्वातर होम. मह

पूजा, निषेदनी उपदेश करे तो अप उप देशमां परस्परविरोध स्पष्ट जणातो नयी। अने भ्रं ए परस्पर निरोध ते उपदेशकनी

षेदनो स्पष्ट पोकार छ ने " अहिंसा परमी पम ', अने तेम छता बेद ज हिंसक क्रियाना उनदेश करे व कम समग्री मन आत एको उपदेश कर ता तेना समयमा

स्तुं ज फकाय के, तेणे मुंदर पाया

स्मार्थवृद्धि अथवा जीवाजीवना ज्ञाननी ग रशामरी साबीत करना वस नयी !

्र उपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी ज वांघी!एवी रीते दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोल अथवा नीजरूपपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन कर्युं छे ते पद्धतिने 'जैन वर्म 'ए नामथी लोको ओळखे छे, कारण के तेमां स्वार्थ अने हिंसा उपर जय मेळववानो ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथी-आर पण पुरां पाहयां छे.

एना उपदेशमां हिमा अने स्वार्थीपणा-नो अश मात्र नथी अने जो कटाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो बताबी शके के जेना उपर जैन नाम

(१४०) मकरण ६---धर्म तथा देव

सर्व नीवोने सूख दु खयी सारी नरसी सारी गणी थाय छे ते विचारता, आयोआप अ समजाय छे के, वर्ष कोश दिवस कोश एग भीषना दुःखर्मा समायला नयी भीजा द न्दीनां कहीए हो, " यन्य जीवोने सुख आपीने त रस्ते पावा माटे सस्य मेळवगानी

जे कब्या देने नाम **भ** भर्म " भा एक पर्भनी सामान्य भ्यास्या धर कबूप करी श्वकंधे नहि अने मो ते नास्त्रल भरमानी दिसत घरावता हवे तो ते माण

दुनियानो कोह माणस-पत्नी ते चाहे ते प यनो मक्त द्वाय पण भा सादी व्याख्या ना

सार्थी पण कर रहेमानी हिमत धरानती

द्वांबी काउप

जरथोास्थ, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे के:-'मनसा', 'वाचा' अने 'क-मणा' (मनयी-वचनथी अने कृत्योथी) शुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे दुनियाना सर्व धर्मी एज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए १ परन्तु पायो एक छतां इमारत वांधवामां जूदा जूदा हाथोनी कारी गिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. को-इए भीलनां चुंपहा वांव्यां, कोइए खेडुतनां भाटीनां घर वाव्याः कोइए एक माळनां इटोना घर वांध्यां; कोइए वग्रहा वांध्य**ा** अने कोश्ए मजबुत दीवालवाळा सुशोभित (१८२) मकरण ६-- पर्म तथा दव सात मालना दीव्य महेल बोध्या

भात माजना देश्य महस्य मान्या मन, वचन अने वारीरनी राज्य वर्तगृह वया परीपकारनी उपदेश करना छता, ए स उपदेशक सी पर्मनी स्वावन होम, यह

पूता, निवेदनो चपदेछ करे ता धुए उप देशमा परस्पगविराध म्यप्ट जणावो नयीके अने धुं ए परस्परिनेरीय ते चपदेशकनी स्वार्षयुद्धि अयया भीवासीवना झाननी ग-रशामरी सामीव करवा वस नयी !

भैदनो रुपष्ट पोकार छ के " आहिंसा परमो पम ', भेने सम छतां थद क दिमक कियाना वपदेश कर त केम सीमें वे भने भा ते पदो उपदेश कर ता तेना सम्पर्मा

पटलं भ करी शकाय के, तमे संदर पावा

(१४३)

खपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी **ज** वांधी! एवी रीते दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोक्ष अथवा नीजरुपपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन फर्यु छे ते प**खतिने 'जैन वर्म'ए नाम**थी लोको ओलखे छे, कारण के तेयां स्वार्ध अने हिंसा उपर जय मेळववानों ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथी-आर पण पुरां पाइयां छे.

एना उपदेशमां हिसा अने स्वार्थीपणा-नो अग मात्र नथी अने जो कदाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो बताबी अके के जेना उपर जैन नाम

(१४४) प्रकरण ६-धर्भ तथा देव इाय अने जेनी अदर दिसक कृत्यनी,

चपदेख होप, सो संपुस्तक 'कैनसेख' नहि पण मनाबटी जसमज्ञ गुंचम चीनो नीमोटी नक्करो होम्य पर्याजकरे छे

नैन सिद्धांतीप अहिंसानी उत्तमता रिमकारमा छता ते पाळरामा रहेशी मुक्के-शीओ पण सक्षमां छाची छे, अने सयी 'सा गारी' अने 'अनागारी' पूत्री वे शासाओ पमनी बनानी छ में छोकरी मम्मास छोडी आसा दिवस रम्मां करही होंग तेने सुमा

रबा अर्थे प्रथम तेनों पिता कह के तारे सपार-ना ७ थी १० सुबी तो नाहि जरमबुं आ वा वयमां '२० बाग्या पछी रम, म' एवा हुक्स समाना नथी पण ७ थी ९० सभीना निषद मां लाववानो ज समावेश थाय छे. धीमे धीमे ए नियमने वधारवामां आवे छे अने छेवटे छोकरो पोताना काममां मशगुरु चने छे. ए प्रमाणे आ जैन सिद्धांती पण रात्रिदिवस हिंसकवृत्ति अने स्वार्थमां रहेला मनुष्योने माटे प्रथम ' सागारी ' धर्मनो रस्तो वतावे छे अने ए धर्ममां स्थिर थये-लाओ माटे 'अनागारी' रस्तो वतावेले.

' सागारी 'धर्म पाळनारा 'श्रावक ' नामधी भोळखाय छे अने 'अनागारी ' (अणगार) धर्म पाळनारा 'साधु ' ना-मधी ओळखाय छे सागारी धर्म पाळनारे पोतानी दृष्टि हमेश अनागारी धर्म उपर टेकववी जोइए, निह के चालु स्थितिथी

मंत्रोप पानी अन्की रहेन्नं जीइए पी-च हमारनी मुद्दीपाळा गहस्यो एटखेयी सतीय पानी बेसी नीह रहेता साख मेळ-बबा राफ म रहि राखे छे---मी के लाख मेळदबानु श्रीहानाज नशीवमां हीय छे देमज अनागारी पर्मपण थाहानाज नसीयमा होच छे.तो पण इमेश'आशय उच्चतर अकरपयो' (Ana High) ए सहतुं सञ्जूण छे वचम पदार्यना स्रोभ दिवकर ज छे अनागार धर्म (साघ्र धर्म) माधुनी संचात्रीश प्रकारनी योग्यता अध-मा गुण रिपे पाञ्च पीजा बकरणयां कहे-

बाइ घरपुं छ नेमनी राहेदमेश आत्ममाघर

(१४६) प्रकरण ६--देव तथा पर्म

तरफ ज होय छे ए आत्मसाधनना धर्ममां जे नवां नवां तच्चो अंतर्हाप्टिशी जोवामां आ-वे छे अने तेशी जे अंतरानंद थाय छे ते अ॰ कथनीय छे. युरिषयन कावे 'काजपर'नी नीचली लीटीओ आ संवंधमां तदन साची ज छे:—

"Religion! what treasures untold

"Reside in that heavenly word!

"More precious than silver or gold

"Or all this earth can afford."

ए आस्मिक धर्मना खजाना खरेखर सो-ना-इत्या करतां अगर दुनियानी हरकोइ वस्तु करतां घणाज कीमती छे एवा अनु-पमेय, अकथनीय अने स्वतंत्र आनंद जे(मा-धु)ने मळतो होय ते पछी दुनियाना च्यव- (१४८) प्रकला ६-देव तया धर्म इत्तरन भने तेनी दुःसपरिणामी छड्डेमतोन

कदी पण केम स्थिकारे ? ससार अनेससा रना पुरुषा रुप पुद्गुष्टीक शरीरनी सटपटो सेने केम पसंद पढे ?

सायु-पर्ममां नीचेनां 'पच महाबत' के नो समाचेच थाप छेः--(१)माणाविपात विरमण व्रतः-एकेन्द्रि-

यची पंचेन्त्रिय सुधीना स्पावर तमज सस जीबोने पोताना सरसा गणीने, पोताना नेवी ज तेमनामां भारमसचा छ एम मा-

नीने, वे समनी व्या पाछे सर्पाद पोठे * स्त्रीस्ती घमना पण एवीन पांच मनाओ

* स्नीस्ती घमनी पण एवीन पोच मनाओं (Commandments) है--Thou shalt not kill Thou shalt not stoni &c हिंसा करे नहि, %वीजा पासे करावे न-हि अने कोइ करे तेथी मनमां राजी था-य नहि.

(२) मृपावाद विरमण व्रतः—मृपा अथवा खोढुं वोले नाहे. अही खोढुं वोलवामा मात्र जुढुं वोलवानों ज समावेश थाय
छे एम नाहे; परंतु जे जे वचनों अभिय,
अपथ्य अने अतथ्य होय ते सर्वनो समावेश थाय छे. अर्थात् साधुए दरेक वचन
भिय, + पथ्य अने तथ्य वोल्हुं. भिय

* हिंसा ८ कारणोथी थाय छै:-अज्ञान, संशय, विपर्थास, राग, द्वेष, स्मृतिभ्रंश,योग-दु:प्रणिधान अने धर्मनो अनादर.

+ वेदमां पण कह्यु छे के, ''सत्यम् ब्रूहि, प्रियम् बृहि. ''

(१५) प्रकरण ६-देव तथा पर्म प्टले के सामक्यायी कोइना भीवने केन्न

न बाय. पण्य पुरसे से बचन छेरले सर्-षाके हितकारी नीवडे अने तथ्य पटले प-

या तथ्य अथवा साञ्च ने वचनमां ए प्रणे नियम सपनावा न होय धेई बचनहोलना करवां साम गौन रहेषुं नमारे पसंद करे

(१) भदश्चादान विरमण चतः—कोड

पण परत कोइना भाष्या सिवाय से नहि (४) मैधन विरमण बतः—सर्व पका रे स्त्रीसमागम तमको आ वतना रक्षणा

किरमा योज्या छे, के शेवी विषयमुर्दिना

कें समर्थ पुरुषोध 'नव बाद' अथवा नव

गम्मालीभानो संमय अ रहे नहि (५) पा ब्रह बिरमण वता-पन-धर-

ती आदि हरेक मकारना परिग्रह के जे आत्माने ममत्वभावथी 'वंधीवान'वनावे छे तेनो सर्वथा साग साधुए करवो पढे छे.

सागारी धर्म (श्रावकनो धर्म).

सास्वता सुख अथवा मोक्षना पगथी-आ रूप सागारी धर्म वार प्रकारे कह्योछे. परन्तु ते वारेनो समावेश '' स्थूल माणा-तिपात विरमण त्रत''मां थइ शके पृथ्वी-मां केटलाक जीवो स्थूल एटले मोटा छे. अने केटलाक सूक्ष्म छे वे इन्द्रिय आदि त्रस जीव ते स्थूल समजवा अने एकेन्द्रि-य स्थावर जीव ते सुक्ष्म समजवा. आ वे मकारना जीवो पैकी, श्रावक अगर सागा-

(१५२) मकरण ६--थन तहा धम री धर्म पाळनारो माम स्युख जीवनी भ हिसाबी दूर रही शके छे, सुध्य जीवी वो संसार व्यवहारना वरेक कार्यमां हणायां करे छे. देनो नियम दे छड शकतो नथी सोपण बनवां सपी वेनी 'यत्ना' अयश समाळ राखपाने तो वे ससमा गावे छे स्यल नीवनी रसामा पण अमुक स-रना (Conditions) आयक रासे छे परे-छी मरत ए के,स्पूल जीवनेसंकरप करीने (Intentionally) मारवा नहि; वीनी

मस्त ए के, निरंपराची स्थूल जीवने मार-वा निंदः शिशी सरत ए के, निरंपेस हिंसा वरवी निंद

ना क श्रापके पण सबया दिसा त्या

गवानी स्थितिए पहोचवानी उमेद राख-वी जोइए तोपण ते स्थितिए आवतां प-देलां आटली छूटवाळुं फरमान तेने वता-व्युं अणसमज्ज लोको श्रावकोने माथे खो-द्वं आळ चडावे छे के, तेमनो धर्म तो तेमने न्हावानी मना करे छे; अने तेओ नाना जीवने वचावनारा अने मोटाने मारनारा जाशे के,ए तहोमत केवळ वीनपायादार* अने द्वेपमय छे

^{* &#}x27;वनराज चावडो ' ए नामना पुस्तकमा तेना सुप्रांसिद्ध कत्तीए जैन धर्म माथे गुजरात नी परतंत्रतानो आरोप मुकयो छे अने देशर-क्षणार्थे पण श्रावकोने छडता तेमनो धर्म नाम

(१९४) प्रकरण ६-चेन तथा भर्म

आहिसा नामतुं भा पहेलुं झत पाळवा चपरांत,जूट-चोरी-स्योभचार सने हुप्ला

करे थे पने सिब्दांत हारपास्पद् प्रसंग आपी भीतिरी मताल्यो थ; ते माम नेन सिब्दांतीना रहस्यपी अहानतार्तु ज परिणाप थे आश्चर्यनी यात थे भे, ए जैन घम नेना स्वामाधिक अने न्यापपुष्ठ (rational) पर्मनी क्षोधिकी निवा करनार विद्वाने नेन राजाओ युद्धोमों केवा पन

राफ्रम करता ते माणना दरकार करी नधी है (के ने एक सागारी धम पाळनारी छै) एम कही दाकी दा के संचारी माणी न नमीनमंत्री साम के नमीन (मानुमूमी) ना रहाणांचे बहस तेयान पाय तो न अपराची सामे खडे छै, ए रमाच घडे छे हिंसा करवाना हेतुयी न नहि पण हिंसरने रूर रस्थाना हेतुयी लडे छे अने प्र चारथी निवर्तवा रूप ४ वीजां व्रत पण तेणे पाळवानां छे.आ ' पांच अणुव्रत '+ तेथी पोताना सागारी धर्मने उल्लबवानो अर्था-त् लीधेला नियमने तोडवानो दोष वहोरतो न-थी, जो के हिंसानो दोष तो लागे ज परन्तु ए ा के संसारी तरीके उपला संजोगोमा पण जो तें लड्बं पसंद न करे तो वेहेतर छे के तेणे साधुपणुं अथवा आगार वगरनो धर्म स्विकार-वो -प्रकाशक

+ साधु ए पाच त्रतो सर्वथा—काइ पण आगार सिवाय पाळे छे माटे साधुना ' पच म-हात्रत ' कहेवाय छे अने श्रावक ते सर्वाशे पा-वी शकतो नथी पण अमुक छूट राखवी पडे छे माटे तेना ' पच अणुद्रत ' कहेवाय छे.

(१५६) प्रकरण ६-देव तथा धर्म

करेबाय छे ए पांच उपरांत बीओं ७ वत श्रानके

पाळ्यानां छे ते दक्तमां नीचे मुनव छे -

दीशानी मर्यादा, परिग्रहनी मयादा, अ नर्धद्र भयना निष्ययोगन यता दोपोधी

पिरक्ति, सामायिक नामनुं ध्याननुं व्रत, दीशायगासीक वत, पोपपवत अने अ-

विषि संविभाग वव (ए सातनी विस्तार अम्य कोइ प्रस्तकर्मा मोइ छेवो)

आ मिटनो सेन्सो माग आजना मोप-

को बीइ शक्या छ तेची पर्यो मोटो भाग भ'मा'सीद राजकोक'नु वणन भाष्यु छे है

इनी वेमनायी अज्ञाल्यों छे 'बीदराम नों-

(१५७)

जेमां सकळ विश्वनी भूगोंळ-खगोळ आ-वी जाय छे ए सर्व जमीन अने तेमां र-हेलां प्राणी-पदार्थीमां जुदा जूदा स्नास गुणो रहा छे ए गुणो ए तेमनी कुद्रत छे कुदरतने आदि नथी, अंत नथी. व्या-सजीए पहेरेली पाघडींना जो अंत के आ दि जोबामां आवे तो कुद्रतना आदि-अंत हाथ लागे. तेनो कर्ता कोइ नथी. ते नाश पामती नथी पण समय समयमां ते-नां रूपांतर थयां करे छे तेथी सामान्य मनुष्यो तेने नाश पामती माने छे. पृथ्वी-नो कर्त्ता कोइ होइ शके ज निंह एवी मा-न्यताने आधुनिक जमानाना युरोपियन विद्वानी पण टेकी आपे छे.

(१५८) मकरण ६-देव तथा पर्म ज्यारे ईचर कर्चाक नधी सारे पछी ए

नी पूमा-भर्चा करवान तो क्यां ज स्तु! भने कुदरत तो भड़ छ तेनी पुता थ ? 'देव'ना संबंधनां घणा छोको मुखा

मम छे देव सन्द 'दिव ' एटले प्रकाशस् ए बपरकी नीकळ्यों छे 'देव' एटछे मान 'मकाश';अयवा ज्ञानादि आरियक वेजवी' मकाशीत बात्मा, केमणे स्वमावयी मका

 ईश्वरने कर्त्वापणुं नधी पवा मिळातनी मान् बीती माटे बानो श्रीमती पार्वतीनी रून 'सम्य

क्त सूर्योदय' हिंदी भाषामां मीटी श्रेष-मूख्य III 'मेन हिनेच्छ' ऑफिसमी मळहा] (वेनतम्बनी पीजान माठे ए पुस्तक साम शृंक

बा--विनासका साम्य छ

शमय आत्मा उपरनो मेल दूर करी 'नी जरूप'
माप्त कर्युं छे.एवा एक वे नहि पण असंछय आत्माओ देव छे तेमने एकपणे मानो अगर अनेकपणे मानों ते सरखं ज छे;
सर्वने देवपणुं एक (सामान्य) कारणथी
ज आरोपीए छीए

'वीतरागनोंब' बोधे छे कें, '' तमारा पग उपर उभा रहो. करशो ते बुं पामशो अने वावशो ते बुं लगशो. अने केवी रीते वाव्युं के जेथी उत्तमोत्तम फल लण्युं, ए जाणवा कोशीश करो अमने याद करशो तो अमारां ते कामो पण याद आवशे अ-ने तेथी कोइ बखत अनुकरण पण करी शकशो. वाकी तो तमारं कल्याण तमारा

(१६) मकरण ६-देव तथा भर्म

द्यायमां क छ बामारी सचा नवी के कोइने कांत्र आपी शकीए "

यात ! केवो सरस मात्मसभव (Solf-roliance)नो पाउ! मा भारमसंश्रयनो पाठ

ज्यारे खोको बराबर समझडी स्वारे ज सामा जिक अने भारिमक चलति यसे पारका पने दोहबानी आशा राखनारा माम. प

र्थ मोड थाय छे त्यारे, पस्तावाना मसंगी ज पामे छे ईश्वर आपणा माढे शबतार

छाने भाषणी बांग मामी विमानमां बेसा-

लोको वीचारा भा अमुस्य मृतुष्य देश-

गण गमाय छ ।

ही लड़ जाय.पंची मान्यतामां केटछा यथा

केब्र निष्पसपात कवना केबी बीतरागी

अज्ञान, क्रोध, मद, मान, माया, छो-भ, रति, अरति, निद्रा, शोक, असत्य. चोरी, मत्सर, भय, हिंसा, मेम, क्रिडाम-संग अने हास्य : ए अढार दोष वगरना देवनं स्वरुप जाणनाराओ कदी कोइ जा-तना व्हेममां फसासे नहि कारण के देव-ने जन्म-मरण छे नहि, करवापणुं छे न-हि, रागद्वेषादि छे नहि, रुपरंग छे नहिः मात्र ज्ञानानंद रूप तत्व ए ज देव छे. के ते तत्वने हं अने तमे (प्रयास करीए तो) पामवाना छीए.

प्रकरण ७ स

सो 🎖 तुमने पीवळ प्रयोग स्वमा 💥 🎇 देना जाणपणा बगर सोच औ ळलाइ शकतं नधी तेमज, सम्यवस्य अने '

मिध्यास्य बन्नना स्वभावना जाणपणा व गर सम्यक्त्यनी कदर यह शके नहि क 'मिच्यात्वमी अर्थ 'व्हेम यह शके व्हेम बे

मकारनो (१)Superstation सोटा पदार्पने-

अभयाने सामा तरीक मानीए ते तथा (२)

Summon साथा पढार्चमां शंका रासीपे के

मा सार्च हुदे। के केम ते नैन मार्ग निःशंक

घणीए भोळी श्राविकाओं के जेओ छ-पाश्रये * हमेश जाय छे, सामायिक 🗴 नित्य करे छे अने धारेला + गुरुनां द-(Unsuspecting) होवाथी उमदा खवासनी छे अने व्हेमो(Superstitions) वगरनो हो-वाथी सुधरेलों (Refined) छे, ए वे गुणो ते-ने आ न्यायप्रिय जमानानो सर्वमान्य धर्म बना-ववा समर्थ छे.-मात्र समर्थ छेखको अने उपदे-शकोनी न्यूनता छे

* उपाश्रय, an asylum

× सम भाव (रागद्वेपरहितपणुं-आत्म-गुण)मा स्थिर रहेवानुं ४८ मीनीटनुं व्रत(ध्या-न जेवुं ज)

+ केटलाक वेश लजवनारा साधु स्त्री--पु-

(१६४) मुकरण ७--मिथ्यात्व र्शन माटे पेछी बहु भाष छे तेमी मुसस्म

मना वाद्यवरी मान्यवा पण पटला जर वयी राखें छे तेने विचारीने शी सवर

समर्थ नथी ! गुरु तरीकेना मानसाटे स प्रपण सोनारा पौवाना गुइनी पासेथी तेमो 'समाकेतना बोस्' गोलती पर सम्बद्धक अने मिच्यात्वना भेद भी

भा कागळनी साबृत तेने छोकरी आप

होत वो ताबुव होकी, मावा-मेसकी, र बाजी भवानी अने ईंगराने कदी या नाह मोसना देवने करवापणुं छे ज न रपोन कहे छे है " तमें मने गुरु भारो, बिं

विगेरे ' एक साचु उपर मेम अने बीमा तर नेदररारी पशनु आ एक मचळ कारण है

अने स्वर्गना देवना हाथमां, मनुष्यना पूर्व भवनी करणी सिवाय, * कांइ देवानी शक्ति नथी. तो पछी नाइक वखत, पैसो अने शरीरवळना भोगे तथा शुद्ध सम्यक्त्व-रत्नना खर्चे शा माटे मिथ्या भ्रमण करवें? माटे सम्यक्तवना शोखीन माणीए मि-थ्यात्वना, नीचे समजावेला २५भेद बरा-षर समजीनं पोताना आत्माने तेनो 'संघ-हो' * न थवादेवा सावचेती राखवी जोडण.

संघटो—स्पर्जा-आभडछेट.

^{* &}quot;Man is the architect of his own fate" and "Nothing can work me damage but myself, the harm that I sustain I carry about with me, and I am never a real sufferer but by my own fault"—St Bernard

(१६१) मकरण ७-मिध्यात्व (१) 'अभिष्रहीक मिथ्यात्व'-

छोडे नीर अने सामी माणस खरी दलील स्पष्ट सममाने तोपण ' गमेदान् पुंच्यु प-भड्यु ते छोडे नहिं तेने "अमिप्रहीक मिष्यात्वी " कहे छे दर्शत तरीके 'सोह माणिया 'नी बात सुप्रसिद्ध छे; वेणे ज-देल सोर्ज माथे मुकीने भागळ पासवां रू पु-सोन-प्रवेरात विगेरेना समुद्र भीवा 🕶 तो सोदं छोरपुं म नीह अने नाहक नि र्मास्य चीम चपादीने दः स्त्री धया तेम ज

केटलाक माणसने झाननी बाद समजाबी-प त्योर कहे के, ग्रं आटला दिवस झा-न बगर पदयू रह्यू हुनू के! जमे तो स

ने मनुष्यो इटबाद करी, कदाग्रह

मारे 'करता होइए ते करीए अने छासनी दोणी भरीए ' एवा विचारा 'अभिग्रहीक मिथ्यात्वी जीवो 'ना नसीवमा दहीं-माख-ण-मलाइ-धी क्यांथी होय !

(२) अनाभित्रहीक गिध्यात्व.

केटलाक मोळा जीवो एवा होय छे के जेओ वितराग देव,तेमणे भाषेलो धर्म अ-ने तदनुसार वर्तनार साधुओने मानवा छ-तां कहे छे के, 'आपणे तो सर्व देवने न-मवाना अने सर्व धर्मने मानवाना ' एम-नामां 'अनाभिग्रहीक मिथ्यात्व' समजवूं. जे देवोमां 'सुदेव'नां लक्षणो न होय, जेमनो मार्ग दयानो न होय, जेमना आ-

(१६८) प्रकरण अ-मिध्यास्य

चार विचारमां परस्परविरोध आन्तो होय सेमने देव वरीके मानवा-पूजवाची है बुद्धिने आवरण न सागे ? भी वीतराग देवने स्मरवानुं कांद्र कारण होय सो ते ए ज छे के, ए यह तेमना ज्ञान-गुणनी

अग्र आपणामां आवे; बाकी वो मृष्टिब्य पहारमां कोइ रीते तेथी आहा माने अ-ने आपणने मदद करे पर्व मानम् ए वा वरागनी बीतरागता अपर कक्षंक चढावया

मेर् मने मृष्टिनियम किरुद्ध छ प्मज, # 'नेपरासिस्ट' खोके। जैन धर्मना आ

सिर्वातीमा पोताना विचारोनी मतिष्ठाया भोड एक जुने। पुराया मळवा माटे बेहद आनंद असतदेव-असत्ग्रुरुने मानवा-पूजवाथी पण तेमना ए असत् गुणो भक्तमां प्रवेश करे एमां शी नवाइ ?

आ अज्ञानना वन्ने छेडे भूल करनारा सेंकडो जनो छे. केटलाक ज्यारे सर्व देव उपर पूज्य दृष्टि राखवा तैयार थाय छे त्यारे वीजा केटलाक वळी असत्देव-अ-सत्धर्म अने अमत्ग्रुने गाळो भांडवामां. निद्वामां, अपमान पहींचाडवामां ज ध-र्म माने छे-समिकतनुं ऌक्षण माने छे. आ-थी वधारे भयंकर मिध्यात्व वीजुं कधुं ? सम्यकत्वनां पांच लक्षणमां पहेलुं ज लक्षण 'चपश्रम ' कह्युं छे; एमां अपराधी उपर पण समाद्यष्टि कही छे; तो पछी अज्ञान-

(१७) प्रकरण ७--मिध्यास्व मां भूला भटकता शाणीको उपर कीप करवानी सो भाद भ कर्या रही ? 'पहेला

प्रपर पाद '(स्रात) मारवानी पॉसीसी जैन सूत्र तो कदी स्थिकारत नथी एक सौकिक दर्शत आतो अच्छो स छासो करी शक्त्रे एक गाणस वजारमां

अवा माटे घेरपी नीकष्ट्यो रस्तामां दने ५०० माणसो मध्या अने पोताना पिता पण मळ्या पिताने 'पिताकी' कडी नम

स्कार कर्या पण पेसा पांचसोने शीलकुस भी-पदांच के अविवेकी करा शक्तों। अ

गर ध वेणे वे पांचसोने पण 'पिवासी '

भोसाल्या नहि य पोताने 'पितानी' नहि करेवा माटे ने ५०० माणसो वेने मीना

कहा होत तो ते दहापण कर्युं कहेवात ?

पिता तरीकेनुं अभिधान अने सन्मान मा
त्र तेना ज माटे छे के जेणे जन्म आप्यो

होय तेमज जेओ एवा उपकारी नथी ते
ओ पण थुंकवा लायक अने 'नीच-दुष्ट'

, आदि गाळो वहे अपमान पहोंचाडवाला
यक तो नथी ज

(३) अभिनिवेपिक मिथ्यात्व.

कोइ मनुष्य वीतराग देवनो धर्म पा-मी, सूत्र मणी अंहकारे चही जाय अने द्रव्य खातर अगर एक वखत पोतानी थ-येली मृल उदाही न पहचा देवा खातर अगर एवा कोइ आशयथी श्री वीतराग

(१७२) प्रकरण ७-मिध्यास

देवना बचनो उत्यापे उत्युक्ष परुपणार्थं क(१) 'तिखुक्तो' ना पाठमां अने कीमी वणी नगाए 'बेर्य' छब्द खुक्छो 'क्तान' ना अर्थमां वपरायको छता तेन'मूर्वि'मा अथमा छर्ने तथा 'निश्चप'नो तक्षन अव्यो अर्थ छर्ने केटकाक मासुप पयरानी पूना पठिषा अर्थ छर्नो छोमो प्रेयो कथा (२) सुरोपियन पडीत हर्मन केकोबीए भाजारीम सुननो अंत्रमी तरस्त्रमी कृषी तेमां

भैन सापुने मांस सापुं कहरें एवं। अर्थ कमी भा बन्ने स्थातमां करक एटको न के,पहेका स्थातमां नाणीवृत्ती अपराभ (mtentional armo) प्या हे सेने बीना स्थातमां पुरुष मां अमावे आतान हे अंबहारमां कोहरू देवस दिश्क आवरों, पण बोळा कह सनवा रामा किटका वादिती वारती आंवबास्मने मण्ड

सर्विपण ग्राकरी शक्तो ?

करे ते मनुष्य 'अभिनिविषक मिथ्यात्वी' समजवा. 'गोसाळो' अने 'जमाली ' आ वर्गनां सुप्रसिद्ध दृष्टांत छे.

वखतना वहेवा साथे, लगभग सर्व ध-मीनां शास्त्रोमां घालमेल थइ छे. अने जै-न सूत्र पण कुदरतना कानुन व्हार नथी तेमां पण एमज वन्युं छे अने तेथी शुद्ध (Unmixed)सत्योजाणवा-मेळववानुं काम, जेवखतमां सूत्रो अक्षर रूपमां नहोतां मुकायां ते वखत करतां पण वधारे मुक्केल थइ पहसुं छे.

अभिनिविषिक िष्ण्यात्वी जीवो वनी श-के त्यां सुधी तो अमुक शब्द केवाक्यनो अवजो अर्थ ज करीने पोतानो मत चलावे

(१७४) मकरण ७--मिध्यात्व

छे: पण ज्यां एवा वे अर्थ थवा अश्रम्य शाय छे सां शब्द के पान्य प्रभारता के पटाइवानो धम छेता सरा पण अचकाता

नवी केटसाक तो कपोळकविपत शास रची तेमां में कही बरस उपरनी वारीख सली रचनार वरीके प्रराणा प्रम्यात पैडीत के महात्मान नाम रुखी तेने ममी नमांदारे छे भने शिष्योंने को छे के

सो के पांचसो वरस सुपी आ प्रय बहार कारको नहि पाछम्पी ए पुस्तक महात्मा

नी मनादी तरीके माध्र आस्पायी ज प् भाय के

आ बहुनसमारी जनो लरेखर ममावे

नी जीवनी क्याने पात्र छे तेमणे तेमन

नम्र भावे छ्वोघ करवी अने जो शिखा-मण आपनारी छगरीनो माळो वांदराए तोडी नाख्यो एमकरवातेओ तत्पर थाय तो बहेतर छे के चुप रहेंचुं अने दुनिया तेम-नाथी फसाय नहि एटला माटे मात्र-साचा मार्गना उपदेशने प्रसराववो.

(४) संशायिक मिथ्यात्व.

"वीतरागनी परुपेटी धर्म, परुपनारने पक्षपातनु कांइ कारण न होवाथी, ठीक तो जणाय छे; पण सोट आनी साची हशे के केम ?" एम मनपां शशय राखे अने निश्रयपर न आवे,निश्रय करवा माटे उद्यम-शीटिज नथाय: एवाने 'शंशपिक मि-ष्यात्वी' कहेवाय छे (१७६) प्रकरण ७-मिध्यात्व

समनी घणीएक बाबतो उपर विचार करीने सत्यवानी साभी करी होय एवा

जनीप कोड कोड पात समजवामां न आपे तो सशयमां पढ़ी सम्यक्त्वने मधीन न करता, पण विचारशाक्ति फोरवधी वि चारशक्तिमां असीकिक-अनुपम सचा र

हेसी छे दुनियानी मोटी मोटी घोषो वि चारशक्ति फीरबयाना महापेत्र यह छ माटे रदतापूर्वक विचार कर्यो करवी तेर्मा

वंदा उतरंत्रु शोपण मो पूर्वश्रमना योगे पोतानी शक्ति लगभग नकामी अध्य पढे

नो काइ पंडीवजन पासेची संग्रयनो सु

लामा मेळपया तेम छत्रां मुखासी न थाप

तो पछी ' तुमक मच ज जोणह प्रेड्स "

अर्थात 'तमे ज साचा छो-तमे कहुं ते सत्य छे', ए श्री ' आचारांगजी 'नुं वाक्य बोली ते नहि समजायली बावतने एम ने एम अभराइ (छाजछी) उपर मुकी देवी. "ते समजवा जेटला क्षयोपसम नथीः ते ज्ञान मने मळ्यानो हजी वखत पाक्यो नधी" एम विचारबुं अने ज्यारे एकाएक तरंगथी या मुनीना बोघथी या कोइ बीजी रीते ते वातनो खुलासो मळवानो जोग होय त्यारे अभराइ उपरथी तेने नीचे उतारवी.

अरुणास्त्र अने एवां बीजां चमत्कारी वाणो के जे एक, फेंकवाथी सेंकडो यह जतां, वगुर बळदे चास्रतां विमान, अभि-

(१७८) म्करण 🌭 मिध्यात्व मन्युनु कोटायुद्ध : विगेरेने भाषणे आज-

सुची इची कहाडता इता एण जनरी दोपो. रेक्षे गाडी सेन बलन, सहकरनी स्पूर रचना आदि भाषमे मत्यक्ष जोइपे छीपे सारे आपणी मयमनी मूर्सामी उपर इसम्

आच्या वगर रहेतुं नयी नगरनी साम अने बाजी गसीचीनां पंद्रमो (Germa) दरदो चत्पम करे छे. ए सिद्धांव मैन सुप्रमा छे. पण भामना बाकटरोप साबीत कर्यो ते

पहेला देने कीए माग्ये न मानतु पृथ्वी द-का मेत्री नवी अन सूर्यनी आसपास फ रती पण नथी, ए सिद्धीत यर्गियन धी

पकोना मत्तवी विरुद्ध अने फैन मतने य

नुमार छवां सुद नैनोनो ज मोटो माग

शंकाशील हतो अने छे. पण छेक आधु-निक शोधकोए अवलोकन अने प्रयोगोथी ए वातने सिद्ध करी छे अने ए सिद्धांतनी तरफेणमां अंग्रेजी पुस्तको पण छपायां छे. 'पृथ्वीनो-पाणीनो ने वनावोनो कर्त्ता इश्वर होबो जोइऐ ' एवी मान्यता घणाखरा धर्मीनी होवाथी अने ते धर्मावलंबीओनो सहवास जैनीओंने घणो होवायी खुद जैनो पण 'इश्वर करे ते खरुं,' 'राम राखे तेम रहेवुं ' विगेरे उद्गारो हालतां चाल-तां काढे छे; पण 'वाइवल' पक्कुं शीख्या पर्छी विद्या (Science) ना अभ्यासमां जोडायला यरियम विद्वानीए जक्ष 'वा-

* प्रोफेसर ज्हॉन वुइल्यम् ड्रेपर M D.,

(१८) मकरण ७-मिध्यात्न इवसंने जुदु पाडी दाससा दलीसो सहित सावीत कर्ष्य के के. पृथ्वीनी भावि होड

धके ज नहीं अने तेनो कचा सभवे जनहीं

भेम नेम विद्या (Science) नी अम्पास स्त्रीसवो अधे तेम तेम मैन सिद्धांवो वधा-रे मकाञ्चमां आपता जन्ने आयी पम सि-द याय छे के, कैन पर्यने सैनो अने इ निया समनी शके एटला माटे मयम भैन स्त्रोनो अभ्यास करीने प्रश्री क्षिया (Same)नी चरी भरी शासाओना अम्पा स पा**ए**ळ केटहाक जुवानी माओए म**बर्ड ए** पर्णु म भावदयकीय छे श्रीयंत भागेवा-नोप आदी गोठवण करवा बखद स्रोपो

जोडतो नवी

(५) अनाभोग मिध्यात्व.

जेने धर्म-अधर्मनुं के जीव-अजीवनु कांइ ज भान नथी, एवा वालवत जीवो 'अ-नाभोगी मिथ्यात्वी ' छे ए वर्गमां ऐकें-दिय, वे इंद्रिय, ते इंद्रिय, चौरेंद्रिय, असं-क्षी पचेन्द्रिय * अने ते उपरांत अज्ञान मनुष्यो : एटलानो समावेश थाय छे (६)लोकिक देव-धर्म-गुरू गत मिथ्यात्व.

(अ) लोकमां जेने देव मनाय छे पण जेनामां 'देव'ना गुण नथी एवाने मानवा पूजवा ए 'लोकिक देवगत मिथ्यात्व' क-

^{*} जेवा के पांपट, काकाकीआ विगेरे.

(२८२) प्रकरण ७—मिध्यात्व

हेवाय पोताने समानती जीव कहेबटाहे अने फ्रान मसगे गणपतिन् पूनन तो पुके

नहि, बानेवारे इनुमानने तेल घडावे,अं बा-मवानी-पीर-पेगबरनी मानवा राखे.

एएं 'छौकिक मिण्याल ' सरेखर जैनोने नीच फोबरावनारू छे जुदा जुदा देशीर्पा गणपाते, इतुमान, मतुवा, भेरुकी, गुरफ देव गोगो, आसपास, रामदेव(कातुवा), बहुचर, भवानी, दूखना, खंबा,शंगळाज, पीर-पर्गवरनी कबरो, मेघमान्धी आदि कु-

क्देव: विगेरेने पर्मदेव तरीके मनाय छे; परन्तु,भी बोतरागनो 'आत्मर्दाधय'नो सि-दांत न सा सर्व देव-देवीओपी दर रहेवा फरमावे छे

(व) एवीज रीत होकिक पर्वने लाभ थवानी लालचथी मानवा–पाळवा ए'लौ∙ किक धर्म गत मिथ्यात्व' छे. लाखा पड-वो, भाइ वीज,अक्षय तृतीया,गणेशचोथ, नागपंचमी, उभछट, शीळीसातम, ज़-न्याप्रमी (गोकळ आठम), अक्षयनवमी (रामनवर्गा), दशेरा, भीम एकादशी, व-त्स वारस, धनतेरस, रूप चतुर्दशी (का-ळी चौदश),दीवाळी, होळी, नोरतां : वि-गेरे तिथिओमां पूजा-निवेद- ब्रह्मभोजन आदि कार्यो करवां ते ' लौकिक धर्मगत मिध्यात्वी' नां कार्यों छे. दशेरा मात्र आनंदनो मेळावडो छे---

अश्वोनी परीक्षानो अने तेमने हरीफाइमां

(१८४) प्रकरण ७--भण्यात चतारी तेम रास्त्रता माटे निर्मेको दिव स छे; भनतेरस घरेणांगाठा साफसुफ करवानो अने भन संभाम्यानो दिवस छै,

होळीनो भहको माघ ह्वापांना तुक्कान कारक श्रदुयोनो चप्टून श्रदकावया गाटे छे, द्वाबाळी प्रवापिक हिसाब करमानी वस्त छे। आम प्रणासरा बेहेबारो मुळ

धो संसारव्यवद्दार अर्थे निर्मायछा; पण तेमा पंपा पगरना युक्तियाज व्यदेशकोए पर्मनु नाम पुनादी दीधु अने पर भयमां तेयी पनपुत्रादि मध्ये एप्रंसोकोने उसान्यु

तेपी पनपुत्रादि मध्ये एक्ट्रेसिकोने उसान्यु जेना पेर पोडाओ हाप तेमो देखेरा ना दिवसे पोडदोड कर एथी कॉई 'छी-किकपमंगत मिध्यात्वी' कदेशय नहि, प-

ण वीजाओ ते दिवस जे 'समीपूजन' करे छे ते विगेरे कामो करे तो अलवत मि-ध्यात्व खरंज. आ न्याय घणी वावतो छ-पर लगाडी शकाय यतलव के, संसार व्य-वहारना खपयोग अर्थे जे करवं (पण तेमां धर्मबुद्धि के प्रभवमां तेथी लाभनी आज्ञा े बीलकुल न मानवी) तेमां मिध्यात्व नथी परन्त जोशीना कहेवाथी वांका ग्रहने सीधा करवा माटे जाप जपाववा. ' गोर-णीओ' जमादवी, यरनारना नामथी 'ब-सभोजन' आपदुं : ए सर्व चोरुखं मिध्या-त्व ज छे आहा ! जैन धर्म आ स्पर्धायय जमानामां-रळवानां साधन कठण थतां जाय छे एवा जमानामां केवो उपकारी

(१८६) प्रकरण ७-।मध्यात्व

गति बहोरी छे छे तेओ सरेसर ' दुःसना दोस्त ' न होना ओहए! (क) वाना-मेरागी-भाट-प्राझण-छी किस गुरु,फकीर विगेरेने मानवा-पूजना ते ''छीकिस गुरगत मिथ्यात्य'' कोहनाय छीकिस ग्रह पटले के पर्म सिनायनी

यह पढे सवो छे! छतां जाणी जोइने व जियो आ सवमां तकतान सने परमयमां क्र

चपकारी दो खरो हेनो घदको आपयो प् आपणु कर्षच्य छ पण धने पर्मेद्वव्वियी गुरु न मानवो दोम्झ मातापितानो बिनय करवो, तेमनी सेमामुक्ति करवी ए विगेरे

वेमना उपकारना बदलामां करम ए पुष

वीमी पावतो शिसवनार गुरु ते आपणी

नी फरज छे अने श्री जीनदेवे तो गर्भमां पण माताने रखेने दुख थाय एम समजी शरीर पण फेरव्युं नहोतुं अने पाछळथी पण मातानो अत्यंत पेय जोइ पोताना वि-योगथी तेमने महादुःख थशे एम मानी ते-्ओना मृत्यु मूची संयम छेवानुं मुल्तवी रा-एयं हतं ए वधं छतां—जैन मार्ग एटलो विनय वोघे छ छनां—' मातापितानी भ-क्तिथी मने मोक्ष मळशे ' ए मान्यता जै-न मतने मान्य नथी,

(७) लोकोत्तर देव-धर्म-ग्रहगत मिध्यात्वः

(अ) लोकोत्तर एटलेलोकमां मताता

(१८८) मकरण ७--मिध्यात्व (सौकिक)थी जूदी धरेइना; स्रोकोत्तर देव प्टले लोकमां मनाता, गुण विनाना देववी

भुदी तरेहना एवा स्त्री पीतराग देव एका भीतराग देवने वदसे देवनी मूर्तिने माने-पूने प 'स्त्रोकोत्तर देवगत मिध्यास्य ' तेमम 'मारु अमुक काम यशे तो हुं

देवनी मोटी पूजा कराबीश,छत्र चढावीश विगेरे मानवा० राखे है 'सोकोचर देवगत मिष्यात्व' छे ते महान् वेषने येषताइ छ इनी तमा नधी हो आपणा दींगला छम

नी भी गरम होय? बने से परमदशलु-

समहिष्ट मसने मन हो मानवा रासनार

मनुष्य अन मानता राजनार घडारे छेते

मारवादमा वेने बोखवा 'क्टे छे

फुल: ए बन्ने पर एक सरखो दृष्टि छे.ग-रीव विचारा! निराभिग्रही,मालमिल्कत तो शुं पण एक अणु जेटली पण चीज नहि राखनारा देव पासेथी धन-पुत्र इच्छनारा केवा भूला भमे छे!

(ब) एवी ज रीते छोकोत्तर धर्म एटछे निरारंभी जैन धर्म तेने संसार इदिए— स्वार्थ अर्थे उपयोगमां हे, जेमके श्री ती-र्थंकर देवनी जन्मादिक पांच कल्याणीक तिथिओ तथा अष्टमी-चतुर्देशी-पौर्णिमा-चंदनबाळाना तेलाः इसादितपस्या,कष्ट नि-ृवारण अर्थे करे, अने लोभ-इच्छा सहित आयंवीलनी ओळी करें: ए विगेरे करनार 'लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्वी' कहेबाय

(१९०) मकस्म ७-मिध्यास्य 'स्रोकोत्तर पर्मगत मिध्यात्व' तु प

क नयुकाम इमणा इमणा कैनोमा दास स वदा साम्युं छे प 'दोड्ड' पाप' घणा ने मूलायो सवरावे छे जेनो दाग्र रगन काळो होय दे दो सरद पकडी शकाय,प ण आ 'दोळा पादे' स्वयमीभिमानना

ना आ 'बोळा पारे' स्वयमीभिमानना नामे छोकोने स्रोटा रस्ते चढानदा मां क्या छ हमणा बोह्र थयां 'कैन कमिपि' श्रुठ यह छे तेमा सु किया थाय छे ! हिं साना विचारची पण दूर नासनार सीर्थ

कर देवना नामधी जळनी आहुति अपाय छे! गण्या गणाय नहि एटका अधिका यना अने अपकायना धीवोनो संहार द यामय शांतिनायना नाम वपर याय छे! गरकन्या वे जीवने भविष्यमां सुख आ-ग्वा माटे निर्द्धोभी देव आगळ संख्या व-गरना जीवोनो भोग अपाय छे ! तेमने सं-तान अने सांसारिक सिद्धि आपवा माटे निरारंभी प्रभने प्रार्थवामां आवे छे ! के-वी जबरी मोहद्शा! केबो जबरो परस्पर-विरोध! तीर्थंकर देव अने तेमना धर्मनं आ केवं जबरुं अपमान ! केवं कदरुपं ध-तींग! धर्माचार्यी कदी लग्ननी विधियोजी शके ज नाहे.

गणेश-गणपित आदि देवोनी पूजा आपणे छोडवी जोइए, ए रुडा हेतुथी ज कदाच आ धर्तींग दाखल थयुं होय एम आपणे स्विकारीए; तोपण 'वकरं काढतां

(१९२) प्रकरण ७-निध्यास्य चंट पेसे ' एवं करग्रं वे श्रं सक्कं काम छे! प करवां वो नरनन्यानो इस्तमीछाप क रानी, भनसमुद्द समझ वर अने बन्या ए

क बीना तरफ निमकद्दछाछ रहेवानां व

चन छे ('सप्तपदी' मां छे सेवां) अने पछा कुरूपीओं के स्तेहीओने शीव मो-जन आपर्रः पयो कांद्र अ रीवान कर्यो

होत सो तेओ पर्या स्पारक'व हेबात : एयी सांसारिक साम जपरांत विष्यात्वधी प चवानो साभ पण थाव चित्रस योगना योगी आपशी एकांड मार्ठ अप्र भयोजन मधी पणा शुकारकोए ए कता मळी एक विचार उपर आधु जरानुं

वे --- प्रमाणक

(क) 'स्रोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' सं-वंधी पण ए ज ममाणे समजी छेवं. जैनम्र नी सरखो वेश राखे पण ('पंच समिति'-'त्रण गुप्ति'–'ज्ञान' आदि) गुण रहित होय अने जीनाज्ञाथी विरुद्ध परुपणा कु-रता होय, छकायनी कुटी करे-करावे, पोता अर्थे चीज वनावरावे अने खरीदावे गृहस्य (घरवारी) साथे आलापसलाप करे, 'आ काळमां शुद्ध मार्ग कहीए तो तीर्थनो उच्छेद थाय, माटे चालतं होय तेम चालवा दों' एवो उपदेश करें : आवी जातना साधुने गुरू करी याने ते 'छोको-त्तर गुरुगत मिथ्यात्वी ' कहेवाय दृष्टांतः -- श्री '' उत्तराध्ययन सुह

(१९४) प्रकरण ७—मिध्यास्य

अध्ययन २३ मां केशी स्थामी-गीत्तम

स्वामीना संवादना अधिकारमां कर्षु छे के, " पहेमा तथा केन्छा तीर्धकरना साध्यो-

सफोद बस्न करने " सेमन भी "भाषारां-गमी '' मा श्रीदमा अध्ययनना वीजा च

ने 'मानोपेत'#तथा एक ज वर्णनां अर्थात

देशे स्पप्त कम्र से के:--'णो घोएच्चा णो रहरना. णो घोयरत्ताई वस्थाइ घोरज्ञा अर्थात, साधुप 'बख पोबा नाहे.रगवा नहि रंग्यापाया पक्ष पहेरबा नाहे': छता जेगी मास रंगेस्रो क बस पहेरे छे अने वेग छता बबी पीताने नैनमुनी तरीके कहाबे छे, ए-टलेची ज नहि महीच पामतां सफेद पस अमृक संबाद पहोळाइनु मान (माप)

नताल्य छ ते मनाणे

धरनार साधुने कुसाधु कहें छे, तेमनी नि॰ दा करे छे, हरेक रीते तेमने रंजाडवामां आनंद माने छे: एवाने ग्रुरू करी मानवा ते 'छोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व ' छे. वी॰ तराग—राग-रंग वगरना तेनां अनुया-यी साधुने वळी राग-रंग क्या ?

वळी केटलाक जैन साधुना नामनी 'मानता ' राखवामां आवे छें, पाटे रूपि-या मुकाय छे; ए, एक जबरुं ' छोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' छे. आवी मानता स्वि-कारनारा अने मानतानो उपदेश करनारा जैन साधुओ मात्र वेशधारी छे तेओ ते रुपिया ज्ञान खाते वापरे छे अगर वपरावे छे एवं वहानुं चनावे छे;पण ज्यां ए रस्तो ज तद्दन खोटो त्यां पछी तेना उपयोगनी

(१९१) प्रकरण ७--मिध्यात्व पात न क्यां रही ? गणिकानो भभो करी

रळेको पैसो मधामोजनमा खरभी ए रीते पाप पोबानी आशा राखनारी मूर्ख स्त्री जेप प बहानें छे

(८)क्रपावचानिक देव धर्म-ग्रह्मात मिथ्यात्व

स्रोकिक देव अने कुमान्यनीक देवमाँ

वकायत ए के के सौकिक देवने सां-सारिक मुम्बनी आधाप मनाय छे-पुताय छे। यने कुपायसनीक देवने मोहानी आश्वा

ए मनाय छ-पूजाय छे

हरि, हर, प्रका, विष्णु, महेश, राम

(१९७) सम्यक्तव.

चंद्र, वालाजी, विगेरे देवों के जेना गुण-कथनमां स्त्री-मोह-क्रोध-विगेरे अवल दर-जो भोगवे छे तेओने जे लोको मानेछे तेमना-मां 'क्रपावचानेक देवगत मिथ्यात्व'समजुद्धं, अलवत ते माननाराओं तो कोई आली-कना सुख अर्थे तेमने मानता नथीं पण मोक्ष अर्थे माने छे; परंतु तेओनी पसंदगी खोटी छ ते देवो पोते ज मोक्ष पाम्या न-थी तो मोक्ष वीजाने पमाडवा केवी रीते समर्थ होय ? तेमज होम, जाय, यज्ञ, सूर्यने वस्ती-

दान, पूजा, दीशा पींखवी विगेरे जे कि-याओ धर्म बुद्धिए करे छे ते पण "क्रुमा-वचिनक धर्मगत मिथ्यात्वः समजवं

(१९८) प्रकरण ७--मिध्याख अने एवी ज रीते सन्यासी, जोगी,इ घा, परमहश, रामह्नेही, स्वामी नागयण

ना साधु,दादुपंची, पादरी, जगम, अती त, रामानुवावी, मामुभदः भादिने पम गुरू करी मानदा से ' कुपापचनिक गुरू

गव ' भिष्यास्य समज्जु 🛩 'स्रोकिक मिध्याख' आरोकना 🗓 च भर्षे भूषा भगवा<u>त</u>ं काम छे-भने 'क्र-मारचनिक मिथ्यास्त्र'ए मोझ माटे भूमा

मपपानं काम छ (९) पीतरांगे के बच्चे ते करतां ओख पहुंचे ते पिष्ट्यारम् नव्यू केपके, श्री मीतरागे

पक भीपना असेल्यात महेश व बा एवा 'उ पराइग्रम'मां मान नि इपनी भविरार पा

(१९९) ल्यो छे, जेमांना तीसगुप्त आचार्यना म-तानुयायीओए एक ज चर्मपदेशने जीव मान्यो-परुष्यो;ते 'ओछी परुषणा' कहेवाय.

(१०) वीतरागे कहयुं ते करतां अधिक परुपे ते दशमुं 'अधिक परुपणा मिथ्यात्व'. भगवंते श्री 'ठाणांगसूत्र' मां जीव अजीव एम वे रासी परुपी छे छतां श्री'उववाइ-स्रुत्र'मांना ७ निन्हवमांना रोहगुप्ते 'नो-जीव-नोअजीव ' ए नामनी त्रीजी ्रासी परुपी ते 'अधिक परुपणा' कहेवाय. (११) वीतरागे कह्युं तेथीविपरीत (वि

रुद्ध)परुपद्धं ते अबीआरमुं'विपरीत परुप-णा मिथ्यात्व' दृष्टांतः-आपाढाचार्य दे-वैलाक जवा छतां शिष्यो उपरना मोहने (२०) प्रकरण ७-मिथ्याल सीपे पोताना एत शरीरमां मवेश करीने शिप्योने अभ्यास करावधी जारी राख्यो काम संपूर्ण यया पछी वेओ श्रिप्योने प्राय-श्रीत आपी पोवाना ठेकाणे गया त्यार्थी

धरीरमां देव आबीने रहेता इही माटे हे-भोए कोइ पण मुनीने बादवा-नमवा-वि-नय करवार्न मोडी चारुष अने बीजामाने पण पुषी क परुपणा करी

ते विष्यों ब्हेम खाइ गया क सर्व मुनीकोना

(१२) नीयने अमीव सर्देष्ठे ते मिथ्यास्व (१३) अभीवने जीव सर्दंहे ते मिध्यास

(१४)इयाभमन अधर्म सर्दे हे निष्यात्य

(१५) हिसापर्मने वर्ष सुद्दे हे मिष्पास्य (१६) - ज्युण सरित प्रवता साधने में ज्ञानथी अथवा मताग्रहीपणाथीअसाधु कहे ते मिथ्यात्व.

(१७)२७ गुणरहित साधु होय तेने साधु कहे ते मिथ्यात्व

(१८) कर्म खपाववानो जे मार्ग, (ज्ञान दर्शन-चारित्र-तप रुपा) तेने उन्मार्ग अ-थवा कष्ट कहे ते मिध्यात्व.

(१९) इन्मार्गने मार्ग कहे ते .मिथ्यात्वः (२०) अष्टकर्मथी मुक्काणा एवा श्री ऋ-पभदेव,श्री रामचंद्रजी आदि पाछा संसा-रमां अवतार छे छे,एवु सर्दहे ते मिथ्यात्व.

(२१)कर्मधी नथी मुकाणा एवा ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि:तेने मुक्ति ग्या सर्दहे ते मिथ्यात्व

(२२) मकरण ७-मिध्यात्व (२२) ' अविनय मिध्याख ' साधु, सा

ध्वी श्रापक श्रापिकानी अक्रिनय करे-कवधीपणुं करे-निंदा करे-छीद्र नोयां क रे से ('कुलनालुमा' साधुनी पेटे)

(२३) ' आसातना मिष्यास्त ' अरिहत सिद्ध-माचाय-स्पाध्याय-माध-साध्वी-श्रावक-श्राविका-सम्बक्ती देव देवी-ग्र-भनी बांचणी देनार इसादि धर्मीश्रीवनी

३३ पैकी काइ पण मकारयी आसातना मदेर ते (२४) 'मफ़िया मिध्यास्त्र' शुप्क बेदा

म्तीनी मापक कहे के,"भारमा सी परमा-.

स्मा ' माटे किया करवानी महर नधी ".

एपं बरे ते

(२५).' अज्ञान मिध्यात्व.' उंधुं जाणे— देखे—परुषे अने कहे के, " ज्ञान भणे शुं थाय? ने जाणे ते ताणे; अजाणने पाप न लागे *" [पण समने नाह के अजाणे झेर खाय ते पण मरे छे जाणीने ज्ञेर खा-नारो, पण मरे छे खरो तथापि जो ते व-खतसर पस्ताय अने दवा करे तो बचवा संभव छे.]

[ं] ऋ कायदो पण अज्ञानतानु बहानुं स्विका-रतो नयी

(२ १) मकरण ८—श्रोताना मकार मोती नाई तो भोतीनी नक्कल द्वरण हर पकडे छे

प्नीन रीते भीद मकारना ओवानी ना मनभी एक ज बात जुदा जुदा अवर्धी भगमें छ पूर्मा कोई आधार्य युवा नेई न बीतिमन तेपी बूळ बात कोई लुडी यती नवी

(१) शिस-पन पत्।-पध्यर जगर,भा रेमा बारे गणाता 'पुष्कर सन्तर्भक्ष'नेम् मु सम्भ पारा सात अहोरामि पहे तो प्रभ पष्पर पसलेनि ए रष्टित केन्साक शो सामोने जम्मोत्तम गुरु मज्जा अतिवेशी

बीलकुरु पूस्ता नधी (क्यारे काली सूपि समान केटलाक सीधो बोडा बरसा-रू अथवा उपदेशन पण श्रद्ध श्रद्ध करी

सम्यक्त्य. (२०७) (२) कुंभ वत् :-कोइ कुंभ अथवा घ-हो तळेथी काणो, कोइ पहखेथी काणो, कोइ कांठा राहित अने कोइ संपूर्ण होय छे. तळेथी काणो घडो ज्यां सूधी आडो हाथ राखीए अगर जमीन साथे वरावर चोटेलो राखीए त्यां सूधी तेमां पाणी रही शके छे, अने आधार दूर थतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रो-तामां, उपदेशक पासे होय सां सुधी असर रहे छे पण उपदेशक जृदा पडया के तेनी साथे ज घोवाइ जाय छे.पडखे काणा घडा-मां थोडुंक पाणी रहे छे अने कांटा रही-त घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे. परन्तु पुरेपुरुं जळ तो अखंड घंडामांजरही

प्रकरण ८ मुं

बी 🎢 तराग नोंच ' अथवा निप्पन्न अअॐ पात सस्योनं कथन चपदेश-

को मारफत अने छातिया तथा छापलानां मारफत संख्याबप मनुष्यो पासे रहा बना छतां दनियानी भाटली मोटी माग इनी

समान केम छे अने ए 'शीतराग नेंभि'ना

ज संबेषमां केंचाखेंची केम चाकी रही छे.

ए एक स्वाभाविक मध्य छे तेयल ए मध

कांह सर्वज्ञानी देवनी राष्ट्र बहार नहतो

मभ एत्यम् यया पहलां न तेजोशीय श्री

'नंदीसूत्र'मां तेनो खुलासो करी राख्यो छे.

ए सूत्रमां एक गाथा छे, जेमां चौद पकारना श्रोता गणाव्या छे आ गाथा एम सूचवे छे के, विविध स्वभावना मा-णीओ पोतानां कृतकर्म अनुसार मळेली , बुंदिना मतापे एक ज वस्तुने जूदा जृदा रुपमां जुए छे अने समजे छे. स्वाती न-क्षत्रमां पडेलुं वरसादनुं विंदु अमुक छीप-मां पडवाथी महामृली मोतीनुं रुप धारण करे छे, ज्यारे तेज वरसादनां वीजां टी-पा समुद्रमां पडी खारु पाणी वनी जाय छे;वर्ळी ते ज वरसाद कादवमां पडी का-द्वमय पण वनी जाय छे; तेमज वळी ते ज वरसादनां टोपां वनस्पति उपर पडी

(२६) मक्तरण ८–भोताना मकार मोती नाई तो मोतीनी नक्कछ द्वरूप रूप

पकड़े से एबीम रीते चीद मकारना भोताओ ना मनमा एक न बात जुदा जुदा अर्थमी मगम छ एमां कांइ आधर्य धना नेतुं न

यी, वेमन तेथी मूळ बाव कोई सूठी यती नधी (१) शिस-धन बत्:-पथ्यर चपर,भा-रेमां मारे गणातो 'पुष्कर सपर्वक'सेप स

सम्भारा मात महोराभि पडे तो पण पच्यर पसले नहि ए रष्टति केटलाक औ वाभोने उचमोचम गुरू मळबा छवां वेभो **वीलकुरु बुद्रता** नथी (ज्यारे काळी मृषि समान केन्छाक जीवो धोडा दरसा-

द अथवा उपदेशने पण झह प्रदण करी

से छे)

(२) कुंभ वत् :-कोइ कुंभ अथवा घ-हो तळेथी काणो, कोइ पडखेथी काणो, कोइ कांठा राहत अने कोइ संपूर्ण होय छे तळेथी काणो घडो ज्यां सूधी आडो हाथ राखीए अगर जमीन साथे वरावर चोटेलो राखीए त्यां सुधी तेमां पाणी रही शके छै, अने आधार दूर यतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रो-तामां, उपदेशक पासे होय सां सुधी असर रहे छे पण उपदेशक जदा पहया के तेनी साथे ज घोवाइ जाय छे.पहखे काणा घडा-मां थोडुंक पाणी रहे छे अने कांटा रही-त घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे परन्तु पुरेपुरं जळ तो अखंड घडामां जरही

(२०८) प्रकरण ८-श्रोताना प्रकार शके छे तेमन बळी ते जब अवान पण करतुं नथी, छसकातुं पण नयी एवीज रीते केटलाक भोवा पूर्ण चपदेश प्रदूश

करे छे; संपूर्ण घडानी अंदरना सर्व पुद्-

गळी बेम मळवी शिवज वने छे तेम वेश श्रोताना अंतरमां रगेरगे उपदेश सागी श्राय छे अने तेओ एसकार शता नयी। भौवळ करता नदी। परन्तु वीनानी हपा मटाडे हे.निर्भेट करे हे अने शानित आपेहे बळी पण घटाना घणा प्रकार छे की-

इ घटने अंदरपी सुनासीत (सुर्गपीदार) द्रभ्यमी सीपेसी अयवा बनेली होय हो वेनी अदरत् मळ पण सूर्गभीदार मनशेः

भने जो भदरधी दूर्गीय पदार्थथी सीपे

हो के बनेको इसे तो अलपण तर्म प्रमान

वळी, काचो कुंभ इशे तो सहज फांसी प-डशे अर्थात् फुटी जशे अने परिपक्त हशेतो सारो चालको ए ज प्रमाणे श्रोताना स्वनाव मंबंधमा समज्ब (३) चारणी वत्ः—चारणीमां पाणी

नाखीए तो तेमाना सख्यात्रंध छोद्रो वाटे ते नीकळी जाय छे तेमज मोह, मत्सर, प्र-माद ख्यादि छाद्रो वाळा श्रोता गोना हृदयमा रेहातो सर्व उपटेश ए छीट्रो वाटे तत्क्षण

वही जाय छे (४) सुग्रदीना माळा वत्:-विची-क्षण प्रकारना घर अथवा माळा वाधवा माटे

परुपात थयेली सुग्रही अथवा सुघरीना मा-ळामां घोविगेरे गाळो शकायछे; अथीत् चोरुखु

घी तेमायो वही जाय छे अने तृण, काष्ट्र

३१० प्रकरण ८-श्रोताना प्रकार कचरो शादि चानाने वेपनडा राखे छे ते

भीक रोते प्या पण श्रोताओं छे के लेगी उपरेक्षनो क्वाम भाग मही कवा दे छे अने तेनो क्यारे ज श्रहण करे छे (५) हम ब्लान् - सुग्रहाना माळाधी उलटा मकारनु काम हम करेछे मिश्र करेका दण-पाणामांगी दुष ज ते सुदुंपादा पीएछे

तमम जनम मोताओ उपदेशकना सम्योगां रहेमुं तत्व संवचा साथे म पातानुं कर्जन्य छ एम मान छ (६) महियो पत्र-महियो एटके मेंस रुपारे पाणा थावा तळावमां नाय छ सारे

पडें को नस्तक सींगडी अने पग बडे पाणी डोळी नास्त्रे छ, पछी मळगूत्र कर छे स्यार पछी ते न नळ पीए छे पोते निर्मळ पाणी पी शके निह अने वीजाने पीवाना पाणीने पण निर्मळ रहेवा दे नहि एवीज रीते केटलाक जीवो खरा उपदेशने डोळी नाखे छे अने ते डोळेलु पोते ग्रहण करे छे अने बोजाने पण तेमज करवा कहे छे. घ-णीए मस्तानी भेंसीए सूत्रोना शुद्ध जळने प्रथो रुपी सींगडांथी डोळी कादवमीश्र कर्युंछे. (७) वकरी वत्:--भेंसथी जलटा स्व-भावनी बकरी कीनारे उभी उभी निर्मळ जळ पीए छे तेमज ते वीजाने पीवाना पा-णीने डोळी पण नाखती नथी मस्तानी भें-सो तोफानने लीने वणा जनोनुं लक्ष खेंचे अने आ निरपराधी, गरीवडी, सीधे रस्ते जनारी वकरीओं काइ धामधूम न करती हो-

वाथी जनसमाजनी दृष्टि खेंची शके नाह

११२ प्रकरण ८--श्रोतासा प्रकार एमां कोइ सामय जेतु नयी सज्जना ता युद्ध जळन पीवानो स्थप करनारी पकरी

मानी प्रश्नसा प्रसी वधी करेछ क 'शक्स वहीं के मैंन' प्ची एक कद्याणी यह पदी छ (८) मधक मन् -मसन्य श्रयमा मसो -भुवा जना अगेर चपर वेसे छेतेनुं रुपीर

पीए छे, वेम केटसाक घोताओं एपदसक नज रखना पारे छे भने नुक्चान पर्धो पारे छे भगवा मद्यक एउसे पाणी भरवानी चामकानी मसग तेमां पक्त भगर पाणी

भरवाथी हमदाम श्राय छ पण उची पहना श्री तनां पहन्वां बसी जाय छे तेमज फेट

माक भाराओं ज्ञानधी कुमी जाय छ; पण जरा मर्च खाबाबी साखीलम यह शाय छे (९) जळो वत्ः—जळो जेना श-रीर उपर चोटे छे तेनं मुददाल लोही पी जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय छे तेमज, केटलाक श्रोताओ प्रथम तो उप-देशकने शंकाओ पूछीने घणी तकलीफ आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-योग करी तकलीफने सफल करे छे

(१०) विद्याल वत्ः—वीलादीनो स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय तो ते जाजनने जोंय उपर नाखी दूध दोळी-ने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरुं दूध पी शकती नथी पण अंश ज मात्र तेना जागमां आवे छे तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक पासेथी सीधी रोतं पूरुं ज्ञान मेळवे नहि, का-रण के पूछवा जवायी पोतानुं मान ओछुं २१२ प्रकरण ८-भोताना प्रकार एमां कोइ सामय सेसु नधी सज्जना ता

यद जब्जे पीवानो सप करनारी वकरी बानी प्रवसा पटसी वपी करेस क 'शकस वडी के मेंग' प्वी एक कहाणी पह पडीस (८) मसक वह -मसग्ग अथवा ससी

-जुना भना जरार उपर बेसे छेतेनु क्पीर पीए छे, तेम केटलाक खोताओ धपदेशक नम इसका पादेखे अने नुकलान परींघाटेखे जयवा मसक एटसे पाणी अरवानी

चामदानी मसग सेमांपयन अनगर पाणी मरवायी इमदोस्त्र शाय छे पण वर्धी पडवा-धी तनांपदस्तांवसी जाय छे तेमज कट

थी तर्ना पहस्तां बसी जाय छे तेमन कट सार भोताओं ज्ञानची फुसी जाय छ, पण जरा खर्चु खाबायी खाछीलम यह माय छे.

- (९) जली वत् :— जलो जेना श-रीर उपर चोटे छे तेनं मुहदाल लोही पी जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय छे तेमज, केटलाक श्रोताओं मध्यम तो उप-देशकने शंकाओं पूछीने घणी तकलीफ आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-योग करी तकलीफने सफल करे छे
 - (१०) विहाल वत्ः—वीलाहीनो स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय तो ते जाजनने जोंय उपर नाखी दूध होळीने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरं दूध पी जाकती नथी पण अंज्ञ ज मात्र तेना जागमां आवे छे. तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक पासेथी सीधी रोते पूरं ज्ञान मेळवे नहि, का-रण के पूछवा जवाथी पोतानुं मान ओछुं

२१४ प्रकरण ८—प्रांताना प्रकार थाय, पण बोनान अपाता उपदेशमांची किं

चित् ग्रइण कर अन एवा मुटणीया ज्ञानधी मानी पन

(११) सेमा वत् — सेमी भधवा नोळीओ प्रथम माताने पानी पछी बगळो मइ रमी रमीने बूच पवाव अने फरीबी घावे

अने पचाने; ए ममाण रुचतु रुचतुं द्व पीए अने पुष्ट याय ते एटक्के सूची के अवरा सर्पन

पण मान गाळ तेम भ, फटलाक मनुष्यो दा कि मुजब योडे योड अपदेश अवल करी ते

चपर मनन सन मिदिष्पासननी कसरत स्रे अने पछी द्याग≅ चपदंश अवण करे एम वि

शेप ने विश्लेष ज्ञान पाका पाये मेळवता जाय

अन छेवट ह्यानमां एटका मनवृत थाय के

मिष्यास्त्री मुनंगोनं मान मकावे

(१२) गो वत्: -- एक राजाए कोइ त्राह्मण कुटुम्बने एक गाय दोइ पीवा आपी. परन्तु ते ब्राह्मण आळम्न अने वेटरकार होवाथी ते गायनी सार संभाळ तेणे अगर तेना कुटुवे राखी नहि.कुटुम्बनो दरेक मा-णस एम समजतो के, दुध नीकल्झे ते आ-खुं घर पीशे तो मारे तेने चारो नीरवो वि-गेरे श्रम ज्ञा माटे उठाववो जोइए? एम कोइए पोताना माथे जोखम राख्युं नहि. छेवटे ए गाय प्राणरहीत थइ अत्रे राजा ए तीर्थकर तथा आचार्य; गाय ते साधु तथा शास्रो, अने ब्राह्मण कुटुम्ब ते जनमंहळ. भ-च्य पाणीओना हितार्थे,ज्ञानरुपीद्ध आप-नारी गाय अथवा साधुओं अने सूत्रो मळवा छता,तेमनो वयावश्च=विनय न्निक्त वरावर न २१६ प्रकरण ८-- होसाना प्रकार

यवायी हाननी आवक्त पण कमी यह मायछ (१०) जेरी वत् :--- भरीवाळो मा णस पोताना यासीकना हुकम मुजब हहेरा पनादे छ अर्थात् यास्रीकनो हुकम भेरी

द्वारा जगतने नार्देर करे छे, तेम केटबाक भोतामा उपदेशकनो बोध अवण करीने पछी ते ज ममाणे बीमाने बोचे छे

(१४) आहीर यत् — मरबाड गा-पनी सेवा प्रक्ति करे छ-नवराये छे-स्वराये छे अने पदकामां सने गाय दूप आवे छे, के ने मदे ते इष्ट्रपृष्ट याय छ तनी म रीते के

टलाक ओवाओ, ज्ञान आपनारा स्यागी वधा ससारी पपदेशको वेपम पुस्वकोनो विनय करे छे एटछे के, स्वागी उप

देशकने आहारादि आपे तथा विनय भक्ति

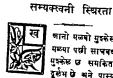
करे; संसारी उपदेशकने मानपान तथा जो-इती मदद आपे अने जे पुस्तक थी पोताने ज्ञान मळे ते पुस्तकनो वहोळो प्रसारकरे

आ ममाणे पोते उपदेशकनो विनय करे ^{अने} वदछामा तेमनी पासेथी ज्ञान मेळवी आत्मीक पौष्टि पामे

** भरवाडनी स्थिति सर्वे करतां **मुखी गणाय छे कविवर शेक्सापियर ए** स्थितिने घणा ज चळकता रंगमां चीतरे छे

अने स्वर्गनी प्रतिछाया माने छे

मकरण ९ मु



जानो पळषो मुझ्केस छे अने मरुवा पछी साचवतो पण मुक्केछ छ समकित पाम्बं दर्शम छ अने पास्या पणी सामगी राखन पण वर्सन छे

(१) कोइ जीव समकित पाम्या प**छी** कर्म बदययी शकादि कारणधी पढे, ते प डवानी स्थितिमां धच्चे (छेक मधीन पर प रवां परेखां)नी स्थितिः वेने "सास्वादान"

कहे छे पूर्व समकित एक भवमां संस्कृष्ट

सम्यक्तव. ^{पाच बार} फरशी मिथ्यात्वमां पडे ए समकित वाळो जीव अर्थ पुद्गळ परिभ्रमण करेपण अंते तो मोक्ष नगर पहोंचे.

(२) अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अं<mark>टोच तथा समिकत मोइनीय, मिध्यात्व</mark> मोह्तनीय अने मिश्र मोहनीयः ए सातने समा-विवा कमर वाथे एने 'उपशम समकित' किहे छे. एवं समितत पाचवार फरशे; अर्ध पृद्गळ परिभ्रमण करावी अते तो मोक्षन-गर पहोंचाहे (३) उपरनी ७ प्रकृतिमांनी केटळी-क मकृतिने बळेला काष्ट्रना कोलसा सरखी करवाथी "क्योपसम समकित" प-माय छे. ते समिकत एक भवमां उत्कृष्ट अ-संख्य अन् आवे. बीजा अने त्रीजा

समिकत भावीने नाय छे मने ए समिक याळा भीय आसरे माश्र पामे छ (४) चपरनी ७ मकृतिन मृळगरि

न दरन करे देने ''हायक समिकतं कहे छे घोषा-पांचमा नवरना समकित याळा जीयने एक प्रवर्ग एक जवारं

समाकित भावे ए अने तेकायम रहे छे अ माणी चरकुए त्रीने मबे मोक्ष जाय छे (५) 'सायक समकित' नी प्राप्ति मारे

पुरुपार्थ फरे हेना सागका समये ने बेद्

वे "वेदक समकित" वेनी स्थिव एव

पूरुपे १० मकारनी सोबस वर्मधी जोइदः

समयनी छे

समकित रस्तमी जाळवणी माटे खाना।

(१) 'पासथ्या' एटले आचारमां हीला एवा पुरुपनी सोवत न करवी

(२) "उसन्ना" एटले मात्र क्रियानो अंदिवर राखनारा अने ज्ञान-दर्शनना अ-

(३) ''कुशील'' एटले जेनो आचार युद्ध नथी तेवा पुरुषनी सोवत न करवी (४) "संसत्ता" एटले जे साधु, गृहस्थ

साथे घणो परिचय राखतो होय तेनी सो-वत न करवी (६) ''अपछटा'' अथवा स्वच्छंटी

(५) "अपछटा" अथवा स्वच्छंदी लोकोनो सोवत वर्जवो.

(६) 'निन्हव' एटले सात नय पैकी एक ज नयने वळगी रही पक्षग्राही वने (जमाळी माफक) तेवा नरनी सोवत न करवी. २२२ प्रकरण ९ सम्यक्तनी स्थिरता

(७) 'कवाग्रही' एटस स्थमति अनु
सार सुभनी अथ करी कोइनु कहेर्षु न म मानवे एवं पुछद पकडी राखे अने बीमा

सोबत न करबी

(0) 'नितिया' एटखें के साधुका
रण मिना नित्य एक स्थान रहे तेनी सोबत क परवी

(९) 'भन्यमार्गा' कैनवी अन्य म

रीते पण सम्मा करेश करावे देवा नरनी

(१०) 'बमणगा' एटके चर्भ पायीन वर्मी गयेला अर्थात् पर्मश्चष्ट शयका एपा अने 'चर्भसकर' पुरुपोनी सोवत न करबी धियळ रत्नन साचवनार 'नम बाड'

माफक, 'समकिव' रस्तनु रसण करनार

तन माननारा साथे विश्वेष सहवाम न करवी

था 'दश किल्ला' समजवा. ए किल्ला ज्यां
सूधी अणिशुद्ध इशे त्यां सूधी कोइनी मगदूर नथी के समिकती प्राणीना समिकत
रतने लेश मात्र इजा करी शके

मोक्ष नगरीए छइ जती सम्यक्त्वनी ^{म्हके} जतां नय-निक्षेपनी भूलभूलामणीमां जो कोइ माणस घुंचाइ जाय तो तेणे मात्र -'दया' नामना भूव तारा तरफ दृष्टिटेकववी अने ए दीशा तरफ ज चाल्यां करचुं एथी वेहेलो मोहो पण ते इच्छित स्थळे (to the goal) पहोंचशे. पण जो तेटली दृष्टि पण न राखे तो धूताराओं तेने आडा रस्ते दोरी तेनुं सर्वस्व लूटी लइ गतपाण करी तेने जं-गरुना गीध अने कागडानो भक्ष वनावदी.

॥ संपूर्ण ॥

प्राकृतिक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

(१) शुकराती संप्रेसी के शास्त्री टार पर्मो इरकोर पुस्तक छपावसु होच तेची समारी मारफत छपावरा तो सस्त् शुक्र सभे मनदर काम करी भागकार्मा सावत्र, (जैन पुस्तको छापका माटे गरम पाणी ते

यार आयोगे वपराय छे)
() कोइ एक पुस्तक सगर मास्त्रों कीत
कोममां बहाओं कडाव करणस्या इच्छा होत तथे "औत हितेच्छ्र" पत्रमां आहेर खबर छ पावयां माय सणाज सोजा (पत्रज्ञारा पूछा)

(१) केन तेमज इरकोइ धर्ममां पुस्तको केव्ययी काताने क्यानां पुस्तको नार्चामां पुस्तको विगेद नामा प्रथकारोनां पुस्तके कारारी बॉफिस उपर बॉरकर माकवायी वाकीई वी यो धी रवाना करवामां वाय्यो

गनाव वा पा पा रवामा करवामा भाष्यो पत्रव्यमहारः—मेनजर "गैनहितेव्छु' सारंगपुर वळीभानी पाम—ममदाबाद

खरीदों ते पहेलां खात्री करजो!

कारण क. छीपे छीपे मोती नथी पाकतां. सरोबरे सरोबरे कमळ नथी नीपजतां घेर घेर सीता नथी होती सर्व पत्रोमां कांइ 'जैनहितेच्छुं" मासिकनी ल्हेजत नथी होती तेनां कारण खुझां छे — (१) लखाण माटे कुद्रती शोख जोइए (२) वहोळुं चांचन अने अनुभूव जोइए (३) लखाण पाछळ जीटगी अपण करवी जोइए तो ज उत्तम लखाण यह शके छे "जैन हितेच्छु" मासिकमां धर्म, व्यवहार, तत्वज्ञान अने सुधारा सर्वधी जे जे लेखो छपाय छे तेने विद्वाना पक्के अवाजे वखाणे छे, तथा गुजरात∽कच्छ∽काठियाधाड-मार-

वाड-पंजाव-दक्षिण-रगुन अने आफ्रिका सुधीना जैनो ज निह पण केटलाक पारसी अने अन्य वर्गना गृहस्थो पण तेना ब्राहक थया छे; तेनुं कारण शोधनु होय तो तमे पोते ज ते मासिक वांची खाशी करों

सवा रुपियो शुं शु काम करे छे ? (१) 'जैन दितेब्स्" मासिक पत्रमुं सवा अमे क १) तथा पीछ कर्च के श सकी क १। मा मनीबाईर साबे मोटाई माम ठाम सनी मोकसनारने १००२ पृष्ट्यं की तर्व महि पण ३६ पूप<u>ती स</u>हरू काराङ समे मनहर छापबाळ्-रसीखे-सक्यावंध उपयो गी निषयोधी मरपूर मासिक मह छू (र) महिने ३६ यम कोड बक्रते चथारे पानां गचनां बरसं खराश्रम ४५०-६०० पानां

मळवा सपरांत बसी बत्तम मेरो एण मल

के बाम साछ मार्ट ४ समुस्य भेटा उराधों छ जभो पणा मांडा प्राहक वद्या तेमले (मता यह रहेचे तो) गेट मधी एक्डो मार्ट (१) मासिक सने भेटी भारफत प्राह कमे पोताने वर्म सने स्वयहार्य्य पहुँ प्रान मध छ सने सन तथा प्रातिमा सडा वर यान छ कहें चायों भोटो छान पीतों करा (50) मशीगांडर साथे मान जकरी मांडा हो ''जैनहितेच्छु"

अठवा डिक पत्र.

थोडा वखतमां शरू कः रवाज छे तेमां जैन शा-

स्त, जैन सुधारा, जैन कथाको, उपरांत देश तथा चेपारने लगती वावतो पण छपाशे मूल्य बरसे रू ३) पोष्टेज माफ श्राहकोनां नाम नोंधवा मांड्यां छे ताकींदे नाम नोंधावों

अगांउथो ब्राहक थनारने 'जैनतत्व-सत्रह' नामनु रु १) नी कीमतनु दळटार पुस्तक भेट मळशे

ठेकाणु —'जैनहितेच्छु' ऑफिस सारगपुर-अमदावादः

खश खबर ! जैम हितेच्छ मासिक पत्रमें सब तो कि तनक सेस गुबरातोमें और कितनेक शा जीमें छप जात है। इस क्षिय भाप को क भी इस्का प्राहक दश सकता हो उमेर है कि पंशाब मास्या भारबाड सावि वेशके प्रत्येक सुद्ध जैन भार रस मासिक के प्राहक वनके इन्देशन देंगे ५०० शाहक हो आ नेसे इम सारा मासिक शास्त्रीमें अपनेकी मो कोशीय करेंगे. की मेनेजर-"जैन हित्तच्यू" - महमदावाद पंताब सीर दक्षिणमें

'जैन हितेष्णु' पत्रके
भाइक बनानेके स्थिय एजस्य बहुता है
कमीशम अच्छा मीसेगा
क्ष्म भेनेतरका प्रचारी कीस्रो

मारवाडी और पद्माची कैन माइऑके सिय

्रीनहितेच्छु' ऑफिस तरफथी रचायलां पुस्तको

तैयार छे!

(१) सती दमयंती अने तेनी वातमांथी हेवानी शिखामणो:—(आवृत्ति वीजी) आवु ^{उपदे}शी अने रसीक पुस्तक बीज़ं भाग्ये ज ^{छपा}युं हशे खुद सरकारी केळवणी खाताः ना उपरी अधिकारी साहेवे तेमज गायक-वाह सरकारे तेने मंजुर कर्यु छे शब्द ज्ञान, स्मरण शक्ति तेमज विचार शक्ति खीले ^एवी तेमां गोठवण छे दमयंतीनी सुदर छवी जर्मन कारीगर पासे बनावेली तेमां मुक्ती छे. किमत ०-६-०; पाकु पुटुं ०-८-०.

(२) मधुमक्षिका —एमां ससार व्यवहार तथा नीतिना विषयो उपर रमुजी पत्रो (Letters) प्रख्यात अंग्रेजी लेखक एडिस-ननी पद्धतियी लखाया छे खुद सरकारी गेझेटे तेने माटे उत्तम मत आप्यो छे ०-४-०

(३) दितंशिकाः – सर्वे धमना प्रगासा स हित धम सने स्पन्हारना सच्छो वाध तेर्मा स्म थे छे गायकस्थाकी कळकणी स्नाताप मंद्रार करवाथी भीजी माशृत्ति छुपाय छ (पहें की काष्ट्रचिमी ५००० प्रती एक जामा मर्मा अपा गह इती) किसत ०-४-०, परी पकाराधे १ प्रसनो क १॥ (b) बार मत ~ मत पटसे हो ! वर्त मादरपानी शी अवर छे! यत केम आद रया वित केम नीमावदां तना कुंबोंमी साथे सयासा पृष्ट्यं सुदर पुन्तक किमत ०–२० पराकारार्थे १० प्रतनार ८). (५) मात समरण - सवारमा चाट करवार माट (मकामर स्तोधना ५ स्टाक अणुपूर्वी साधवंबणा,पारमामना उपवेदा विगरे सहित। ० ०-६, परोपकाराधे १०० प्रतना च ना (६) निरावळीका सूत्र सार ०३० (७) मेतगहब्दांग संज्ञसार, ० २-०

(८) सदुपदशमाद्धाः—(मायृत्ति पीक्री) सख शियल करकसर सस्सग धर्मपरीमां ०-६-० सामटी १० प्रतना रु २॥ 🎏 आमांनां पहेलां नव पुस्तको गु-जरातीमां छे, पण कोइ गृहस्थ सामटी स-ख्यावंघ प्रतोनो ओर्डर आपदो तो शास्त्रीमां छापी आपाशु कि कोइ पुस्तक उधार मोकलता कि नाला सिवाय नथी, ०॥ आनानी टीकीट वाड्या सिवाय फोड पण वावतनो जवाव नहि मळे पत्तो - मेनेजर, "जैनहितेच्छु"-अमदावाद. ** आवक रागचंदजी कृत १८५७० चरसनुं जैन पचांग किमत रु १); उपरांत 'जैन सझायमाळा', 'जैनतत्वशोधक व्रथ' विगेरे पुस्तको अमारी पासेथी मळको --

उपर १२ रसीली वार्ताओं छे कुटुव वच्चे वाचवा लायक आवु पुस्तक वीज भाग्ये ज मेळरो ०८-० सर्व लोकोने घणु पसंद पड्यु छे (९) "श्रावकनी आलोगणा"—घणीज शु-ज्व अने सस्ती प्रत किमत मात्र ०-२-० (१०) 'सम्यक्त्व'अथवा'धर्मनो दरवाजो' ०-६-० सामरी १० प्रतना रु २॥ जिस्तातीमां छे, पण कोइ गृहस्थ सामरी स-

ल ज्ञानु माधु आदि १२ नीतिना विषयो

छपाय छे (१) "सम्यक्त्य सूर्योदय (हिंदी भी पामी --पंजाबवाकी विदुषी मार्थाजा बी पार्वतीजी सर्ताकीपहमणी मर्दु रचेलु पुस्त ह मारी मारफत छपायछ होमा जगहना कर देश्यर के प्रथमें बीका केरसाक मतन कर अक्छो रात स्यायपूर्वक कर्य छे किमत रू १०० (२) "धमेतत्व संबद्ध" (दिवी भाषामां) विद्याविकासी मुनीवर भीममासंस ऋविज कृत सा पुस्तकर्मा १० विधि धर्म एपर सं गर्थी वियेचन कर्य है, इन्द्रियदमननी चार्वी तमा अच्छी बतायी छ किमते च १)-(१) "जपविजय चरित्र" (शास्त्री स्नीरि मो) — विद्यान पूरुप भी मसम्बद्धजी कृत म रास ग्रजो ज रसीक के किसत -४० (८) औन क्रोप" - भाज सूची क्रोहर नी बनायेको यदा कर्छा - क्षेत्र दिवश्य प्रवन मासक किमत घ रो गीचेना शिरनामें असर नाम नीपाचा ∽ क्षेत्र हित्रव्यु" ऑफिस-मार्रगपुर-धमकावा

